बका भागी हुआ और मौकापाकर विहारका सुलतान बन बैठा । स. ई. १५४० में शेरशाहने हुमायूंको कन्नौजकी लड़ाईमें परास्त करके सिन्धकी तरफ भगादिया और शेरशाहनाम धारण करके बादशाह बन बैठा । आगरेमें राजधानी नियत की । मालवा,. मांड़वाड़ इत्यादिक कईदेश फतेह करके शेरशाहने स. ई. १५४५ में कालिञ्जरके किलेका घेरा किया । किलेकी दीवार जब टूटगई तो शेरसूरने धावा करनेका हुक्म दिया परंतु इसी अवसरमें तोपका एक गोला फटकर उसको लगा जिससे वह घायल होकर मरणतुल्य होगया। उस हालतमें भी शेरशाह निरंतर अपनी सेनाको उत्तेजना देतारहा । संध्या समय सेनापतियोंने आकर खबर सुनाई कि, कालिञ्जरगढ़ फतेह होगया । यह सुनतेही शेरशाहने कहा कि "परमेश्वर तू धन्यहै ! " और प्राण छोड़ दिये. मृतक शरीरको सहश्राममें लेजाकर तालाबके बीच एक रोजेमें जिसको शेर शाहने पहिलेसे बनवा रक्खाथा और जो अबतक विद्यमानहै दफनाया गया । कहतेहैं कि, शेरशाहके समयमें चोरी तथा डकैती बिलकुल बन्द होगई थी और पथिक लोग सड़कोंके किनारे अपना अस्वाव रक्खे हुये निर्भय सोते रहतेथे । बंगालसे पंजाबतक १५०० कोस लम्बी पक्की सड़क उसने बनवाईथी जिसपर दोनों तरफ सायेदार मेवेके दरख्त लगवायेथे और २।२ कोसपर घोडों तथा पुलिसकी चौकियें बिठलाईथीं तथा कुये खुदवादियेथे । डाँक पंजाबसे बंगालमें ३दिनेमें पहुंच जातीथी । राज्यभरमें १०।१० कोस पर हिन्दू मुसल्मान महुताजोंको कच्चापक्का खाना देनेके लिये धरमपुर तथा खैरपुर खुलवा दिये थे और सब चौकियों तथा महुताज खानोंमें १।१ नक्कारा रखवादियाथा । शेरशाहके खानेके वक्त सब नक्कारे बजादिये जातेथे जिससे राज्य भरमें मुहुताजोंको एकही वक्तमें खाना बटना शुरू होजाताथा.

दिल्लीके सूरवंशीबादशाहोंकी सूची ।

शेरशाहसूर	... ...	स. ई. १५४५ में मरा
सलीमशाहसूर (शेरशाहका छोटा बेटा)	"	१५५४ "
फीरोजशाहसूर (सलीमसूरका बेटा)	"	१५५४ में मुहम्मदशाहआदिलने इसको मारडाला
मुहम्मदशाहआदिल (शेरशाहका भतीजा)		१५५५ में इबराहिम सूरने इसे गद्दीसे उतार दिया.

इबराहीमखाँसूर (मुहम्मदशाहआदिलका बहनोई) "१५५५ में सि-
कन्दर शाहसूरने इसे तख्तसे उतार दिया.

सिकन्दरशाहसूर (शेरसूरका भतीजा) " १५५५ में हुआ

यूने इसे,बरहिन्दके निकट परास्त करके सूरवंशका अन्तकरदिया.

शेरसिंह (महाराजा पंजाब)- यह पँजाबकेशरी महाराजा रणजीत सिंहजीके पुत्र रानी महताब कुँवरके पेटसे स० ई० १८०७ में जन्मे थे। खड्ग सिंह तथा नौनिहालसिंहके बाद इन्होंने पंजाबकी गद्दीपर बैठना चाहा परंतु जम्बूनरेश महाराज गुलाबसिंह तथा अन्यसिक्ख सर्दार चाहतेथे कि,राजकाज खड्गसिंहकी रानी चंद्रकुवरके हाथमें रहे निदान दोनों तरफसे लड़ाई ठनी दिनकी लड़ाईके बाद रानी चंद्रकुवरने लाहौरका किला खाली करदिया। और शेरसिंह स. ई. १८४१ में गद्दीपर बैठे। लेकिन द्वेषकी आग बुझी नहीं थी, सर्दारलोग प्रगटमें चुपथे और छिपे २ शेरसिंहके नष्ट करनेकी फिक्र कर रहे थे। आखिर इन्होंने अपनी तरकीबे लड़ाकर महाराज शेरसिंह और वजीर ध्यानसिंहके दिलोंमें फर्क डालदिया। यह सुअवसर पाकर अतरसिंह तथा अजीतसिंह सिंधवालोंने राजा और वजीरके बीच खूब अदावत करादी, उधर राजासे मिलकर वजीरके मारनेका हुक्म लिखाळिया और वही हुक्म वजीरको दिखलाकर राजाके मारनेकी युगत ठहराई। थोडेही दिनोंबाद सिंधवाले दोनों सर्दार ५०० सवार लेकर लाहौर आये और महाराज शेरसिंहसे मिले। महाराज शेरसिंहने जाना कि, वजीरके मारनेके लिये आये हैं, इतनेहीमें सर्दार अजीतसिंहने एक भरीहुई दुनाली बन्दूक महाराजके सम्हने करके कहा कि, देखिये महाराज! क्या अच्छी बन्दूक है। महाराजने ज्योंही लेनेको हाथ बढ़ाया त्योंही अजीतसिंहने घोडा दबाया। दोनों गोलियें पार होगई और महाराजके मुंहसे केवल यह निकलने पाया कि, "यह दग़ा की"।

शेक्सपियर (William Shakespear) - यह प्रसिद्ध अंग्रेजी कवि मलिका एलिजाबेदके समयमें इङ्गलैण्डके स्ट्रेटफोर्ड आन ऐवन नामक ग्राममें हुये थे। बाप इनके ऊन बेचने तथा दस्ताने बुननेका पेशा करते थे। १८ वर्षकी उम्रमें इनका विवाह हुआ जिससे ३ बच्चे हुये। पश्चात् लन्डनमें आकर यह एक नाटिक कम्पनीके मेनेजर होगये। कुछ समय पीछे उक्त कम्पनीके मालिक बन गये। स० ई० १६०४ में इनके पिताका देहान्त होगया और स० ई० १६०५ में यह अपने गाँवको लौट आये। फिर अन्त समयतक यह

वहीं रहे और एक बड़ी जायदाद मोल ले सके। कविता करनेकी शक्ति इनमें देवीथी। सैकड़ों पुस्तकें इन्होंने निर्माण कीं जिनमेंसे ३५ नाटक हैं। शृङ्गार, वीर, करुणा इत्यादि ९ रस जैसे इन्होंने दर्शाये वैसे कोई दूसरा अंग्रेजी कवीश्वर नहीं दर्शासका। सर्व प्रकारके विचारोंका इनकी कवितामें समावेश हुआहै और चित्तके सूक्ष्मभावोंको तो ऐसी उत्तमतासे इन्होंने चित्रित कियेहै कि मानों मूर्तिसमान बनाकर दिखला दियाहै। नाटकपात्र इनके सब कर्तव्यपरायण हैं और पदलालित्य इनका ऐसाही प्रसिद्ध है जैसा संस्कृत कविदण्डीका। इङ्गलैन्डमें इनके नामके अनेक मेले होते हैं और इनके हाथकी छड़ी तथा वस्त्र अबतक लन्डनके अजायब घरमें रक्खे हैं और आश्चर्यकी आंखसे देखे जाते हैं। सं० ई० १६१६ में ५३ वर्षके होकर मरे और स्वेच्छानुसार निज जन्मभूमिके ग्राममें दफनाये गये।

शैखचिल्ली– चिल्ली अप भ्रंशचुहलीकाहै। चुहली पार्सीभाषामें ठठोलको कहते हैं। वास्तवमें यह बड़े ठठोल तथा चतुर पुरुष थे। अनेक कहानियें इनकी इस देशमें प्रसिद्ध हैं। थानेश्वर (पंजाब) में इनकी कबर देखनेलायक बनी है। प्रतीत होताहै कि, यह मुगल सम्राट शाहजहां (सं० ई० १६१८–५८) के वक्तमें हुये।

शैखजलाल– इनको मखदूमें जहानियां तथा जहाँगश्तभी कहते हैं। पृथ्वीके अनेक भागोंमें भ्रमण करनेके सिवाय इन्होंने ७ दफे मक्काकी यात्रा की थी। इनके मुरीद (चेले) जो जलालिये अथवा मलङ्ग कहलाते हैं अबभी इस देशमें बहुत हैं। इनके बाप सय्यद अहिमदकबीर मुलतानके रहनेवाले थे। और इनके दादा सय्यद जलाल बुखारी थे। शैखबहाउद्दीन जकरियाके पौत्र शैखरुकनुद्दीन अबुलफतह इनके पीर (गुरू) थे। सुलतान फीरोजशाह तुगलक इनका मुरीद था, इन्होंने मक्कासे लाकर उसको एक पथ्थर दिया था। जिसपर मुहम्मद साहबके चरणका चिह्न था। मुलतानके समीप अच्छामें सं० ई० १३८४ की साल ७८ वर्षकी उम्रमें इनका देहान्त हुआ। वर्षमें एकदफे इनकी कबरपर मेला होता है जिसमें लोग दूर २ से आते हैं। लोगोंको विश्वासहै कि, इनकी कबरकी मट्टी खानेसे पागलोंको आराम होजाता है। इनके एक मुरीदने इनके जीवनचरितकी पुस्तक लिखी थी और उसका नाम किताबेकुतबी रक्खा था।

शौनकऋषि– शुनकऋषिके पवित्र प्राचीन वंशमें वेद पढ़नेपढ़ाने तथा यज्ञ करानेका काम सदैव रहा। इनका घर नैमिषारण्य जिला सीतापुरमें था। शौनक नामके निम्नस्थ पांच प्रसिद्ध ग्रंथकार इस वंशमें हुये थे:–

शौनकगृत्समदमहर्षि--इन्होंने ऋग्वेदका द्वितीय मण्डल प्रकट किया।

शौनकाचार्य २– यह शौनकगृत्समदमहर्षिके पौत्र थे। ब्राह्मण क्षत्री आदि ४ वर्ण इन्होंने कायम किये थे। शौनकशाखा प्रवचन तथा ऋग्वेदके कल्पसूत्र इनके रचित ग्रंथ हैं।

शौनकाचार्य ३– इन्होंने वेदाङ्ग शिक्षा रची थी और परीक्षितके पुत्र जन्मेजयका यज्ञ करायाथा। महाभारतमें सूतजीके सम्वादके प्रवर्तक यही हैं। यह नैमिषारण्यमें रहकर ८८ हजार ऋषियोंके अग्रगण्य गिने जाते थे। प्रसिद्ध पं० अश्वलायन इनका शिष्य था।

शौनक ४– यह पाणिनि ऋषिके समकालिक थे क्योंकि "पाणिनिशिक्षा" के संगृहीता पं० व्याडिके रचे "विकृतवल्लि" नामक ग्रंथमें इनका नाम है और शौनकीयक ऋक्प्राति शाख्यके अनेक स्थलोंमें पाणिनिऋषिके सपाठी पं० व्याडिकानाम है। निम्नस्थग्रंथ ऋग्वेदपर इन्होंने रचे थे।

शौनकीय ऋक्प्रातिशाख्य, अनुवाक्यानुक्रमणा, सूक्तानुक्रमणी, आर्ष्यानुक्रमणी, छन्दानुक्रमणी, ऋक्पादयोर्विधान और स्मार्तसूत्र।

शौनक ५– इन्होंने अथर्व वेद संहिताका सम्पादन किया था जो शौनकीय संहिता कहलाती है। चित्राध्यायका तथा ४ भागोंमें अथर्ववेदीय प्रातिशाख्यभी इन्हींका बनाया हुआ है।

शंकराचार्य स्वामी (स्मार्तधर्मप्रवर्तक)– पुरातत्त्ववेत्ता पंडित के. बी. पाठक स० ई० ७९९में इनका होना निश्चयकरते हैं। यह मलावार प्रदेशान्तर्गत कलाड़ी ग्राममें विश्वजीत उपनाम शिवगुरु एक वृद्ध ब्राह्मणके घर विशिष्टा नामनी माताके गर्भसे जन्मे थे। परम्परासे चले आनेवाले वैमनस्यके कारण कुटुम्बियोंने इनके जन्ममें शंका उत्पन्न करके इनके माता पिताको त्याग दिया था। ५ वर्षकी उम्रमें इनके पिताका देहांत होगया। ८ वर्षकी उम्रमें इन्होंने नर्मदातटवाशी गोविन्द भगवत्पाद एक सिद्ध पुरुषसे सन्यासधर्ममें

दीक्षा ली और उनसे सम्पूर्ण विद्या पढ १६ वर्षकी उम्रमें काशीको चले आये। काशीमें जब एकदिन यह गंगास्नान किये आरहे थे तो रास्तेमें चार कुत्तोंको रस्सीमें बांधेहुये साम्हनेसे एक चांडालकी आता देख इन्होंने कहा कि, "गच्छ दूरे"। चांडाल मार्ग न छोड़ कहने लगा कि, "वेद तथा उपनिषद० परब्रह्मको अद्वतीय अनवद्य असङ्ग तथा सत्य बतलाते हैं परन्तु तुममें यह भेद बुद्धि देख मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। स्पर्शके भयसे आपने मुझसे मार्ग छोड़नेको कहा किन्तु मेरी और आपकी आत्मामें कुछ फर्क नहीं है। महात्माजन मोहकूपमें फसकर इस क्षणभङ्गुर नश्वर देहमें वृथा आत्माभिमान करते रहते हैं"। यह कहकर चांडाल गुप्त होगया और उसकी जगह चारों वेदसमेत एक विद्वान् दृष्टि पड़ा जो साक्षात शिवसा मालूम होता था। पलमात्रमें वह भी अन्तर्ध्यान होगया और इनको उपदेश कर गया कि "एक मात्र परब्रह्मही सत्य है और सब मिथ्या है"। इसी उपदेशके आधारपर इन्होंने स्मार्तधर्मका प्रचार करना चाहा निदान प्रयागमें जाय प्रसिद्ध पं० कुमारिलभट्टसे भेंट की कुमारिलजीने इनका अभिप्राय समझ इनको उपदेश किया और कहा कि "यदि माहिष्मतीवासी मीमांसक पंडित मण्डनमिश्रको तुम शास्त्रार्थमें परास्त करसको तो भारतके अन्य सब पंडित परास्त होनेके तुल्य हो जावेंगे" यह सुन यह माहिष्मतीको सिधारे और पं० मण्डनमिश्रको शास्त्रार्थमें परास्त करके उसको शिष्य करलिया (देखो मण्डनमिश्र) पश्चात् इन्होंने अनेक और विद्वान् शिष्य किये जिन्मेंसे सुरेश्वराचार्य (मण्डनमिश्र), पद्मपादाचार्य, हस्तामलकाचार्य, त्रोटकाचार्य इत्यादि १० प्रधान शिष्य थे। इन १० शिष्योंकी गणना वेदान्त दर्शनके आचार्योंमें है और सन्यासियोंकी १० शाखायें इनके नामसे प्रसिद्ध हैं। फिर इन्होंने भारतके प्रत्येक भागमें दिग्विजय करके स्मार्तधर्मका प्रचार किया और पूर्वादि चारों दिशाओंमें निम्नस्थ देव दर्शन मठ बनवाये और उनमें अपने विद्वान् शिष्योंको नियुक्त किया:—

उड़ीसामें गोवर्धन मठ बनवाकर पद्मपादाचार्यको सौंपा।
द्वारिकामें शारदा मठ बनवाकर विश्वरूपाचार्यको सौंपा।
गढ़वालमें जोशी मठ बनवाकर त्रोटकाचार्यको सौंपा।
मैसोरमें शृंगगिरि मठ बनवाकर पृथ्वीधराचार्यको सौंपा।

उपरोक्त चारों गद्दियोंकी परम्परामें होनेवाले महन्त शंकराचार्य नाम धारण करते हैं शंकरस्वामीने ब्रह्मसुत्रोंपर अद्वैत भाष्य और कठ केनादि १० उपनिषदोंपर भाष्य तथा भगवद्गीतापर भाष्य रचा था। "विवेकचूडामणि" नामक ग्रंथभी इन्हींका विरचित है। वास्तवमें एकदिन शंकरस्वामीकी ग्रंथरचना, अनुपम प्रतिभा, अमानुषिक शक्ति, अलौकिक खण्डनीय युक्ति, सारगर्भ उपदेश

और अद्भुत कार्य कलापने हिमालयसे रासकुमारीतक बड़ाभारी धर्म विप्लव उपस्थित कियाथा और बौद्धधर्मसे डूबेहुये भारतकी रक्षा की थी। ३२ वर्षकी उम्रमें शंकरस्वामी केदारनाथके शिखरपर स्वस्वरूपको प्राप्त हुये। स्वामीके दक्षिणदेशस्थ शिष्योंने काञ्चीपुरी कामाक्षीदेवीके मंदिरमें उनकी मूर्ति पधराई जो अबतक विद्यमान है। स्मार्तधर्मके अद्वैतवादी शिव, देवी, गणेश आदि सबदेवताओंको एक परब्रह्मका अंश मानकर अभेदबुद्धिसे पूजते हैं और जीवको ईश्वरसे अलग नहीं मानते।

शृंगीऋषि-शहर एटासे ८ कोस दूर ईशन नदीके तट सेनाग्राममें इनकी तपस्याका स्थान है। इस स्थानपर राजा परीक्षित्‌की सेना आकर पड़ी थी इसी कारण इसका नाम सेना पड़ा। यहींपर राजा परीक्षित्‌ने शृङ्गीऋषिके गलेमें सांप डाला था। शृङ्गीऋषिकी पक्की गुफा अबतक एकत्र झाड़ीके भीतर बनी है और उसके खर्चके लिये आसपासके खेत नानकार हैं। इनके पुत्रका नाम भिंडीऋषि था।

श्रीसेन-इन्होंने ज्योतिषके रोमकसिद्धांतका वर्तमानदशामें सङ्कलनकिया।

श्रीहर्षपंडित-(महाकाव्यनैषधके कर्ता)-डाक्टर बुलहर साहबने कन्नौज नरेश जयन्ती चंदके एक दानपत्रसे सिद्ध किया है कि पं० श्रीहर्ष वि. सं. १२२५ में विद्यमानथे। प्रसिद्ध है कि इन्होंने पश्चम अवस्थामें वाग्देवीके प्रसादसे सम्पूर्ण विद्या प्राप्त की थीं। नैषधकाव्यके पढ़नेसे विदित होता है कि, यह दार्शनिक पंडित महाकवि विद्वद्वर अप्रतिम प्रतिभाशाली थे। जैनकवि राजशेखर स्वरचित प्रबन्धकोशमें लिखते हैं कि "श्रीहीरसुत श्रीहर्षने बनारसमें जन्म लेकर राजा जयन्तीचंदके आदेशसे नैषधकाव्य रचा था। राजा जयन्तीचंदका राज्य कन्नौजसे बनारसतक सर्वत्र देशमें था। नैषधकाव्यमें लिखा है कि श्रीहर्षकी माताका नाम मामल्लदेवी था। कन्नौजके राजा जयन्तीचंदकी सभामें पं. श्रीहर्षको आसन तथा दोबीड़ा पान मिला करता था। पं० उदयनाचार्यने पं. श्रीहीरको शास्त्रार्थमें हराया था। पं. श्रीहर्षने स्वरचित "खण्डन खण्डखाद्य" ग्रंथमें उदयनकृत "न्यायकुसुमाञ्जलि" का खण्डनकरके पिताके वैरका बदला लिया। निम्नस्थग्रंथ औरभी इन्हींके बनाये हुये हैं:- अर्णववर्णनकाव्य,नवसाहसाङ्कचरित्र,गौडोर्वीशकुलप्रशस्ति,शिवभक्तिसिद्धिः- ईश्वराभिसन्धि, स्वपाशप्रस्ताव, स्थैर्यविचार-और विजयप्रशस्ति। गीतगोविन्दके कर्ता जयदेव मिश्रने "प्रसन्नराघव" नाटकमें पं. श्रीहर्षको सरस्वतीका हर्ष रूप लिखा है।

श्रीहर्षदेव (कश्मीर नरेश)-राजतरङ्गिणीके लेखानुसार यह अनेक भाषाओंके पंडित होकर सत्कवि तथा सम्पूर्ण विद्याओंकी खानिथे। देशदेशा-

रोंमें इनकी प्रतिष्ठिथी। ख० ई० १०९१ तथा ९७ के बीच काश्मीरकी गद्दी प्राप्त हुये।

श्रीहर्षवर्द्धन (रत्नावली आदि नाटकोंके कर्त्ता)–"हर्ष चरित्र" में पं० बाणभट्ट लिखते हैं कि श्रीहर्षवर्द्धनके दादे पुष्पभूषति और बाप प्रभाकर वर्द्धन थानेश्वर (पंजाब) के राजाथे। श्रीहर्षकी बहिन राजश्री कन्नौज नरेश ग्रहवर्म्मांको ब्याही थी। राजा प्रभाकर वर्द्धनके मरनेपर मालवराजने अवसर पाकर गृहवर्म्मांको वध किया और राजश्रीको कैद करलिया। यह सुनकर श्रीहर्षके बड़े भाई राज्यवर्द्धनने मालवराजपर चढ़ाई की और परास्त करके उसको वध किया। मालवराजके एक मित्रने डेरेमें घुसकर राज्यवर्द्धनको भी मारडाला। तब श्रीहर्षने थानेश्वर, कन्नौज तथा मालवाका एक

छत्रराज किया। कन्नौजको राजधानी बनाया। बहिन राजश्रीकी खोज क… लेकिन मालूम हुआ कि वह बौद्धमत ग्रहण करके विरक्त होगई। सिंहास… रूढ़ होनेसे कुछही दिन पीछे श्रीहर्षने भी बौद्धमत ग्रहण करके शिलादि… श्रीहर्षवर्द्धन अपना नाम रक्खा। पंडित बाँण लिखतेहैं कि "महाराज श्री… सर्वशास्त्र पारङ्गतथे और महावैय्याकरण तथा सत्कवि होनेके सिवाय ग्र… रचनामें भी सिद्धहस्तथे। पाणिनि, व्याड़ि, शंकर, चन्द्र और वररुचि आ… विद्वानोंके विचारोंकी पार्य्यालोचना करके उन्होंने एक बड़ा लिङ्गानुशास… बनायाथा। वे दिग्विजयी, धार्मिक तथा जितेंद्रिय राजाथे और राज्यविस… रके द्वारा उन्होंने अत्यन्त यशो लाभ

किया था "। चीनीपथिक ह्वोईथसङ्ग अपनी यात्राके ग्रंथमें लिखता है कि, "महाराजा सिलादित्य प्रति ५ वींवर्ष त्रिवेणी तट प्रयागमें एक बडी भारी सभा किया करता था जिसमें दूर २ के राजे महाराजे, पंडित विद्वान, साधु सन्त बुलाये जाते थे। कितनेही दिनोंतक सबकी दावत होती थी। अन्तमें महाराज सिलादित्य अपना सब धनदौलत लुटा देता था। और अपने वस्त्र आभूषणभी किसी दीन पुरुषको देकर उसके चिथडे आप धारण करलेता था"। स० ई० ६३४ में महाराज सिलादित्यने बौद्धोंकी एक बड़ी सभा की थी जिसमें हजारों श्रामन तथा ब्राह्मण विद्वानोंके सिवाय २१ राजेभी शरीक थे। यह सभा तीन दिनतक रही थी। निम्नस्थ ग्रंथ इनके बनाये हुये हैं:-

रत्नावली, नागानन्द और प्रियदर्शिका। स० ई० ६५० में ४० वर्ष राज्य करके महाराजा सिलादित्य हर्षवर्द्धन परलोकगामी हुये।

श्रीचंद (सिक्खोंकी उदासी सम्प्रदायके आचार्य)-यह गुरु नान्हकजीके द्वितीय पुत्र थे। इन्होंने सिक्खोंकी उदासी सम्प्रदायका प्रचार किया। इनके मतको माननेवाले हजारों उदासी फकीर अबभी हैं।

श्रीधराचार्य (ज्योतिषी)- यह बङ्गदेशसे दक्षिण देशवर्ती भूरसृष्टि नामक ग्राममें जावसेथे। इनके पिताका नाम बलदेवशर्म्मा था और शाके९१३ में इनका जन्म हुआ था। "ज्योतिषत्रिंशती" तथा वैशेषिक सूत्रोंपर "न्याय कन्दली" नाम तिलक इन्हींके रचे ग्रंथ हैं।

श्रीपति (भाषाकवि)- यह प्रयागपुर जिला बहरायचके रहनेवाले थे। काव्यसरोज, श्रीपतिसरोज तथा काव्यकल्पद्रुम इनके बनाये ग्रंथ विख्यात हैं। यह वि० सं० १७०० में विद्यमान थे।

श्रीलालपंडित- यह अवदीच ब्राह्मण जयपुर राज्यान्तर्गत भाण्डेरके रहनेवाले थे। संस्कृतके पूर्णज्ञाता होकर गणितशास्त्रमें निपुण थे। प्रथम आगराकालिजमें संस्कृत प्रोफेसरके पदपर नियुक्त हुये थे। स० ई० १८४८ में जब पश्चिमोत्तर देशके मथुरादि ८ जिलोंमें सरकारी स्कूल नियत हुये तो पाठशालाओंके विजीटर जनरलकी आज्ञानुसार निम्नस्थग्रंथ इन्होंने रचे थे।

लालापद्धति, समयप्रबोध, अक्षरदीपिका, गणितप्रकाश (पांचभाग), बीजगणित, भाषाचन्द्रिका, ईश्वरता निदर्शन और ज्ञानचालीसी। स० ई० १८५२ में जब आगरेमें नार्मिलस्कूल सरकारने खोला तो पं० श्रीलालको उसका हेडमास्टर नियत किया। ५ वर्षबाद पंडितजी जिला चंदेरीके डेपोटी इन्सपेक्टर हुये। स० ई० १८५८ में ग्वालियर कालिजके हेडमास्टरका पद पंडितजीको मिला। स० ई० १८६७ में ज्वरादि रोगसे पीडित होकर आगरेको आये और यमुना तटे देह त्यागी।

श्रीधर (भाषाकवि)– ओइल जिला खीरीके राजा सुब्बासिंह चौहान ने श्रीधर नामसे पदपूर्ति की है । भाषासाहित्यमें " विद्वन्मोद तरङ्गिणी " इनकी रचीहुई है । यह कवि सुवंशशुक्लके शिष्य होकर वि० सं०१८७४में विद्यमान थे ।

श्रीधरस्वामी (भागवत तथा विष्णुपुराणके टीकाकार)- यह दक्षिण देशस्थ किसी ब्राह्मण कुलमें जन्मे थे । प्रथम कुछ दिनोंतक व्यापार करते रहे पश्चात काशीको चले आये । इनका रचा भागवतभाष्य काशी नरेश की सभामें ५० भागवत भाष्योंमें जो उस वक्ततक बनचुके थे सर्वोत्तम ठहराया गया था । श्रीधर भाष्यमें कर्म, उपासना तथा ज्ञान सबही अपना २ कार्य करनेमें प्रधान ठहराये गये हैं, परन्तु अन्यटीकाकारोंने अपने २ मन्तव्यके अनुसार कर्म, भक्ति, ज्ञान, योगादि १ । १ विषयको प्रधान ठहरानेका उद्योग किया है । श्रीधरभाष्यसे प्रसन्न होकर काशीनरेशने १००० अशर्फियें सभाके बीच श्रीधर स्वामीको दीथी जो इन्होंने उसीसमय पंडितों तथा साधुओंको बांट दी । वि० सं० के १६ वें शतकमें इनका समय है । यह रामानुजीय सम्प्रदायके थे और इनके गुरूका नाम परमानन्द था । निम्नस्थ ग्रंथ तथा टीकाएँ इनके बनाये हैं:-

भगवद्गीतापर सुबोधिनीतिलक, भगवद्गीतासार टीका, भागवतपुराण टीका, विष्णुपुराणपर आत्मप्रकाशटीका, वेदस्तुतिटीका, व्रजविहार भावार्थदीपिका और पदार्थप्रकाशिका पुराणटीका ।

सगर महाराजा-- वाल्मीकि रामायण बा० का० में लिखा है कि, सूर्यवंशमें राजा असित हुये जिनको हैहय, तालजंघ तथा शशबिन्दु देशोंके राजाओंने परास्त करके निकाल दिया। राज्यरहित राजा असित अपनी दोनों रानियों सहित हिमवान पर्वतपर जारहे और थोडेही दिनोंबाद परलोक सिधारे । दोनों रानियें उस समय गर्भसे थीं, एकने कालिन्दी नामक दूसरीको गर्भ नाश करनेके लिये गरल दिया । भार्गवच्यवन ऋषि उनदिनों हिमवान पर्वत (हिमालयका भाग विशेष) पर तप करते थे, कालिन्दीने जाकर उनको प्रणाम किया, मुनिके आशीर्वादसे गरके सहित कालिन्दीने पुत्र जना और इसी लिये उसका नाम सगर पड़ा । बड़े होकर सगरने शक, यून, कम्बोज, तालजंघ, शूर, पारू किंदु तथा हैहय जातिवालोंको परास्त करके पृथ्वीका एकछत्र राज्य किया । अनेक द्वीपोंमेंभी सगरका राज्य था । बालीद्वीपमें अबतक उनकी पूजा होतीहै । समुद्रका नाम सागर इन्हींके नामसे पड़ा । सगरका बनवाया सागरताल अभी

क तहसीलकासगंज जिला एटाके गढ़ी चकेरी नामक ग्राममें मौजूद है। सगर सन्ततिहीनथे एवं हिमवान पर्वतपर जाकर उन्होंने तप किया जिसके प्रभावसे रानीकेशिनीके १ पुत्र और रानी सुमतिके ६० हजार पुत्र हुये। अंतमें सगरने बद्रिकाश्रममें उस स्थानके समीप जिसको अब व्योमप्रयाग कहिते हैं अश्वमेध यज्ञ किया और कुछ काल पीछे निजपौत्र अंशुमानको राजपाटसौंप वनको सिधारे। सोरों जि० एटामें कपिलदेव मुनिकी गुफाके साम्हने सगरके ६० हजार पुत्रोंके भस्म होनेकी पुराणोक्त कथानक प्रसिद्धही है। इनका वंशवृक्ष महाराज सूर्य्यके चारित्रमें लिखा गया है सो देखो।

श्रद्धारामपंडित (सनातनधर्मके प्रथम पंजाबी उपदेशक)– वि० सं० १८९४ की साल जयदयालु ब्राह्मणके घर फिल्लौर जिला जालन्धरमें जन्मे थे। पिता तथा चाचा इनके साधारणरीतिके पुरोहित होकर यजमानोंके द्वारा अपना गुजारा करतेथे। पं०श्रद्धारामजी संस्कृत, अर्बी, फार्सी तथा अंग्रेजी के बड़े पंडित होनेके सिवाय चमत्कारी ज्योतिष तथा रमलशास्त्रके विद्वान होकर बड़े प्रतापी हुये। भाषाकविताभी करते थे, संगीतशास्त्रमें निपुण थे और ग्रंथरचनामें सिद्धहस्त होकर सत्यामृतप्रवाह, भाग्यवती, सिक्खांदे-राजदीविधिया, असूले मजाहिब तथा रमलकामधेनु आदि अनेक ग्रंथोंके रचयिता थे। पंजाब तथा युक्त प्रान्तके अनेक नगरोंमें अपने खर्चसे जाकर सनातन धर्मका उपदेश करते थे और यदि कोई चाहता तो श्रीमद्भाग-वत आदि पुराणोंकी कथा कहाकरते थे जिसको निम्नस्थ विशेषताओंके कारण हजारोंलोग सुनते तथा हजारों रुपये चढाते थे:–

पहिले तो यथोचित कालके रागमें साजके साथ सस्वर पाठ करना फिर स्पष्ट भाषामें अर्थ कहना, प्रसंगको श्रुति स्मृति पुराण कुरान इंजील आदिके प्रमाणोंसे विभूषित करते जाना और साथही वेदविरुद्ध मतोंका खण्डन इस रीतिसे करते जाना कि, समझें सब पर कोई बुरा नमाने।

घरपर हों या बाहर पंडितजीके पास छोटे बडे सरकारी नौकरों तथा सेठ साहूकार आदि हजारों अमीर गरीबोंकी भीड लगी रहती थी। अनेक राजे महाराजे तथा पंजाबके लफटिनेन्ट गवर्नरतक इनके गुणोंकी प्रतिष्ठा करते थे। ऐसे महत्पुरुषको ईर्षालुओंके द्वारा बहुतकुछ सन्ताप भोगना पडा था जिसका दिग्दर्शन मात्र यहां लिखते हैं–

अत्युच्च विचारोंके पुरुष होकर पंडितजी विनाबुलाये किसीके यहां नहीं जाते थे, पिताके धनी यजमानोंकोभी अपनी अपार विद्याके आगे तुच्छ समझ उन्होंने त्याग दिया था। प्रकृतिके नियमानुसार ऐसी दशामें साधारण माता

पिताके पुत्रका विलक्षण प्रताप देख जन्मभूमिके कितनेही लोग ईर्षालु होगये थे परन्तु कुछ करसक नहोकर बा। २ में ठट्ठा उड़ाया करते तथा दूर २ तक सर्व साधारणके चित्तमें कुसंस्कार दृढाकर निरन्तर अपनी गणना बढानेका उद्योग किया करते थे। चढ़ती जवानीके दिनोंमें किसी अवसर पर पंडितजीने अपनी माताके एक थपेड़ा मारकर अतिशय पश्चात्ताप किया था। इसीकारण बाहिकाये जानेपर उनकी माता तथा चचीभी स्त्रियोंके सहज स्वभावके अनुसार अपने पुराने यजमानोंसे, जो पंडितजीके मुख्य ईर्षालू थे, मिलगईथीं जिससे घरका भेद सहजहीमें बाहर होजाया करता था। अनुचित हठ करनेपर पंडितजी ब्रह्मतेजपर आ जाते थे, इसी बुनियादपर ईर्षालूओंने छोटे दर्जेके मनुष्योंको सिखलाकर पंडितजीके बनानेके लिये उद्दित किया जिससे बात २ में वा मर्मस्पर्शी शब्द बोलकर तथा विकार सूचक चेष्टा बनाकर पंडितजीका हृदय तपाने लगे। यह चालसमझ पंडितजीने इन "बन्दरके हाथके चिमटों" को यथाशक्ति अपनेसे दूर रखनेका प्रयत्न किया। फिल्लौर तथा लाहौरमें पंडितजीने हरिज्ञान मन्दिर बनवाये थे जिनमें हरसाल २।४ उत्सव धूमधामसे होते थे और अपने द्वारपर दाल आटेका सदाव्रत जारी किया था। अनेक औरभी देशहितके काम करनेको थे जिनके पूरे होनेमें ईर्षालूओंके उद्योगसे देर हुई और शीघ्रही वि० सं० १९३८ की साल पंडितजीको मृत्युने आघेरा। द्वेषीलोग जिसप्रकार पंडितजीको निरंतर सन्तप्त करनेका उद्योग करते थे उसका एक उदाहरण यहां लिखते हैं-

दाल आटेके सदाव्रतके विषयमें ईर्षालू लोग हाटवाटमें देशीविदेशी सबहीसे विकार सूचक चेष्टा बनाते हुये पापदर्शी शब्दोंमें कहाकरतेथे कि "अजी इनके यहां तो सदाव्रत खुला है जिसको इच्छा हो ले; इनकारतो किसीको हैहीनहीं"। जो करना था सो पंडितजीने सदैव किया और ईर्षालूओंकी बातोंपर किंचिन्मात्र ध्यान न करनाही उनकी उचित औषधि समझी। कोई सन्तान नहींथी एवं अन्तसमय पंडितजीको निज अर्द्धांगी पंडितामहताबकुंवर की नौकामझधार केवल एक विद्वान शिष्य पं० तुलसीदेवके सहारे छोड़नी पड़ी। पंडितजीके द्वेषियोंने अनाथ विधवाकोभी कलनहीं लेने दी परन्तु वास्तवमें उसको कुछ विशेष हानि नहीं पहुंच सकी। धिक्कार! ऐसे द्वेषियोंको जो तनमें प्राणरहिते सदैवहीं गाल बजाते रहे लेकिन कुछ कर न सके। अनेक समाचार पत्रों तथा बड़े २ लोगोंने पंडितजीके मृत्युपर एकस्वरसे कहा था कि "पं० श्रद्धाराम वास्तवमें देशहितैषी महाविद्वान थे"।

सम्भाजी-महाराज शिवाजीकी पत्नी सईबाईके उदरसे स. ई. १६५७ की साल राजगढ़में जन्मे। पिताके जीतेजी इन्होंने किसीब्राह्मणीसे बलात्कार

भिचार कियाथा जिसके बदलेमें महाराज शिवाजीने इनको कुछ के लिये कैदकर्के अपनी न्यायपरिताका परिचय दियाथा । पश्चात इंने निजपिताके विरुद्ध उपद्रव ठाना जिससे महाराज शिवाजीको इतना क हुआ कि वह मरही गये। स०ई० १६८० में पिताके सिधारनेपर यह सिंहासन पर विराजे और ९ वर्षतक राज्य करते रहे। यह बड़े निर्दईथे, प्रजा के शासनसे डकला उठीथी, शराब बहुत पीतेथे, बड़े स्त्रैणथे और बहुधा तरपुरहीमें रहितेथे। इनका राज्यकाल पुर्तगालियों तथा मुगलोंसे लड़नेमें ता, स० ई० १६८९ में मुग़ल सम्राट औरंगज़ेबने बीबी बच्चों सहित इनको कड़वा लिया और लोहेकी गरम सलाखसे इन्हें अन्धा करवाके जिह्वा इनकी टवाडाली क्युंकि मुसल्मानोंके पैगम्बर मुहम्मदको इन्होंने कुवाक्य कहेथे नको औरंगज़ेबने इनका सिर धड़से जुदा करवा दिया और इनके पुत्र वाजी द्वितीय (साहू) को बहुत दिनोंतक क़ैदमें रक्खा।

सर्वज्ञमुनि (संक्षेप शारीरक भाष्यके कर्ता)—यह स्वामी कराचार्य (स०ई० ७९९–८३१) के शिष्योपशिष्यथे।

सरस्वती—पं०मण्डन मिश्रकी स्त्री लीला अपनी अपार विद्याके कारण रस्वती कहलातीथी (देखो लीलावती)।

सलीमच्चिश्ती शैख (करामाती फ़क़ीर) शैखबहाउद्दीनके घर हलीमें स०ई० १४७८ की साल जन्मे। बड़े होकर इबराहीम चिश्तीके मुरीद ये और आगरेके समीप फतेपुरसीकरीमें आरहे । इन्होंने २४ दफे मक्का दीनाकी यात्राकीथी, केवल सीकरीके तालाबमें पैदा हुये सिंघाड़ोंकी रोटी तेथे और हिंदोस्तानके मुख्य पहुंचे हुये साधुओंमें इनकी गिनती थी। ग़ल सम्राट अकबर इनको बहुत मानताथा।' शहिजादा सलीम (जहांगीर) न्होंकी आशिषसे पैदा हुआथा । अकबरने सीकरीमें इनकी मढीके स्थानपर लाख रुपये के खर्चसे एक मसजिद बनवादीथी जो अबतक मौजूद है। स मसजिदके बननेसे कुछही महीने बाद स०ई० १५७२ की साल शैखजी लोक गामी हुये। इनका एक बेटा बंगालमें मारागया, दूसरा इनकी गद्दी सीकरीमें बैठा और इनके पोते इसलामखांको मुग़ल सम्राट जहांगीर सलीम) ने बंगालका सूबेदार बनादिया।

सलीमशहिज़ादा—देखो जहाँगीर।

सहजो बाई (भाषाकवि)—यह प्रसिद्ध महात्मा चरणदासजीकी ष्या कविता करनेमें निपुणथी। जातिकी दूसरथी और इसके पिताका नाम

हरिप्रसाद था । दिल्लीके परीक्षा पुरेमें रहतीथी । निम्नस्थ ग्रंथ इसे रचे हुये हैः-

सहजो बाईके शब्द (योग), सोलह तिथ्यनिर्णय और सहज प्रकाश व अंग (वि० सं० १८००) ।

सहदेव पांडव–चंद्रवंशीराजा पांडुके कनिष्ट पुत्र, रानी माद्रीके गर्भ से थे। ज्योतिष तथा वैद्यक खूब पढेथे। "व्याधि सिन्धु विमर्दन" नामक वैद्यक ग्रंथ इनका रचा हुआ लुप्त होगया है। इनकी स्त्रीका नाम विजया जिससे सुहोत्र नामक एक पुत्रथा। इनका विशेष वृत्तांत युधिष्ठिरके सम्बंध हो चुका है।

साउदी (रावर्ट साउदी– Robert Southey) प्र अंग्रेजी कविके बाप ब्रस्टल नगर (इङ्गलैंड) में बजाजथे और वेस्टमिनिस्ट स्कूल तथा आक्सफोर्ड कालिजमें इसने विद्या पढीथी । १०० से अधिक पुस्तकें पद्य, इतिहास तथा जीवन चरित्रोंकी इसने रचीथीं । स० ई० १८१ में इङ्गलैंडके कविराजका पद इसको प्राप्त हुआ और ३०० पौंड वार्षिक वेतन नियत हुआ। स० ई० १७७४ में जन्म, स० ई० १८४३ में मृत्यु ।

साङ्गाराना (हिंदूपति महाराना संग्राम सिंह चित्तौड़ नरेश)- वि० सं० १५६६ में निज पिता राना रायमलके बाद मेवाड़ राज्यके अधिकारको प्राप्त हुये। दिल्ली, मालवा तथा गुजरातके मुसलमान बादशाह इनके राज्यको चारों तरफ़से घेरे हुयेथे परंतु यह निर्भय होकर राज्य करतेथे और जिधर जाते उधर विजयही पातेथे। १८ दफे इन्होंने दिल्ली तथा मालवाके बादशाहोंको परास्त कियाथा। मारवाड़, अम्बर, ग्वालियर, अजमेर, सीकरी, रायसेन, कालपी, चंदेरी, बूंदी, रामपुरा और आबूके राजे आधीन होकर इनको राजस्व देतेथे। यह एक दफे लड़ाईमें मालवाके बादशाह महिमूद खिल जीको पकड़ लाये और ६ महीनेतक चित्तौड़के किलेमें कैद रखकर उसको छोड़ाथा। दिल्लीके मुग़ल सम्राट बाबरपर १ लाख सवार लेकर राना चढगयेथे और उसके अमीर सर्दारोंपर अपनी ऐसी धाक बिठादीथी कि बाबर स्वयं अपने जीवन चरित्रकी पुस्तकमें लिखता है कि "मारे डरके कोई सर्दार साङ्गारानासे लडनेकी बाततक मुंहसे नहीं निकालताथा"। स० ई० १५२७ की साल अन्तिम युद्धमें जो राणा और बाबरमें हुआ, राणा के कई नमक हराम सर्दार बाबरसे मिल गये जिससे रानाकी हार हुई । दूसरेही वर्ष रानाने फिर दलबल सहित बाबरसे लड़नेको कूंच किया लेकिन रास्तेही

परलोक गमन किया। बाबर बादशाह अनुमान करते हैं कि १० करोड़ रुपये वार्षिक आयका मुल्क राणा साङ्गाजीके अधिकारमें था। राणा साङ्गाजी बड़े यशस्वी वीर नरेशथे, उनके समयमें मेवाड़ राज्यको बड़ी रौनक हुईथी। इनके पुत्र राना रत्नसेन उत्तराधिकारी हुये।

सादी (फार्सीकवि)—इनका पूरानाम शैख मुसले हुद्दीन सादीथा। यह ईरानके शहिर शीराजके रहिने वालेथे। इनके बाप अब्दुल्ला निर्धनी थे निदान इनको बहुत दिनोंतक ऊंट हांकनेका पेशा करना पड़ाथा। ४० वर्षकी उमरमें इन्होंने पढ़ना लिखना शुरू किया। शहिर अलैपोके किसी सौदागरकी बेटीसे इनका विवाह हुआ था, कई दफे मक्के मदीनेको पैदल गयेथे, दूर २ देशोंमें भ्रमण कियाथा, और हिंदुस्थानकी सैरकोभी आयेथे। इन्होंने फारसीमें कई पुस्तकें रचीथी जिनमेंसे गुलिस्ताँ, बोस्ताँ, तथा करीमा जगतप्रसिद्ध हैं। इनके बचनमें अद्भुत शक्ति पाई जातीहै।स०ई०१२९५ में१२० वर्ष के होकर मरे।

सान्दीपन गुरु (कृष्ण बलरामके विद्यागुरु)—यह पंडितजी अनेक शास्त्रोंके ज्ञाता होकर शस्त्रविद्या तथा रणकार्योंमें भी दक्ष थे। उज्जैनके रहिने वालेथे और वहाँ एक पाठशालामें पढातेथे। कृष्ण बलरामने मथुरासे उज्जैन जाकर इनसे विद्या पढ़ीथी। उज्जैनमें अबतक इनकी पाठशाला बनी है और उसमें कृष्ण बलराम तथा सुदामा आदि विद्यार्थियोंकी मूर्तियें रक्खी हैं।

सायणाचार्य (वेदभाष्यकार)—इनके रचे २९ संस्कृत ग्रंथ हैं। इन्होंने तथा इनके भाई माधवाचार्यने मिलकर ऋग्वेद भाष्य रचाथा (देखो माधवाचार्य)। डाक्टर बुल्हर (Doctor Bulher) साहिबके मतानुसार सायनाचार्य स० ई० १३३१ से १३८३ तक संन्यासी होकर विद्यारण्य स्वामीके नामसे रहेथे। यज्ञतंत्र सुधानिधि तथा पञ्चदशी इन्हींके रचे ग्रंथहैं।

सालारजंग (नवाब सर सालारजंग बहादुर, जी.सी.यस.आई.) यह हैदराबादके निज़ाम नज़ीरुद्दौलाके समयमें स० ई० १८५३ की साल वज़ीरके पदपर नियत हुये और रियासत हैदराबादको बिगड़नेसे रोकलिया क्योंकि निज़ाम नज़ीरुद्दौलाका राज्य प्रबंध खराब था। उन दिनों रियासतपर बहुत ऋण होगयाथा, सालारजंगके सुप्रबन्धसे ऋण थोड़ेही दिनोंमें चुका दिया गया और रियासतकी आमदनी बहुत कुछ बढी। सन् ५७ के गदरके समय निज़ाम अफ़ज़लुद्दौला हैदराबादकी गद्दी पर राज्यकरतेथे लेकिन यह सालारजंगहीके सुप्रबन्धका कारण था

कि दक्षिणमें गदर अधिकतासे नहीं फैलने पाया गदरके बाद सालारजंगने हैदराबाद राज्यमें अनेक कुंये तथा तालाव खुदवाये, सड़कें निकलवाई, न्याया स्थापन किये, पुलिसविभागके प्रबन्धमें सुधार किया और जेलखाना, स्क इत्यादिके लिये इमारतें बनवाई। निज़ामअफजलुद्दौलाके बाद मीर महिब अलीखाँ गद्दीपर बैठे जिनकी बाल्यावस्थामें बृटिश गवर्नमेन्टने कौन्सिल अ रिजेन्सी नियत की और सालारजंगको उसका प्रधान मुकर्रर किया। बृ शगवर्नमेन्टने आपको सर तथा जी. सी. यस. आई. के खिताबदियेथे। आप बारादरी हैदराबादमें देखने लायक़ वनीहै और आपके मकानका अहाता स ग्यारह फ़ीट ऊंचा हिंदोस्तान भरमें अद्वितीय है।

सालिगरामरायबहादुर (राधास्वामीसम्प्रदायकेप्रचारक) रायबहादुरसिंह कायस्थकेघर आगरा मु. पीपलमंडीमें १४ मार्च स. ई. १८ को जन्मे बाल्यावस्थामें हिन्दी, फारसी तथा अंग्रेजीकी शिक्षापाई। पश्चा गवर्नमेन्टके डाँकविभागमें नौकरी की और बढ़ते २ पश्चिमोत्तर व अवध देश डाकखानोंके इन्स्पेक्टरजेनरलके पदको प्राप्तहुये। स. ई. १८८७ में पेन्शन और ६ दिसंबर स. ई. १८९८ को परलोक गामीहुये । आपने राधास्वामी ला शिवदयाल सिंहकी चलाई हुई राधास्वामी संप्रदायका प्रचार बहुत कुछकि (देखो राधास्वामी)। स. ई. १८७८ में राधास्वामी मतके माननेवाले के ३००० थे परंतु रायसालिगरामके उद्योगके प्रभावसे स. ई. १८९१ की मनु गणनाके समय इस मतके अनुगामी १७६४३ निकले। आप बड़े अनुभवशी पुरुषथे, राधास्वामी मतके बड़े २ ग्रंथ आपने बनाकर छपवायेथे । आगरा त प्रयागमें इसमतकी सभायें नियतहुई हैं। काशीके पं० ब्रह्म शंकर मिश्र यम. आपके प्रधान शिष्य आजकल वर्तमान हैं।

साहू (मरहठाराजा)—इनका असलीनाम शिवाजी द्वितीय था लेकि मुग़लसम्राट औरंगजेब साहूनामसे इनको पुकारतेथे। जगत प्रसिद्ध मरह वीर महाराज शिवाजी इनके दादाथे और सम्भाजी इनके बाप । स० १६८९ में औरंगजेबने सम्भाजीको पकड़वाकर मरवाडाला और साहू कैदकर लिया। साहूका विवाह एक अमीर मरहठाकी बेटीसे कर दियागया और कैदमे उनके साथ अच्छा वर्ताव किया जाताथा । औरंग बके बाद बहादुर शाहने दिल्लीके तख्तपर बैठकर स. ई. १७०८ में साहू कैदसे छोड़ दिया और तख्तदिल्लीके आधीन रहिकर महाराष्ट्र देशके शासन हुक्म दिया। मरहठोंने इतने दिनोंबाद अपने राजाको पाकर बड़ी खुशीमना लेकिन बहुकालतक ऐशआरामकेसाथ कैदमें रहिनेके कारण साहूकी वीरता त परिश्रमकरनेकी बान जो मरहठोंके स्वाभाविक गुण हैं जाते रहे थे। साहूने अ

र्वजोंकी गद्दीपर सतारामें बैठकर जि़ला औरंगाबादके परगना सिवारीके पटलसे अनबनकरली। पैटल सैय्याजीराव इसझगड़ेमें मारागया और उसकी विधवाने अपने बच्चोंको साहूके पैरोंपर डालकर क्षमा मांगी। साहूने उसके बड़े पुत्र रानोंजीके पालन पोषणका बचन दिया और थोड़ेही दिनोंबाद उसको भोंसलाकी पदवी देकर आकलकोटका राज्य जागीरमें दिया। आकलकोटमें रानोजीके वंशज अबतक राज्य करतेहैं। साहू आरामतलब तो होईगयेथे निदान उनसे राज्य प्रबंध ठीक २ नहोसका, प्रजा थोड़ेही दिनोंमें उकता उठी और यदि साहू राजकाज अपने ब्राह्मण मंत्री बालाजी विश्वनाथको सौंपकर स० ई० १७१२ में अलहिदा नहोजाते तो शीघ्रही बड़े २ उपद्रव खड़े होकर मरहठा राज्यको नष्ट भ्रष्टकर देते। राजा साहूसे राज्यकाजका पूरा अधिकार पाकर पेश्वाने पूनामें अपनी राजधानी स्थापन की और ऐसी उत्तमतासे काम चलाया कि पेश्वाका पद उनके वंशमें पुश्तैनी होकर ७ पीढीतक रहा। साहू तथा उनके उत्तराधिकारी सतारामें रहिकर केवल नाममात्रके राजाथे, शासन वास्तवमें पूनामें रहिकर पेश्वा करताथा क्योंकि युद्ध विग्रह इत्यादि सबही राजकाज उसके हुकमसे होतेथे। स० ई० १७४८ में राजा साहूका देवलोक ६५ सालकी उम्रमें हुआ।

सिकंदर आज़म—देखो अलेग्जंडर दीग्रेट.

सिकंदर प्रथम सम्राट् रूस (Alexander I Emperor of Russia) निजपिता महाराज पालके वध होनेपर स० ई० १८०१ में रूसके तखतपर बैठे। यह बड़े प्रजापालक थे। २ हजारसे अधिक स्कूल और २०४ अखाड़े इनके समयमें मुल्क रूसमें प्रजागणके हितार्थ जारी हुयेथे। दासत्वका चर्चा इन्होंने मिटायाथा। स० ई० १७७७ में जन्मे, स० ई० १८२५ में मरे।

सिराज़ुद्दौला (अन्तिमनव़ाबबंगाला)—निजदादा अलावर्दी ख़ाँके बाद स० ई० १७५६ में गद्दीपर बैठा। बड़ा अन्याई तथा क्रोधी था, थोड़ेही महीनेमें अंग्रेजोंसे बिगाड़ करबैठा और तुच्छ बातोंपर क्रुद्ध होकर कलकत्तेमें अंग्रेजोंकी कोठी जा घेरी और १४६ अंग्रेजोंको पकड़कर कालकोठरीमें ठूंसदिया, जिनमेंसे दूसरे दिन केवल २३ मनुष्य जीते बचे। यह खबर जब अंग्रेजी अफ़सर क्लायवसाहिबके कानमें पहुंची तो उन्होंने कुछ फौज लेकर मदरासखे कूंच किया और पहुँचतेही कलकत्तेपर अधिकार करलिया। नवाबने सुलह करली और जो कुछ कम्पनीका नुकसान हुआथा वहभी पूराकरदिया। स. इ. १७५७ में जब यूरूपमें अंग्रेजों और फरासीसोंमें युद्ध ठनातो क्लायवने मौका पाकर चन्द्रन नगर फरासीसोंसे छीन लिया। इसकार

वाईसे सिराजुद्दौलाके राजप्रबन्धमें हलचल हुई, एवं वह फ़रासीसोंका तरफ़दार होगया। क्लायबने यह देख सिराजुद्दौलापर चढ़ाई की और स० ई० १७५७ में पलासीके मैदानमें उसको परास्तकर्के भगादिया और मीरजाफिरको अपनी तरफ़से नवाब बनाया। कुछही दिनोंबाद मीरजाफिरके बेटेने सिराजुद्दौलाको पकड़वाकर २० वर्षकी उम्रमें मरवाडाला।

सिलादित्यप्रतापशील—यह विक्रमादित्यहर्ष महाराजा उज्जैनका बेटा निज पिताके बाद प्रायः स० ई० ५५० में गद्दीपर बैठा। स० ई० ५८० के लगभग सिलादित्यके परलोक गमन करनेपर उसका बेटा प्रभाकर वर्धन गद्दीपर बैठा। सिलादित्यप्र० को शत्रुओंने राजरहितकर दियाथा लेकिन कश्मीर नरेश प्रवरसेन२ ने मदद देकर फिर उनको राज्य दिलवाया और महाराजविक्रमादित्यको निज पूर्वजोंका दिया हुआ ३२ पुतलियोंका सिंहासन कश्मीरको लेगया।

सिलादित्य हर्षवर्द्धन (बौद्ध महाराजा)—देखो श्रीहर्ष वर्द्धन

सीतामहारानी (जानकीजी)—मिथलादेश (तिरहुत) के राजा जनककी कन्या महासुंदरी तथा गुणवती त्रेतायुगके अन्तमें हुई। महाराज रामचंद्रने स्वयम्वरमें शङ्कर धनुषको तोड़ सीताजीके साथ विवाह किया। सीताजीकी उम्र विवाहके समय ७ वर्षकी थी और महाराज उसवक्त १५ वर्षके थे। विहार प्रदेशान्तरगत जनकपुरमें शङ्कर धनुषका आधाहिस्सा अबतक देखनेमें आताहै, दूसरा आधाहिस्सा सीतामढ़ी स्टेशनसे ३ कोस दूरपरहै। सुसरालमें आकर जानकी माईने अपने शुभ आचर्णोंद्वारा सास, ससुर इत्यादि कुटुम्बियोंको अत्यंत प्रसन्न किया। पतिमें उनका प्रेम अगाधथा। २७ वाँवर्ष जब महाराज रामचंद्रको बनवास दियागया तौ सीतामहारानी उनके साथहीगई। जानुकीजीका यह मूलमंत्र परम प्रशंसनीयहै—

चौ०—जहँ लगनाथ नेह अरुनाते। पियाविनु तियहि तरणिते ताते॥ तनुधनधाम धरणि पुरराजू। पतिविहीन सब शोक समाजू। वनवासके १३ वें वर्ष महाराज रामचंद्र बम्बई प्रदेशान्तरगतनासिक शहिरसे थोड़ी दूर गोदावरीतट पंचवटी वन में जो अत्यन्त रम्यहै कुटीबनाकरजारहे। यहींसे मा०शु०८को अवसर पाकर रावण लङ्केश सीताजीको हरलेगया। रामजीने रावणको ससैन तथा सपारिवार नष्ट करके सीताजीको १०दिन१४मास लंकामें रहिनेके उपरांत पुनःपाया। तदुपरांत रामजी सीतामहारानी सहित अयोध्याके राजसिंहासन पर विराजे, इसीसाल सीता माताको गर्भ रहा जिससे लव तथा कुश दोपुत्रहुये। पश्चात महाराज रामचंद्रने अश्वमेध यज्ञ किया और इसी अवसरपर सीता माताने देह त्यागदी। साधारण दृष्टिसे देखनेपर सीताजीकी जीवनीसे दो उपदेश मिलतेहैं, एक तौ यह कि

स्त्रीका अत्यंत प्रेम करनेसे पुरुषको अनेक कष्ट सहन करने पड़तेहैं, दूसरा यह कि पतितथा अन्य सच्चेहितैषियोंकी आज्ञा उल्लंघन करनेसे स्त्रीको घोर आपत्तिमें पड़ना होताहै । यदि महाराज रामचंद्र प्रेमसे विवशहो सीताजीको अपने साथ वनको न लेजाते और यदि सीतामहारानी देवरकी आज्ञा उल्लंघन कर आश्रमसे बाहिर रावणको भिक्षा देने न निकलतीं तो रावण उनको क्युंकर हरलेजाता ।

सीताराम बी. ए. (भाषाकवि)– अयोध्या नगरीमें स० ई० १८५८ की साल लाला सुखदेव प्रशाद श्रीवास्तव कायस्थके घर आपका जन्म हुआ । आप अंग्रेजीमें बी. ए. पासहैं, संस्कृतके पूर्ण ज्ञाताहैं और भाषाकविता अच्छी करते हैं । कालिदास, भवभूति आदिके रचे हुये बीसियों काव्यों तथा नाटकोंका अनुवाद आपने भाषा पद्यमें कियाहै ।

कविता आपकी उत्तम है और भाषा शैली पुराने ढंगकी नहीं है । खड़ीबोलीकी कविताका प्रचार करनेवाले कवियोंमें आप प्रधान हैं । बहुत दिनोंतक युक्त प्रान्तमें शिक्षा विभागके असिस्टन्ट इन्सपेक्टर रहिनेकेबाद गवर्नमेन्टने आपको डेपुटी कलेक्टरीके ओहदेपर नियत किया है जिसपर स० ई० १९०३ तकविद्यमान हैं । वर्ताव आपका ऐसा है कि जिससे आधीन कर्मचारियोंकी आप पर पूज्य बुद्धि है ।

सुक़रात (Socretes)–इस यूनानी हकीमका बाप मूर्ति बनानेका पेशा करताथा । सुक़रातने बड़े २ ब्रह्मज्ञानी विद्वानोंसे विद्या पढ़ी और फ़िर कुछ दिनोंतक फ़ौजमें नौकरी करके कईलड़ाइयोंमें वीरता दिखाई । एक दफ़े प्रसिद्ध इतिहासकार जैनोफ़न घायल पड़ाथा. सुक़रात उसको उठाकर लड़ते भिड़ते रणभूमिसे बाहर निकाल लाये । यह युद्धके समय फौजमें लड़तेथे और युद्ध शान्तिहोनेपर पढ़ा लिखा करतेथे । बड़े कुरूपथे और इनकी पत्नि जैन्टिप बड़ी करकशाथी पर यह उस्से कुछभी नहीं कहितेथे । पश्चात् निज जन्म भूमि एथेन्समें बसकर सुक़रात लड़कोंको पढ़ातेथे, इनके पढ़ानेका तरीक़ा यह था कि प्रश्नोत्तर करते हुये पाठकके मुंहसे प्रत्येक बातको सिद्ध कराळेतेथे । इनका वचन था कि विवेक मनुष्यको बुरेकामोंसे रोकता है इसलिये विवेकसे चलना चाहिये । आवागमनको मानतेथे, किसीको दुःख नहीं देतेथे और सबके सहायक रहतेथे । साफ कहिनेवालेथे और इसी कारण इनके बहुत शत्रु होगयेथे । अनेक शत्रुओंने मिलकर सुक़रातको यूनानी लड़कोंके बिगाड़ने तथा मूर्तियोंकी निन्दा करने और नयामत चलानेका दोष

लगाया। राजाने प्रथम इनको १ महीनेके लिये क़ैद किया और पश्चात वि दिलाकर मरवा डाला। इनके ७ बच्चेथे, यूनानी हकीमोंमें यह बड़े चतुर कि जातेहैं, अफ़लातून तथा ज़ेनोफन इनके शिष्योंने स्वरचित ग्रंथोंमें इन अनेक उपदेश संग्रह कियेहैं। सुकरातके मरनेके पीछे यूनानी लोग बड़े पछ ताये और सुकरातके शत्रु बड़े दुःखसे मरे। जन्म ४६९ वर्ष पूर्व स० ई०हुअ और मृत्यु ३९९ वर्ष पूर्व स० ई० हुई।

सुखदेवमिश्र (भाषाकवि)—यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण कम्पिल जि एटाके रहिने वालेथे और बादशाह औरंगज़ेबके दर्बारमें आते जातेथे। एव दिन बादशाहके दर्बारमें बहुतसे कवीश्वर बैठे हुयेथे और नगरमें किसीके घर उत्सवमें बाजे बजरहेथे। बादशाहने कवीश्वरोंसे दरियाफ्त किया कि नौ बतमेंसे क्या शब्द निकलता है? और कवियोंने तो अपना मनमाना बताय परंतु सुखदेवजीने यह दोहा पढ उत्तर दिया-

दो०—द्वार दमामे नाबजत, कहत पुकार पुकार।
हरि बिसराये पशुभये, पड़त चामपर मार॥

यह दोहा सुन बादशाहने सुखदेवजीको इनाम दिया और कविराजकी पद वी दी। पश्चात सुखदेवजी दिल्लीके बड़े २ रईसों अमीरोंसे मिलकर प्रतिष्ठाके भागी हुये। दिल्लीसे लौटकर कम्पिलमें आये और वहाँसे अमेठीके राजा हिम्मत बहादुरके दर्बारमें जाकर आदर पाया "फाज़िल अलीप्रकाश" नामक ग्रंथ इन्होंने औरंगज़ेबके मंत्री फाजिल अलीके नामसे बनायाथा। निम्नस्थ ग्रंथ और भी इन्हींके बनाये हुयेहैं:-वृत्तविचार पिङ्गल, छंद विचार पिङ्गल और अध्यात्म प्रकाश। वृद्धावस्थामें सुखदेवजी घरबार छोड़ गंगातट रहतेथे, उसी समयका बनाया यह पद है-

पद-इननाती पोतनको हितकर मैं देश विदेश फिरोहौं करोड़ा।
बांध्यो रह्यो ममताकी वरारिन ज्यौं बली बैल रहै और घोड़ा।
छोड़के दीनदयालुकी आश अजान सोहै मैं फिरो रंगोड़ा।
एकादिना यह छांड़ि हैं मोहि यही जियजान अभी मैं छोड़ा।

वि. सं. १७३८ में विद्यमान थे।

एक दूसरे सुखदेवमिश्र दौलतपुर-ज़ि०रायबरेलीके रहिनेवाले वि०सं० १८०३ में विद्यमानथे, जिनका बनाया "रसार्णव" नामक ग्रंथ भाषा साहित्यमें अच्छा है। असोथर ज़ि० फतेपुरके राजा भगवन्त राय खीचीके दरबारमें इनका आदर होता था।

सुखदेवजी (व्यासजीकेपुत्र)—बाल्यवस्थाहीमें यह वनको चले गयेथे। पश्चात नारद मुनिके उपदेशसे घरको लौट आये और व्यासजीके

शिक्षा पाई। राजा परीक्षितको सप्ताह इन्होंने सुनायाथा। बादको इनका विवाह हुआ जिससे ४ पुत्र और १ पुत्री हुई। अंतमें संसारसे बन्धनमुक्त होकर शुकदेवजी कैलाश पर्वत पर तप करने चले गये।

सुषेणवैद्य–यह रावण लङ्केशके राजवैद्य थे। रावण सरीखे विद्वान पंडित तथा कला कौशलादिमें निपुण राजाके यहां राज्य वैद्यका पद पाना किसी साधारण पुरुषका काम नहीं था। लक्ष्मणजीके जब शक्ति बाण लगा था तो सुषेण वैद्यहीने सञ्जीवनी बूटीके प्रयोगसे उनको आराम कियाथा। "आयुर्वेद महोदधि" नामक ग्रंथ सुषेणका कहा हुआ है। उक्त ग्रंथमें पदार्थोंके गुण दोषोंका अच्छा वर्णन है।

सुंदरकवि–यह ग्राम असनी जिला फतेपुरके रहनेवाले भाट वि० सं० १९३० मे विद्यमान थे। "रसप्रबोध" नामक ग्रंथ इनका बनाया अच्छा है। एक सुंदरकवि मेवाड़ देशके रहनेवाले दादू बेहनाके शिष्य प्रायः वि० सं० १७६१ में विद्यमान थे जिनके रचे सुंदरगीता, सुंदर विलास, हरिबोलचिन्तामणि तथा सुंदर सांख्य नामक ग्रंथ हैं।

सुंदर महा कविराय–यह ग्वालियरके रहनेवाले नागर ब्राह्मणथे। मुगल सम्राट् शाहजहाँने इनको महाकविरायकी पदवी दीथी। "सुंदर शृंगार" नामक ग्रंथ इनका बनाया भाषा साहित्यमें अच्छा है। सिंहासन बत्तीसीका भाषानुवाद तथा ज्ञान समुद्र नामक ग्रंथभी इन्होंके रचे हुये हैं। वि० स० १६८८ में विद्यमानथे।

सुदामा पांडे (श्रीकृष्णजीके सपाठी)–यह अत्यन्त रङ्क पर बड़े सुशील, कुलीन, सन्तोषी और महात्यागी ब्राह्मण थे। सान्दीपनि गुरुकी पाठशालामें, जो उज्जैनमें थी, इन्होंने श्रीकृष्णजीके साथ२ शिक्षा पाईथी। पश्चात चटसार स्थापन करके बहुत दिनोंतक लड़के पढ़ायेथे, इनकी बनाई बारापडी प्रसिद्ध हैं। इनकी स्त्री पतिव्रताथी। दरिद्रसे महादुःख पाय स्त्रीने एकदिन ठेलठालकर इनको श्रीकृष्णजीके पास द्वारिका भेजा। द्वारिका पहुंच महाराजसे इनकी भेंट हुई, महाराज अपने बालापनके मित्रकी दीनदशा देख रोनेलगे–

क० कैसे बेहाल बिवायन सों भये कंटक जाल गड़े पगधोये।
हाय महादुख पायो सखा तुम आये इतनै किते दिन खोये।
देख सुदामाकी दीनदशा करुणा करके करुणानिधि रोये।
पानी परातको हाथ छुओ नहिं नैननहके जलसे पगधोये।

पश्चात महाराजने बड़े आदर सत्कारसे इनको अपने पास रक्खा और शुभ रीतिसे विस्वकर्मा आदि निज सेवकोंको आज्ञादी कि सुदामाके लिये जाकर विशाल भवन तैयार करो और अष्ट सिद्धि नव निद्धसे उसको भरदो। महाराजकी आज्ञा तुरंत पालनकी गई कई दिन पीछे जब सुदामा अपने घरको चलने लगे तौ महाराजके नेत्रोंमें आँसु उमँड़ आये और मुंहसे कुछ बात न निकली। रास्ते २ सुदामा अपने मनमें सोचते आतेथे कि महाराजने हमको कुछ दिया नहीं। ग्राममें पहुंच अपनी टूटी मंड़ैया तथा दीन ब्राह्मणीको भी न पाया, तब तौ बहुत दुखीहो इधर उधर पूंछने लगे। सुनतेही सुदामाकी ब्राह्मणी दौड़ी आई और निजस्वामीके चरणोंमें लिपट गई तथा आदर पूर्वक उनको भीतर लेगई। सुदामा अति विभव देख महा उदास हुये और कहने लगे कि प्रिये! यह माया बड़ी ठगनी है, संसारको इसने ठगाहै सो प्रभुने वे मांगे मुझेदी। सुदामा जी गुजरात देशमें सागर तट पोरबंदर (सुदामा पुरी) के रहने वालेथे जहाँपर एक छोटेसे मंदिरमें इनकी और इनकी स्त्रीकी मूर्ति अबतक विराज मानहै।

शुद्धोदन (सूर्यवंशीनरेश)—बौद्ध मतके आचार्य गौतम बुद्ध इनके पुत्रथे। कपिल वस्तू में इनकी राजधानीथी। इनसे पीछे केवल छःपीढ़ी तक और सूर्य्य वंशका राज्य चला। शि. पु. के लेखानुसार यह रामचंद्र महाराजसे ४८पीढी पीछे हुये और भागवतके लेखानुसार ५२पीढ़ी पीछे।

सुधाकर दुवे, पं० महामहोपाध्या—आपके पूर्वज सजूंपारि ब्राह्मण ब्रह्मपुर ज़िला गोरखपुरसे बनारसमें आबसेथे। पं० सुधाकरजी संस्कृतके अपूर्व विद्वान होकर बड़े बुद्धिमान तथा गणित शास्त्र पारङ्गत हैं। स० ई० १८८३ में संस्कृतकालिजबनारसमें पुस्तकाध्यक्षके पदपर नियत हुयेथे। आज कल्ह (स० ई० १८०३) में क्वीन्सकालिज बनारसमें गणित तथा ज्योतिष शास्त्रके प्रोफ़ेसर होकर यम. ये. के छात्रोंको उक्त शास्त्रोंकी शिक्षा देते हैं। स० ई० १८८७ में महामहोपाध्यायकी उपाधि अपार विद्याके पुरष्कारमें बृटिश गवर्नमेन्टने आपको प्रदानकी है। आप हिंदी तथा संस्कृतमें अनेक पुस्तकोंके रचयिता हैं और अंग्रेज़ी, फार्सी इत्यादि अन्य देशीय भाषाओंके भी अच्छे ज्ञाताहैं। पुराने धजके लोगहैं और बनारस की घनी वस्तीमें रहना पसन्द न कर वरुना नदीपार एक गाममें रहते हैं। काशी नरेशकी सभामें आपका सत्कार होताहै। मिलने वालोंके चित्तमें आपकी तरफ़से पूज्य बुद्धि उत्पन्न होती है।

सुबन्धु (बासव दत्ताके रचयिता)—यह बौद्ध पंडित उज्जैन नरेश सिलादित्य प्रतापशीलके दर्बारमें स० ई० की छठी शताब्दीके उत्तरार्द्धमें

विद्यमान था। ब्राह्मणके घर इसका जन्म हुआ था, काश्मीरमें इसने शिक्षा पाईथी, पं० मनोरथ इसका गुरु था और पं० अभ्युङ्ग इसका भाई था। शिलादित्यके दर्बारमें वैदिक मतानुगामी पंडितोंने इसको परास्त किया। पश्चात् यह मगध देशको चलागया और नालंन्द देशके विद्यालयमें अध्यापक होगया। अन्तमें नैपालमें जाकर परलोक गामी हुआ।

सुवंशशुक्ल (भाषाकवि)–बिगहपुर जि० उन्नावके रहिनेवाले ब्राह्मण थे अमेठी नरेश उमरावसिंह बन्धलगोत्रीके दर्बारमें रहकर इन्होंने अमरकोष, रसतरङ्गिणी, तथा रसमञ्जरीका अनुवाद भाषापद्यमें किया था और बादको बोड़लके राजा सुब्बासिंहके दर्बारमें जाय "विद्वन्मोद तरङ्गिणी" के रचनेमें उनकी सहायता की थी। बि० सं० १८३४ में विद्यमान थे।

सुब्बासिंह–देखो श्रीधर कवि.

सुभद्रा–यह वसुदेवजीकी बेटी होकर श्रीकृष्णजीकी बहिन थी और अर्जुनको बिवाही थी। अभिमन्यु इनके उदरसे जन्मे थे जिनके पुत्र परीक्षित हुये।

सुमन्त्र–यह महाराज दशरथके ८ मन्त्रियोंमेंसे मुख्य थे। दशरथजीके बाद रामचन्द्र महाराजके समयमें भी मंत्रीका पद इन्होंने बहुत दिनोंतक भोगा था। बाल्मीकीय रामायणके लेखानुसार यह बड़े व्यवहार दक्ष विद्या विनय सम्पन्न, अनुचित कार्य करनेमें लज्जावान, नीतिमें निपुण, अकरणीय काम करनेसे दूर, लक्ष्मीवान, महाबुद्धि, अति पराक्रमी, कीर्तिकारी, राजकाजमें सावधान, आज्ञाकारी, तेजस्वी यशस्वी, क्षमाधारी और क्रोध, काम, अर्थके लिये भी झूठ नहीं बोलने वाले थे। इनको सब बातें विदित थीं, बुद्धिबलसे प्रदेशमें टिकेहुए लोगोंके मनकी बात भी जानते थे, अपना पराया नहीं समझते थे, विश्वासनीय दूतोंके द्वारा खूब निर्णय करके कार्य करते थे सुहृदयतामें परीक्षित, अनुचित कार्यपर पुत्रको भी दण्ड देनेवाले, खजाना इकट्ठा करनेमें निपुण सेनाको वश करनेमें चतुर, शत्रुको भी निरपराध दण्ड नहीं देनेवाले और सलाहसे रहने वाले थे। वीर शत्रुओंके दमन करनेमें उत्साह युक्त, पवित्र चित्त प्रजारक्षक, सदाचारी, मनमाना काम नहीं करने वाले तथा अपनेसे अधिक बुद्धिमानोंसे सलाह लेने वाले थे। सुन्दर वस्त्र धारण करने वाले, सुंदर वेष बनाये रहनेवाले, मिलाप तथा बिगाड़ करनेमें चतुर सत्त्व रज तम तीनों गुण समय २ पर धारण करने वाले, राजकाजकी सम्मति को गुप्त रखनेवाले सूक्ष्म विचारमें तत्पर और सदा सबसे प्रियवचन मन्द मुसकी सहित बोलने वाले थे।

सुमन्त्र (सूर्य्यवंशके अन्तिम नरेश)—यह गौतम बुद्धके पिता राजा शुद्धोदनसे छःपीढ़ी पीछे हुये मंत्री इनको राजरहित करके गद्दीपर बैठा

* सुरेन्द्रनाथ बनर्जी (जगत विख्यात वक्ता)—कलकत्तेके प्रसिद्ध डाक्टर बाबूदुर्गाचरन बन्धोपाध्यायके घर स.ई. १८४९में आपका जन्म हुआ। कलकत्ता विश्वविद्यालयकी बी.ये.की परीक्षा उत्तीर्ण करनेके पश्चात् सिविल स-र्विसकी परीक्षा पास करने आप इङ्गलैन्डको पधारेथे। उक्त परीक्षा पास करके बड़ी कोशिशसे आपको सिलहटकी ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेटी मिली क्योंकिआपकी उम्र ज्यादह होगईथी। इस पदपर आप बहुत दिनों तक नहीं रहे एवं ५०रुपये मासिककी पेन्शनपर आप नौकरीके बन्धनसे मुक्त होगये। पश्चात् आपने "बङ्गाली" नामक समाचार पत्र अंग्रेजीमें जारीकिया जो अब दैनिक प्रकाशित होता है। उन्हीं दिनों भ्रमवश एक मिथ्या आन्दोलन हाईकोर्टके जजोंकेखिलाफ आपके पत्रमें छपा जिसके अपराधमें हाईकोर्टने आपको कैद करदिया। जितने दिनों सुरेन्द्रबाबू जेलमें रहे बंगालियोंने शोक सूचक काले वस्त्र पहिने और चन्दा करके प्रसिद्ध बैरिस्टर बाबु लालमोहन घोषको अपील करने इङ्गलैंड भेजा। कैदसे छूटनेपर चार घोड़ोंकी गाड़ीमें बिठलाकर। लाखों बंगाली जय ध्वनिके साथ फूल बरसाते हुये उनको मकान पर लाये तबहीसे सुरेन्द्र बाबूने कृतकृत्य होकर स्वदेश हितका बीड़ा उठाया। आपमें व्याख्यान देनेकी अद्भुत शक्ति है। आप विना तय्यारहुये येन वक्तपर सूचना पाकर बड़े २ गम्भीर व्याख्यान, प्रभावशाली पुरुषोंके समक्ष, देनेको सहज स्वभावसे उठ खड़े होते हैं। व्याख्यान सुनकर विवशहो विरोधियोंको भी आपका अनुयायी बनना पड़ताहै। आप हिन्दुस्थानी कांग्रेसके महा सहायकों तथा मुखियाओंमें से हैं। दो दफे कांग्रेसके प्रेसीडेन्ट भी होचुके हैं और कई दफे कांग्रेसकीतरफसे इङ्गलैन्ड जाकर भारतवासियोंकी दीन दशापर व्याख्यान देकर वहांके बड़े २ लोगोंको रुलाचुके है। आप गवर्नमेन्टकी व्यवस्थापक सभाके आनरेबिल मेम्बर हैं। रिपनकालिज कलकत्ताके खोलनेमें भी आपने बहुत कुछ उद्योग किया था सफल जीवन ऐसे महानुभावोंका !

सुरेंद्रमोहन ठाकुर (राजा, सर सुरेंद्रमोहन ठाकुर)—आप हरि-कुमार ठाकुरके पुत्र हैं, महाराजा जतेंद्रमोहन ठाकुर आपके ज्येष्ठ भ्राता हैं। राजा सुरेंद्रमोहनने संगीतविद्याके उद्धारके लिये बहुत कुछ प्रयत्न कियाहै, कितनेही ग्रंथ उक्त विषयमें रचे हैं और दो म्युजिक स्कूल (गान विद्यालय)

ने खर्चसे सर्वसाधारणके हितार्थ स्थापन किये हैं। कई बाजे भी आपने नये बनाये हैं। संस्कृत, हिंदी, बंगला तथा अंग्रेजी के आप पूर्ण विद्वान हैं और भिन्न२ विषयोंपर प्रायः १०० पुस्तकोंके रचयिता हैं। मृदंग मंजरी, हारमोनियम सूत्र, भरतनाट्यरहस्य, मुक्तावली नाटक (बंगला).और मालविकाग्नि मित्र नाटकका बंगानुवाद इत्यादि आपहीके विरचित हैं। निज पूर्वजोंके धर्म पर आरूढ़ होकर आप बड़े उदारचित्त, दानी तथा देशहितैषी हैं। बृटिश गवर्नमेंटने आपकी काररवाइयों पर प्रसन्न होकर नाइट (Knight) सी. आई. ई. तथा राजा बहादुरकी असाधारण उपाधियें आपको प्रदानकी हैं।

फिलेडेल्फियाके विश्वविद्यालयने आपको डाक्टर आफ् म्युजिककी उपाधि दीहै जिसको ब्रटिश गवर्नमेन्टने भी स्वीकार कियाहै। नैपाल दर्बारसे आपने सन्मानसहित सङ्गीत-शिल्पविद्यासागर तथा भारत सङ्गीत नैयायकके खिताब प्राप्त कियेहैं।

सङ्गीतशास्त्रमें आज दिन आप सरीखा कोई दूसरा नहीं है और शिल्पशास्त्रमें भी पूर्ण विज्ञता आपको प्राप्तहै। इसी कारण इटेली, आस्ट्रिया, सैक्सनी, वेंर्टम्बर्ग, बेल्जियम, डेन्मार्क, स्वीडेन, फ्रांस, मांटीनीगरो, हवाईनद्वीप, पुर्तगाल, हालैंड, ईरान, स्यामद्वीप, चीन तथा बोलीवियाके राजा महाराजाओंने भी आपको उपाधियें तथा पदक सन्मानार्थ प्रदानकियेहैं। यूरूप, अमेरिका,अफरीका, आस्ट्रेलिया तथा एशियाकी अनेक बड़ी२सभाओंके आप प्रधान अथवा सभासदभीहैं। बंगालके आठ जिलोंमें आपकी बड़ी भारी जिमींदारी है, पलासीकी रणभूमि तथा हिन्दुओंका तीर्थ गंगासागर आपहीकी ज़मींदारीमें हैं। आप कलकत्ता आदि देशविद्यालयोंके भी सभासदहैं और कलकत्तेमें आनरेरी मैजिस्ट्रेट, मैजिस्ट्रेट आफ् पुलिस तथा जस्टिस आफ् पीसके पद पाये हुयेहैं। आप स. ई. १८४० में जन्मे, आपके ज्येष्ठ पुत्र कुंवर प्रमोदकुमार ठाकुरहैं।

सुरेशचंद्र विस्वास लफ़्टिनेन्ट—एक बंगाली कायस्थके घर स. ई. १८६१ की साल जिला नदियामें जन्मे। कुछ बडे होकर घरसे अप्रसन्न होकर निकलगये और ईसाई होकर बर्म्मा तथा मदरासमें आजीवकाकी तलाशमें घूमते फिरे। कुछदिनों बाद एक जहाजपर नौकरी करके इङ्गलैंडको चले गये और वहां पहुंचकर कबाड़की दुकान की। इङ्गलैंडसे जर्मनीको गये और वहां सिंहालयमें नौकरीकरली तथा एक जर्मन लेडीसे विवाह करलिया। स. ई-१८८५ में जर्मनीसे मैक्सीको (अमेरिका) को पधारे और वहांसे ब्राजिलमें

जाकर बादशाही फौजमें भरतीहोगये। स. ई. १८९३ में आपने थारीकी लड़ाईमें बड़ी वीरताके कामकिये और लेफिटनेन्टके पदपर तरक्कीपाई। जब आप रंगून (बर्म्मा) मेंथे तौ एक जलते मकानमेंसे एक लड़कीको निकाल आपने निज वीरताका परिचय दियाथा।

आपही एक ऐसे भारतवासी हैं जिन्होंने दूसरी विलायतकी फौजमें ऐसा उच्च पद पाकर यूरूप तथा अमेरिका वासियों पर हुकूमत कीहै। स. ई. १९०३ में विद्यमानहैं।

सुरेश्वराचार्य–देखो मण्डन मिश्र।

सुलेमान (Solomon)–इसराईल जातिके पहिले बादशाह हज़रत दाऊद इनके बाप थे। निज पिताके बाद स. ई० से १०१५ वर्ष पूर्व तख्तपर बैठे यह बड़े वीर तथा चतुर थे, इसराईल जातिकी उन्नति इनके समयमें बहुत कुछ हुई। इनकी बनाई कहावतें तथा गीत प्रसिद्ध हैं देव तथा परी इनके वशमें थीं राजधानी इनकी जुरूसलममें थी। शहिर बैतुल मुकद्दस इन्हींके समयमें बसा या गया। स. ई. से १०३३ वर्ष पहिले जन्मे, स. ई. से ९७५ वर्ष पहिले मरे।

सुश्रुत (आयुर्वेदीय सुश्रुत संहिताके रचयिता)–धन्वन्तरि प्रणीत आयुर्वेदके आश्रय पर इन्होंने अपने नामकी संहिता रची जो सर्व क्रियाओंकी यथोचित प्रकाशक, सर्व मान्य और प्रामाणिक है। चरक, सुश्रुत तथा वाग्भट्ट ऋषियोंकी बनाई संहितायें बृहत्रयी कहिलाती हैं और वैद्यक ग्रंथोंमें सबसे प्राचीन हैं। इस बातके प्रमाण मिलते हैं कि चरक संहिताके पीछे सुश्रुत संहिता बनी। सुश्रुत संहिताके प्रथम टीकाकार जैय्यट उपाध्याय विसं. की १२ वीं शताब्दीमें हुये। बाबू रमेशचंद्र दत्त सी. यस. ने स्वरचित प्राचीन भारतके इतिहासमें निर्णय किया है कि सुश्रुत स. ई. की छठी शताब्दीमें हुये।

सूत–(उग्रश्रवासूत)–व्यास शिष्यलोमहर्षण इनके बापथे। इन्होंने व्यासकृत पुराण संहितामें अपने प्रश्नोत्तर मिलाकर १८ पुराण पृथक् २ रचे (देखो व्यास महर्षि)। यह नैमषारण्यमें रहकर पुराणोंकी कथा बाँचा करतेथे। एक दफ़े बलरामजी नैमषारण्यमें गये, सबऋषि उनको देख उठखड़े हुये लेकिन सूतजी नहीं उठे निदान बलरामजीने क्रोधमें आकर उनको वहीं वध किया (स्कंध पु. सेतुबंधखण्ड १९ अध्याय)। पद्मपु० सृष्टिखण्ड० १ अध्यायमें लिखाहै कि जब उग्रश्रवासूत निजपिता लोमहर्षणकी आज्ञानुसार नैमिषारण्यमें ऋषियोंके धर्म विषयक संशय मिटाने गये तौ ऋषियोंने उनसे पुराणकी कथा पूंछी। सूत यह सुन प्रसन्नहुये और कहने लगे कि " सूतका यही धर्म है कि देवता. ऋषि

र तेजस्वी राजाओंकी उत्पत्ति, यश, वंश आदिका वर्णन करे और उन गोंकी प्रशंसा करतारहे तथा इतिहास पुराण बाँचे क्योंकि वेद पढ़ने पढ़ानेका तको अधिकार नहीं है"। मनुस्मृति १० अध्यायमें लिखाहै कि क्षत्रियके रा ब्राह्मणीके गर्भसे जो पुत्र उत्पन्नहो वह सूत जातिका होताहै। नैमिषारण्य एक मंदिरमें बडे सिंहासनपर सूतजीकी गंद्दी अबतक है।

सूद्रक (मृच्छकटिकनाटकका कर्ता)—यह किसी देशका राजा था। . सं. की पहिली शताब्दीमें हुआ।

सूरदास (भाषाकवि)—बदायूनी इतिहासकार लिखताहै कि सूरदास बाप बाबा रामदास लखनऊसे आकर गऊ घाटपर, जो आगरेसे ९ कोस थुराकी सड़कपरहै,बसे थे। हिंदी, संस्कृत, फारसी तथा सङ्गीतशास्त्र सूरदा- सने अपने बापसे पढ़े थे।सूरदासके छः और भाई थे जो आगरेकी लड़ाईमें मारेग थे। भक्तमालके लेखानुसार यह सूरध्वज अथवा सारस्वत ब्राह्मणथे, परंतु नके रचेहष्टकूट पदोंकी प्रस्तावनासे ज्ञात होताहै कि यह कवि चंदवर्दाईके वंश होकर भाटथे। सूरदासजी जन्मांधथे भाषा कविता उत्तम करते थे और सङ्गी- शास्त्रके मरमोंको खूब समझतेथे। बादशाह अकबरने इनकी भरती अपने दर्बा- के नवरत्नोंमें कीथी।प्रसिद्ध संङ्गीतज्ञ तानसेनसे इनकी मैत्रीथी (देखोतानसेन) हुतदिनोंतक शाही दर्बारमें रहिनेके पीछे सूरदास ब्रजको चले आये और हाप्रभू वल्लभाचार्यके शिष्य हो विष्णुपद बना २ कर गातेहुये विचरनेलगे। दोंका गूढ आशय समझ लोग इनके पीछे फिर २ कर लिखनेलगे और इसतरह वालक्ष पदोंका सूरसागर नामक ग्रंथ बन गया। कविराजगंगने सूरसागरके षयमें लिखाहै कि–

चौ०–पदन प्रबंध सूरजननागर। बांध्योजनहुसेतु भवसागर।
बिनु प्रयास कलिकाल मंझारा। तेहि प्रसाद उतरत सब पारा॥

गो० विठ्ठलनाथजीने सूरदासकी गणना ब्रजके अष्टछापमें कीथी (देखो विठ्ठ- लनाथ)। यद्यपि सूरजी चक्षुहीनेथे लेकिन उनके ज्ञानचक्षु खुले हुयेथे। एकदफे दर्बार अकबरीमें बैठे हुये सूरजी अपनी आदतके विरुद्ध हँस पड़े बादशाहने हँसनेका कारण पूंछा। उत्तरमें सूरजीने कहा कि इसवक्त भातका अटुका उतारते हुये जगन्नाथजीके रसोइयेकी धोती खुलगई जिस्से थोड़ी देरके लिये वह अकथनीय कठिनाईमें पड़गया, यह देख मुझे हँसी आगई। यह सुन बादशाहने हुक्म दियाकि पुरी (उड़ीसा) के पचेंनवीससे दर्याफ्त किया जाय कि जगन्नाथजीके मंदिरमें इसवक्त क्या हुआ। पचेंनवीसने ठीक सूरदासजी की कही हुई रसोइयेंकी दुर्घटनालिखी। सूरदास कभी हँसते न थे और जब

कभी हँसतेथे तौ उसमें कुछ रहस्य होताथा इसीलिये हुक्म था कि उनके हँसनेकी खबर बादशाह अकबरको तुरंतकी जायाकरे। कहते हैं कि एक दिन बादशाह अकबरने अपनी किसी दासीके चाबुकमारा, दासी शिर झुकाय, हाथजोड़, चुप खड़ी होरही, सूरदासजी ठीक उसीवक्त अपने मकानपर बैठे हुये खिलखिलाकर हँसपड़े। पचैनवीस द्वारा जब यह खबर बादशाह अकबरको हुई तो आग्रह पूर्वक हँसनेका कारण सूरदाससे पूंछागया। सुरजीने कहा कि एकदफे श्रीकृष्णचंद्रने रसवादमें अपनी किसीदासीके फूलमाराथा, जिससे उसने ७ दिनतक मान किया था, आज उसीदासीके आपने चाबुक मारा परंतु वह कुछभी मान नकरसकी, यह देख मुझको हँसी आई। अकबरने कहा यह बात कैसे सच्ची जान पड़े। सूरजीने उत्तर दिया कि अपनी सबदासियोंको क्रमशः मेरे सामने होकर निकालिये, जो दासी सामने आतीथी सूरजी उसको सुनाकर कहतेथे कि "सुनरी सखी हेरत शाहजहाँ" और तौ सब सुनती हुई चलीगई लेकिन जब चाबुकसे मारी हुई दासी निकली तौ उसने रोकर कहाकि "उद्धव तुमतो यहां गोपाल कहाँ" यह सुनतेही सूरदासको मूर्च्छा आगई और वह दासी पछाड़खाकर गिरी और मरगई। सूरदासके बनाये पद ज्ञान तथा भक्तिसे भरपूरहैं। स. ई. १४८३ में जन्मे और स. ई. १५६३ में गोकुल (मथुरा) में परमधामको सिधारे। रीवाँनरेश महाराजा रघुराजजू सिंहदेव इनकी कविताके विषयमें लिखते हैं–

क० कविकुलकोक कंजपाइके किरिनकाव्य,विकसे चिनोदित हैनेरे और दूरके।
सूखिगो अज्ञान पंक मंद भो मयंक मोह, विषय विकार अन्धकार मिटेकूरके॥
हरिकी विमुखताई रजनी पराई गई, मूकभये कुकवि उलूक रसझूकके।
छायो तेज पुहुमिमें रघुराज रूरहारि,जन जीव मूरसूर उदय होत सूरके॥१॥

सूरदास मदन मोहन (मदन मोहन सूर)–यह संडीलेके रहने वाले कायस्थ बहिरायचमें बादशाह अकबरकी तरफ़से पदाधिकारीथे। इन्होंने एक दफ़े मालगुजारीका ३१३००० रु० साधु सेवामें लगादिया और आप भयके मारे भागगये और बादशाह अकबरके पास यह पद लिखकर भेज दिया–

पद–तीनलाख तेरहं हजार सबसाधुन मिलगटके।
सूरदास मदन मोहन आधीरातमें सटके।

अकबरने ढुंढवाकर इनको ब्रजवास करनेके लिये भेजदिया। यह अन्धे नहीं थे,भाषा कबिता अच्छी करतेथे, जिन पदोंमें सूरदास मदन मोहनकी छापहै वह इन्हींके बनाये हुयेहैं।

सूर (बिल्बमंगलसूर)–यह दक्षिण देशस्थ ब्राह्मण, महाप्रभु वल्लभाचार्यके दीक्षा गुरुथे। यह बड़े पंडित थे। "कृष्णकर्णामृतं" तथा "गोविन्द माध-

थ" आदि संस्कृत ग्रंथ इनके रचेहुयेहैं। भक्तमालमें लिखाहै कि यह चिन्तामणि वेश्यापर आसक्तथे, एक दिन अर्द्धरात्रिके समय गोस्वामी तुलशीदासकीसी दुर्घटनायें झेलकर नदीपार उससे मिलनेको गये लेकिन उससे तिरस्कृतहो वैरागीबन वृंदावन चले आये। रास्तेमें पुनः किसी सुन्दरीको देख मोहित हुये और आंखोंको सब उपाधियोंका कारण समझ सुईयें चुभोकर फोड़लिया। बहुत दिनों वृंदावनमें रहनेके उपरांत इनका देहांत हुआ।

सूर्य्य (सूर्यवंशीनरेशोंके मूल पुरुष)–यह कश्यपजीके पुत्र तथा मरीचिके पौत्रथे। इनके पुत्र वैवस्वत मनुने राज्यस्थापन किया और इनके पौत्र इक्ष्वाकुने शहर अयोध्याको बसाकर अपनी राजधानी बनाया. महाराज रामचंद्र इनकी ३८वीं पीढीमें हुये। सम्भवतः सूर्य्य सिद्धांत नामक ज्योतिष ग्रंथ जिसके रचयिताका कुछ पतानहीं लगता इन्हींका बनाया हुआहो। वाल्मीकीय रामायणमें लेखहै कि रामचंद्रके विवाहके समय राजपुरोहित महर्षिवशिष्ठने निम्नस्थ क्रमसे दशरथजीका गोत्रोच्चारण कियाथाः–

ब्रह्मा, मरीचि, कश्यप, सूर्य्य, वैवस्वत मनु, इक्ष्वाकु, कुक्षि, विकुक्षि, बाण, अनरण्य, पृथु, त्रिशंकु, धुन्धुमार, युवनाश्व,मान्धाता, सुसन्धि, ध्रुवसन्धि, भरत, असित, सगर, असमंजस, अंशुमान, दिलीप, भागीरथ, ककुत्स्थ, रघु, कल्माषपाद, शंखरा, सुदर्शन, अग्निवर्ण, शीघ्रग, मरु, प्रशुश्रुक, अम्बरीष, नहुष, ययाति, नाभाग, अज, दशरथ और रामचंद्र।

भागवत तथा शि.पु.में दिया हुआ वंशक्रम उपरोक्त वंश क्रमसे अनेक अंशोंमें विरुद्ध है लेकिन सूर्यवंशके विषयमें वाल्मीकीय रामायणके लेख अधिक विश्वासनीयहैं। शि. पु. के लेखानुसार महाराज रामचंद्रके बाद ५४ राजाओंने और भागवतके लेखानुसार ५८ राजाओंने राज्य किया। सुमन्त सूर्य्य वंशका अन्तिम राजा हुआ।

सेनापति (भाषाकवि) इन्होंने संन्यास धारणकरके सब उम्र वृन्दावनमें बिताई। काव्यकल्पद्रुम तथा षट ऋतुवर्णन इनके रचे ग्रंथ अत्युत्तम हैं शि.सं. १६८० में विद्यमानथे।

सेनभक्त–यह जातिके नाई थे, गुरूरामानन्दके शिष्य थे रीवाँनरेशके यहाँ नापितकर्म करतेथे जब राजाको इनका महत्व विदित हुआ तो वह इनका शिष्य होगया। इनका एक पन्थ प्रचलित है और इनकी कविता सिक्खोंके ग्रंथ साहबमें संगृहीत है।

सेवाजी (मरहटा राज्यके संस्थापक)—इनके बाप शाहजी भोंसले महाराना चित्तौड़के वंशमें थे और बीजापुरके नवाबके यहां किसी ऊंचे पदपर नौकरथे। स. ई. १६२७ में जीजीबाईके गर्भसे सिवाजीका जन्म हुआथा, इनके जन्मसे ३ वर्ष पीछे शाहजीने तुकाबाई नामक मरहटिनसे विवाह किया और जीजीबाई तथा सेवाजीको पूनाकी जागीरपर भेजदिया और दादाजी करण देव नामक एक कार्य्यदक्ष तथा स्वामिभक्त वृद्ध ब्राह्मणको इनकी रखवाली तथा जागीरके प्रबन्धके लिये साथकर दिया। दादाजीने पूनामें पहुंच एक महिल बनवाया और सेवाजीको युद्ध विद्याकी शिक्षादी। मावल पर्वतवासियोंपर जो बड़े उद्योगी, कामकाजी, साहसी, परिश्रमी तथा लड़ाकू होतेथे, सेवाजीका अत्यंत विश्वास और स्नेहथा।

मावलियोंके लड़कोंके साथ शिकार करते हुये दूर २ घूमकर सेवाजी पहाड़ियों तथा झाड़ियोंकी राहघाटसे खूब परचित होगयेथे। धीरे २ सिवाजीके साथियोंका जमाव बढ़ता गया, जिनकी एक छोटीसी पलटन बनाकर स. ई. १६४६ में मोर प्रदेशस्थ तोरनका किला जो एक अगम्य विकटपहाड़ परथा उन्होंने जीत लिया और इसी किलेकी मरम्मत करवाते वक्त बहुतसा गड़ा हुआ धनभी पाया। स. ई. १६४७ में दादाजीने मरते समय निम्नस्थ उपदेश शिवाजीको किये:-

शैय्यापरसे उठकर जगदीश्वरका स्मरण किया करना, सुख दुःखमें एक साथ रहिना, क्रोध और मोहमें आकर पक्षपात न करना, एक पक्षकी बात सुनकर न्याय न करना, सत्यको कभी न छोड़ना, अपने विभवपर अभिमान न करना, विचार करते समय हठ न करना, खुशामादियोंकी बातोंमें न आना, भोजन तथा वस्त्रमें आडम्बर न करना, यथार्थ वादी पंडितोंकी खातिर करना, नशा न खाना परस्त्रीगमन न करना, आहार तथा निद्राको यथाशक्ति घटाना, अपना काम दूसरों पर न छोड़ना, मातहितौंको एक दम नौकरीसे न छुड़ाना जहांतक होसके क्षमा करना, नौकरोंके रुतबेके भेदसे वर्ताव करना, आपत्तिके समय भी धर्मविरुद्ध आचरण न करना और न शिष्टाचारसे बाहिर होना, और विचार पूरा होजाने से पहिले गुप्त रखना।

स. ई. १६४८ में सिवाजीने रामगढ़का किला बनवाया और बीजापुरसर्कारकी कई गढ़ियें छीनकर तथा २० लाख रु. लूटकर अपना अधिकार बढ़ाया। यह देख घुरपुरे नामक जागीरदारकी सहायतासे बीजापुरसर्कारने शाहजीको कैद कर लिया। इस हालतमें शाहजीने निजपुत्र सेवाजीको लिखा कि "घुरपुरेने मेरे साथ विश्वासघात किया है, तुम्हारी सच्चीवीरता इसीमें है

कि इस दुष्टसे तुम अपने पिताका बदलालो" । जबतक शाहजी कैदमें रहे तब तक सेवाजी शान्तिसे रहे परंतु बादको उन्होंने फिर अपनी कार्रवाई शुरूकरदी। लाचार होकर बीजापुर सर्कारने सेनापति अफ़ज़लखाँको सेवाजीके दमनकर्णार्थ भेजा। सेवाजीने मीठी २ बातें बनाकर अफ़ज़लखाँसे एकान्तमें मुलाक़ातकी ठहिराई,जब सेवाजी निकट पहुंचे तो अफ़ज़लखाँने उनकी गर्दनपर तलवार चलाई परंतु वे कपड़ोंके भीतर फौलादी कवच पहिने हुयेथे इसलिये कुछ असर न हुआ और बड़ी फुर्तीके साथ उन्होंने बघनखेसे अफ़ज़लकी आँतें खाचडालीं। होहो २ मचगई पर सेवाजीके चुने हुये सिपाही झाडियोंमेंसे निकल अफ़जलकी फौजपर टूटपड़े और पलक मारतेमें उसको भगादिया। पश्चात सेवाजीने कोकन प्रदेशका अधिकांश तथा बीजापुर सर्कारके अभेद्यदुर्ग वनैलागढको जीतकर अपने अपूर्व कौशल तथा असीमसाहसका परिचय दिया। बीजापुरके नवाब अली आदिलशाहने यह देख स्वयम् सेवाजीके दमन करनेके लिये चढ़ाईकी। लड़ाई दो वर्षतकरही और अन्तिम लाभका भाग सेवाजीकी तरफरहा। इन्हीं दिनों अवसर पाकर सेवाजी अपने पिताके शत्रु घुरपुरेपर चढधाये और उसको सपरिवार मारकर नष्टकरदिया। शाहजी यह समाचार पाय निजपुत्रको देखनेके लिये उत्कंठित हो चल पड़े। पिताका आगमन सुन सेवाजी १२ मीलतक अगवानी लेने नङ्गे पैरोंगये, पिताके देखते ही पृथ्वीपरसाष्टांग दंडवत कर्णार्थ लेट गये दोनों ओर प्रेमाश्रु बहिने लगे,कंठगद्गदहोगये, पिताने सपूतको गलेसे लगा लिया, पुत्रने बड़े आगत स्वागतसे पिताको लाकर गद्दीपर बिठलाया और आप उनकी जूती उठाकर खड़ेरहे। कुछ दिनबाद अत्यंत प्रसन्नतापूर्वक शाहजी अपने स्थानको गये। इस समय सेवाजीके पास १३० मीललम्बा,१०० मीलचौड़ा राज्य था और सेनामें ५०हजार पैदल तथा७हजार सवारथे। कुछ दिनबाद नवाब बीजापुरने अपने रणकुशल हवशी सेनापतिको सेवाजीके दमन करनेके लिये भेजा लेकिन सेवाजीकी चतुराईके आगे उसकी वीरता कुछ काम नहीं करसकी। इन्हीं दिनों औरंगजेब अपने बूढ़े बापको कैद करके तख्तपर बैठा, सेवाजीने देशकालके विचारसे दर्बार बीजापुरसे सुलह करली और मुग़लोंके राज्यपर हाथफेंकना आरंभकिया। औरंगजेबने दक्षिणके सूबेदार सायस्ताखाँको मुकाबलेके लिये भेजा।सायस्ताखाँने प्रबल दलके साथ पहुंचतेही पूनापर दखलकर लिया और जिसमहिलमें सेवाजीकी बाल्यावस्था व्यतीत हुईथी उसमें रहिनेलगा और बड़ी सावधानीके साथ महिल तथा नगरकी रक्षामें सेना नियत करके यह घोषणा प्रचारकी कि आज्ञा विना कोई हथियारबंद मरहटा नगरमें न आवे, सेवाजी एक दिन अंधेरी रातमें आधीरातके समय २५ सिपाहियों सहित एक बरातके साथ नगरमें घुसगये और मकानमें घुसकर सायस्ताखाँके सब साथियोंका काम तमाम

कर।सिंहगढ़को लौट आये, केवल सायश्ताखाँ खिड़कीकी राह भागबचा। प्रात-होतेही मुगलोंकी सेनाने सिंहगढ़पर चढ़ाईकी, सेवाजीने किलेपरसे तोपके गोले वरसाये जिससे अधिकांश मुगलसैनिक मारेगये और बाकी भागगये सू. ई. १६६६ में औरंगजेबने धोकेसे सेवाजीको अपने दर्बारमें बुलाकर नजर बन्दकर लिया परंतु वह बड़ी चालाकीसे एकटोकरेमें बैठकर निकलगये और साधूके वेषमें अपनी राजधानीमें जा पहुंचे। स. ई. १६६८ में सेवाजीने शहिर सूरतको लूटा और अतुल विभव लेकर रायगढको लौट आये। इसी साल शाह-जीके देहांत होनेसे बंगलौर, अर्नी, तंज्योर, पोटोंनोवो जागीरमें पाये। फिर सेवाजीने राजाका खिताब धारण किया, अपने नामका सिक्का ढलवाया, शिवशक जारीकिया, सोनेका तुला चढाया और रायगढमें नारायणका एक बड़ाभारी मंदिर बनवाया। स.ई.१६७५ में गुजरात तथा करनाटक विजय किये और स.ई. १६७९ में औरंगजेबके मुकाबलेमें नवाबबीजापुरको मदद देकर कृष्णा तथा तुंगभद्राके बीचका मुल्क जिसको रायचूर दोआवा कहतेहैं पाया और दक्षि-णमें मैसोरतक सब देश जीतलिया। औरंगज़ेबको अफगानिस्तानके साथ विग्र-हमें लगा देख कोंकन प्रदेश तथा दोनों घाटोंपरभी शिवाजीने अपना पूरा अधि-कार जमालिया था। बीजापुर, गोलकंडा, खानदेश इत्यादिके सुलतानोंने परा-स्त होकर उनको चौथ देना स्वीकार किया था। औरंगजेबने भी बड़ी भारी जागीर तथा राजाका खिताब उनको दिया था। अंत समयतक उन्होंने मुगलोंके २७ और किले जीते। कहतेहैंकि-

दो०-औरंगा पछिताय मन, करतो जतन अनेक।
शिवा लेइगो दुर्ग सब, कोजाने निश एक।

स. ई. १६८० में शिवाजी ज्वरसे प्रीडित होकर परम धामको सिधारे, शत्रुओंको भी यह समाचार पाय दुःख हुआ, औरंगजेबने स्वयं कहा कि "यथार्थमें सेवाजी बड़ा वीर था, उसने मेरे मुकाबिलेमें एक स्वतंत्र राज्यस्थापन करके अपनी टेके रक्खी, मेरी फौज निरन्तर १९ वर्षतक लड़कर उसका कुछ न करसकी" सेवाजीकी विलक्षण राजनीति तथा अलौकिकवीरताने मुसल्मानोंके खूबही मान मर्दित कियेथे। "मिल्योरहै अरु ना मिलै,तासों कहा बिसाय" की उक्तिके अनुसार सेवाजी नित्य प्रति अपना अधिकार बढ़ातेथे और औरंगजेब कुछ कर सक न होकर उलटी उनकी खातिरकरताथा। माता पिताके देहांत होनेपर सेवाजी बालकोंकी तरह अधीर होगयेथे, प्रियपत्नी सईबाईके वियोगकाभी दुःख उनको उठाना पड़ाथा, कपूत सम्भाजीनेभी उनको दुःखही दियाथा परंतु वह बड़े वीर पुरुषथे अंत समय तक अपना काम दृढ़ता पूर्वक करते रहे। उनकी सेनाका प्रबन्ध प्रशंसनीयथा, प्रजागणको उनके राज्यमें सुख चैन था, शेर ब-

करी एक घाट पानी पीतेथे, धर्तीकी उपजमेंसे ३ भाग किसानको और दो भाग सर्कारको जातेथे, बड़े २ पदोंका अधिकारी ब्राह्मणोंहीको बनायाथा, नवरात्रिपर महिषमर्दिनी दुर्गाका पूजन बड़े समारोहसे करतेथे और विजय दशमीके दिन फौजकी हाजरीलेते तथा जहां कहीं चढ़ाई करनी होती उसी दिन करते। भूषण कविने महाराज सेवाजीके वृत्तांतमें शिवराज भूषण ग्रंथ रचकर बहुत कुछ पायाथा (देखो भूषण)। निम्नस्थ कवित्त शिवराज भूषणसे उद्धृत करतेहैं:-

क० दक्षिणजीत लियो दलकेबल पश्चिमजीतके चामर राख्यो।
रूपगुमान हरयो गुजरातको सूरतको रस चूसके चाख्यो।
पञ्जन पेल म्लेक्षमले भूषण सोई बच्यो जोदीन है भाष्यो।
सौरंगहै शिवराजबली जिन नौरंगमें रंग एक नराख्यो।

महाराजा सताराके यहां अबतक सेवाजीके भवानी नामक खड्गकी नित्य प्रति पूजा होतीहै।

सेल्युकस यह सिकंदर आजमका सेनापतिथा। सिकंदरके मरनेपर बाबुलकी सूबेदारी इसको मिलीथी। अपना राज्य सब तरहसे पुष्टकर लेनेके पीछे स्वाधीन होकर इसने यूनानियोंके ३४ शहिर बसाये। ८२ वर्षकी उम्रमें स. ई. से २८० वर्ष पूर्व वध कियागया।

सैमुअलजानसन(Samuel Johnson) इनके बाप लिचफील्ड (इङ्गलैंड) के रहनेवालेथे, पुस्तकें बेंचाकरतेथे। यह स.ई.१७२८ में आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटीमें पढ़ने लिये भरती हुये लेकिन निर्धनी होनेकेकारण स. ई. १७३१ में विना डिगरी प्राप्त किये.ही स्कूल छोड़नापड़ा। पिताके देहांत होजाने के पीछे ग्रंथ रचनाकी ओर इन्होंने ध्यान दिया जिससे प्रतिष्ठा और धनके भागी हुये। स. ई. १७५३ में इनका अंग्रेज़ी कोष छपा और स. ई. १७५९ में माताके देहांत हो जानेके पीछे इनकी प्रसिद्ध पुस्तक "रैसलाज" छपी। स. ई. १७६१ में इङ्गलैंडके बादशाह जार्ज ३ ने ३०० पौंड वार्षिककी पेन्शन इनको दी। स. ई. १७७३ में स्काटलैंडके पश्चिमी द्वीपोंकी यात्रा इन्होंने की और स. ई. १७७५ में आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटीने एल. एल. डी.'की उपाधि इनको प्रदानकी। स. ई १७७९ में इन्होंने अंग्रेजी कवीश्वरोंके जीवन चरित्रकी पुस्तक लिखना शुरू की लेकिन उसीसाल बहुत दिन बीमाररहिकर ७० वर्षकी उम्रमें शहिर लन्दनमें परलोकगामी हुये और वेस्टमिनिस्टर ऐवीमें दफनाये गये।

सैयदअली बिलग्रामी,नवाब इमादुल मुल्क-आपके पूर्वज बिलग्राम जिला हरदोईके रहिनेवालेथे। स.ई.१८६६में प्रेजीडेन्सी कालिज कलकत्तेसे आपने बी.ए.

तथा ब्री. यल. की परीक्षायें पास कीं। अंग्रेज़ी, फारसी, अरबी, तुरकी, लैटिन, ग्रीक, फरासीसी, संस्कृत इत्यादि १७ भाषाओंके आप विद्वानहैं। फैजीके बाद कोई दूसरा मुसल्मान आपके समान संस्कृतका ज्ञाता नहीं हुआ। हैदराबाद दक्षिणके नवाब निजामके प्रायवेटसेक्रेटरीआप बहुत दिनोंतकरहे। पश्चात् उक्त राज्यहीमें शिक्षाविभागकेडैरेक्टर तथा अन्यान्य उच्च पदोंपर रहे। आपके पुस्तकालयमें ४२००० रु. की पुस्तकें हैं। आप दाढ़ी नहीं रखतेहैं और कपड़े पगड़ी इत्यादि बंगालियोंकेसे पहिनतेहैं। मिलनसार, सहनशील तथा परिश्रमी पुरुषहैं। फरासीसी भाषासे अरबीमें आपने एक बहुत बड़ी पुस्तकका अनुवाद करके उसका नाम "तमद्दुने अरब" रक्खाहै। जियालोजीकेल सुसाइटी, रायलस्कूल आफ़ सायन्स लण्डन, रायल एशियाटिक सुसाइटी आफ़ ग्रेट ब्रिटेन और आयर्लैंड, नार्थ आफ़ इङ्गलैंड इन्सटीट्युशन आफ़ इंजिनियर्स, एशियाटिक सुसाइटी बंगाल व बम्बई, यूनीवर्सिटी कलकत्ता व बम्बई, और वायसरायकी व्यवस्थापक सभाके आप मेम्बरहैं। "तमद्दुने अरब" में अरब लोगोंकी अनेक विद्याओं तथा रहिन सहिन, ढंगचाल इत्यादिका वर्णन है।

सय्यद अहिमदखाँ (आनेरेबिलडाक्टरसरसैय्यद अहिमदखाँ,के०सी०यस० आई०, यल० यल० डी०)-इनके बाप मुहम्मद नकीखाँ दिल्लीके मुगल सम्राट बहादुरशाहके यहां वज़ीर थे। सैय्यद अहिमदको प्रथम शिक्षा निजमातासे मिलीथी। २० वर्षकी उम्रमें सैय्यद अहिमद सर्कार अंग्रेजी की चाकरीमें मुहक्मा फौजदारीके सरिस्तेदार हुये और तीन वर्षकेभीतरही कमिश्नरीके नायब सरिश्तेदार होकर आगरेको बदल आये। पश्चात बढतेश्डिपुटीकलेक्टर तथा सब जज हुये और दिल्ली, रोहतक तथा बिजनौरमें रहे और पेन्शन लेनेकेबाद अलीगढ़में बस रहे। स.ई. १८४७ में आपने प्रसिद्ध फार्सी पुस्तक"आसारुस्सनादीद" छपवाई जिसका अनुवाद फ्रेंच भाषामेंभी हुआ, रायल एशियाटिक सोसाइटीने इसी पुस्तक रचनेके उपलक्षमें आपको अपना मेम्बर नियत किया। सन् ५७ के गदरमें आपने बृटिश गवर्नमेंटको सहायतादी जिसके बदलेमें उक्त गवर्नमेंटने आपको तथा आपके ज्येष्ठ पुत्रको जिन्दगी भरके लिये २०० रु. मासिककी पेन्शनदी। स.ई. १८५८ में आपनेगदरके वृत्तांतमें एक पुस्तक रची जिसका अंग्रेज़ी अनुवाद सर आकलैंड कालविनने किया। पश्चात् "भारतके राज्यभक्त मुसल्मान" नामक पुस्तक आपने बनाई। इन दोनों पुस्तकोंसे बृटिश गवर्नमेंटका शक जो मुसल्मानोंकी तरफ़से था दूरहोगया। स. ई. १८६९ में सैय्यद साहब इङ्गलैंडकी यात्राको गये और उसी अवसरपर एडिन्बरोविश्व विद्यालयने आपको यल० यल० डी० की उपाधि दी। आप दो दफे लेजिस लेटिवकौंसिलके मेम्बरभी रहेथे। स०ई. १८८२ में आप एजूकेशनक

कमीशनके मेम्बर नियत किये गये जिसके अंतमें प्रसन्न होकर बृटिश गवर्नमें-टने आपको के.सी.यस.आई.की उपाधिदी। मुहमडन ऐङ्गलो ओरियन्टेल कालिज अलीगढ़ आपहीका स्थापन किया हुआहै। इससूबेके लफ्टिनेन्ट गवर्नरोंने कित-नीही दफे बड़े बढ़िया शब्दोंमें आपकी प्रशंसाकीथी। आपने मुसलमानोंकी धर्म पुस्तक कुरानकीभी तफ्सीर(टीका) कीथी जिसके कारण धर्मको विश्वास मूली क माननेवाले मुसल्मान लोग कृतघ्नी होकर आपके वैरी बनगयेथे । स. ई. १८१७ में दिल्लीमें जन्मे, स. ई. १९०० में अलीगढ़में मरे।

सैय्याजीराव ३ (महाराजा सरसैय्याजीराव गैकवाड़, सेनाखासखेल, शमशेरबहादुर, जी. सी. यस. आई. बरोडानरेश)– जब स. ई. १८७५ में महाराजा मल्हार-राव गैकवाड़ बरोडाकी गद्दीसे उतारे गये तो उनके स्वर्गवासी ज्येष्ठ भ्राता खँडेरावकी विधवारानी जमना बाईने बृटिश गवर्नमेंटकी आज्ञासे गायकवाड़के कुटुम्बी काशीरावके पुत्र गोपालरावको खान्देशके एक ग्रामसे बुलाकर गोदलिया और सैय्याजीराव नामसे गद्दीपर बिठलाया। आपकी बाल्यावस्थामें राज्यके दीवान राजा सरटी. माधवरावने बड़ी योग्यतासे राज्य प्रबंधकिया और बालक महाराजाकी शिक्षाका राजेश्वरी इन्तजाम किया। स. ई. १८८० में महारानी तञ्जोरकी भतीजीसे आपकी शादी हुई और एकही वर्ष पीछे राज्यका पूरा अधिकार आपको मिल गया। स. ई. १८८५ में महारानीजीका १ पुत्री छो-ड़कर देहांत होगया निदान दूसरी शादी करना पड़ी। स. ई. १८८७ में महा-राजा साहब अस्वस्थ होनेके कारण इङ्गलैंड गये और राजराजेश्वरीमाता विक्टोरियासे मिलकर जी.सी.यस.आई.की उपाधि पाई। इसके सिवाय कईदफे और भी आप इङ्गलैंड हो आयेहैं। श्रीमान अंग्रेजीके अच्छे विद्वान हैं और राज्यके सुधारमें लवलीनरहते हैं। राज्यकी प्रजा आपके समयमें सुखचैनसेहै, न्याय होताहै शिक्षा विभागका प्रबंध अत्युत्तम हुआ है, पानी के नल, शफाखाने, कालिज और न्यायालय जाबजा बनाये गये हैं। महाराज गैकवाड़की सलामी तोपके २१ फैरोंकी है; राज्यका विस्तार ८५७०वर्ग मीलहै; वार्षिक आय१करोड़५३लाख रु. की है; फौजमें३५६३ सवार, ४९८८ पैदल और ३८ तोपेहैं। आपके वक्तमें बरोडा राज्यकी पैमायश हुईहै, प्रजापरसे अनेक दुखदाईकर उठाये गयेहैं, जाबता दीवानी व फौजदारी रियासतके लिये रचा गया है, पुलिस तथा सेनाकी हालतमें अत्यन्त सुधार हुआ है, सहस्रों पाठशालाय जारी हुई हैं, शिल्प विद्याका एक कालिज बरो-डा राजधानीमें खोलागयाहै, नीच वर्णके लोगोंकी शिक्षाकाभी प्रबन्ध हुआहै,

सङ्गीत तथा कृषी विद्याकी शिक्षाके लियेभी स्कूल जारी हुये हैं, पुत्री तथा ... पाठशालायेंभी स्थापन की गईहैं जिनमें पढने लिखनेके सिवाय सीना, पिरो... तथा भोजनबनानाभी सिखाया जाता है । राजधानी बरोडामें श्रीमानने ... लाख रू० के खर्चसे लक्ष्मीविलास नामक एक उत्तम भवन बनवायाहै ... वायसराय लार्ड डफरनका कथनहै कि "सैय्याजीसे अधिक प्रजापालक नरे... कोई दूसरा नहीं होसकताहै." राजधानी बरोडामें "नजरबाग महिल" देख... योग्यहै, वहांपर महाराजा गैकवाड़की ३० लाख पौंड कीमतकी जवाहिरा... रक्खी हुई है जिस्मेंसे १ हारमें एकहीरा कोहनूरसेभी बड़ालगाहै । हैदरा... बादके सिवाय अन्य सब राज्योंसे बरोडा राज्यकी आमदनी अधिकहै । बृटि... गवर्नमेन्टके लिये कर नहीं देना पड़ताहै । गवर्नर बम्बईके आधीन न होक... यह रियासत वायसराय हिंदके आधीनहै ।

सोमदेवभट्ट (कथा सरितसागरके रचयिता)–यह कश्मी... के रहनेवाले ब्राह्मणथे । जब स. ई. ११२५ में कश्मीरकी रानी सूर्य्यवतीक... पुत्र मरगया तौ सोमदेवने शोकग्रसितरानीका चित्त बहिलानेके लिये "कथा... सरित सागर" नामक ग्रंथ १८ पर्व अथवा१२४अध्यायमें रचा । इस ग्रंथम प्राची... कथानकोंका समूह संक्षेपसे वर्णितहै ।

सोलन(Solon)यूनानके सप्त चतुर पुरुषाम इनकी गणनाहैं। यह अफ... लातूनहकीमके नानाथे इनके पूर्वजोंने किसी समयमें यूनानकी बादशाही कीथी... देश विदेश इन्होंने बहुत भ्रमण कियाथा । एकदफे जब यह देशाटनसे स्वदेश... को लौटे तौ इन्होंने यूनानियोंको आपसके झगड़ेमें तत्पर पाया निदान खूब सोच... विचारकर इन्होंने उनके लिये एक धर्मशास्त्र बना दिया जिसपर चलनेसे परस्प... रके झगड़े मिटगये । यूनानमें अन्याई राजाका राज्यथा इन्होंने उसकोभी बहुत... कुछ समझाया और कहाकि अधिक अन्याय करना बुराहै । यूनानियोंने प्रसन्न... होकर धर्म शास्त्रीकी उपाधि सोलनको दीथी । स. ई. से ५५९ वर्ष पूर्व ७९ व... की उम्रमें मरे ।

संग्रामसिंहराना–इनका नाम साङ्गाराना प्रसिद्धहै सो देखो ।

संयुक्तासती–देखो संयोगता

संयोगता (रायपिथौराकी सतीरानी)–यह कन्नौजके महाराजा... जयचंदकी बेटी अत्यंत रूपवती तथा गुणवतीथी । पृथ्वीराज और जयचंदमें... बहुत दिनोंसे द्वेष चला आता था, जब पृथ्वीराजने अश्वमेध यज्ञकिया तौ...

जयचंदने राजसूय यज्ञकी तय्यारीकी। इस यज्ञमें भारतके सब राजे महाराजे आये लेकिन दिल्लीनरेश पृथ्वीराज और उनके बहिनोई चित्तौड़के रानासमर्सी नहीं आये। जयचंदने और राजाओंकी नज़रमें तुच्छकरनेके लिये उन दोनों की सुवर्ण मूर्तियें बनवाकर एकको ड्योढ़ीपर और दूसरीको बर्तन मांजनेकी जगह खड़ाकरवा दिया। यज्ञके अंतमें जयचंदने राजकुमारी संयोगताका स्वयंवर रचदिया, जब संयोगता जयमाला लेकर निकली तौ उसने चारों तरफ़ देख भालकर पृथ्वीराजकी सुवर्ण मूर्तिमें माला डालदी। जयचंद यह देख खड्ग लेकर कन्याकी गरदन काटनेको उपस्थित होगया। पृथ्वीराज पहिलेहीसे चुनी हुई फौजके साथ कन्नौजमें आछिपाथा, खबर पातेही सभामें घुस पड़ा जयचंदके हाथमेंसे खड्गछीन लिया, किसीको उसका सामना करनेका हावनहीं पड़ा और सबोंके देखते हुये वह अपनी प्राणवल्लभाको घोड़ेपर लादकर दिल्ली की ओर चल पड़ा। रास्तेमें ५ दिन बराबर जयचंद और पृथ्वीराज की फौजों में घोर युद्ध हुआ जिसमें दोनों तरफ़के बड़े २ सुभट शूरवीर काम आये लेकिन दम्पति कुशलसे दिल्ली पहुंचगये। जबसे पृथ्वीराज संयोगतासहित दिल्ली आया उसे राजकाजकी ख़बर नरही और अहर्निश रङ्ग महिलमें बिताने लगा। जयचंद इस अपमानको बिलकुल नहीं सहिसकाथा निदान सहायता देनेके वायदेपर उसने शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरीको काबुलसे पृथ्वीराजपर चढ़ाई करनेके लिये बुलाया। संयोगताको लाये एक वर्षही बीतने पायाथा कि राजदूतोंने शहाबुद्दीनके ससैन चढ़ि आनेकी खबरदी यह सुन महारानी संयोगता बोली "प्रिये उठिये, क्षत्री धर्म निवाहिये, यदि प्राण प्यारे आप रणशाई हुये तौ मैं आपके साथ सती हो स्वर्गपहुचूंगी"। तुरंत पृथ्वीराजने अपनीसेना सुधारन शुरू किया लेकिन अफ़सोसकि बड़े २ सब सेनापति कन्नौजके युद्धमें एक वर्ष पहिलेही काम आचुकेथे। रणपर चढ़ते समय क्षत्रीकुलकी मर्यादानुसार पृथ्वीराज माता, भगनी तथा रानियोंसे विदा होनेगया। जब रानी संयोगताके महिलमें पहुंचा तौ दोनोंको बोलनेकी सामर्थ्य न रही, सेनाके डंके बजरहे थे अतएव राजा अपनी प्यारी रानीके हाथसे स्वर्णके कटोरेमें पानी पीकर तुरन्त चल दिया रानी सतीथी उसे व्यापगया कि डंकोंका शब्द पुकार पुकार कुछ औरही कहिरहाहै। पश्चात प्राचीन प्रथाके अनुसार जब रानी सेना लेकर अपने पतिके पीछे रणभूमिको चलने लगी तौ उसने ठंडी सांस भरकर कहा "योगनीपुर आज मैं तुमसे विदा होतीहूं, अपने प्रियतमसे स्वर्गमें मिलूंगी अब उनका दर्शन यहां दुर्लभहै"। अंतमें मुसलमानोंकी विजय हुई, पृथ्वीराज रणशाई हुये। सुनतेही

महारानी संयोगता सतीहोनेको तय्यार होगई,शहाबुद्दीनने सतीका यौवन,अवस्था तथा साहस देख बहुत समझाया पर सतीने ऐसे जवाब दिये कि शहाबुद्दीनकी आंखें खुलगई।अंतमें पृथ्वीराजका शिर उसको देदिया गया। और वह जलकर राख होगई । पृथ्वीराजके रणभूमिको जानेके समयसे सतीहोनेके वक्त तक महारानी संयोगता उतनाही जल पीकर रहीथी जो महाराज पृथ्वीराज जल्दीमें चलते वक्त पीनेसे स्वर्णके कटोरेमें छोड़ गयेथे। कविचंदने पृथ्वीराजरासौके संयोगत खण्डमें इस सतीका साविस्तर वृत्तांत लिखाहै । पुरानीदिल्लीके रङ्गमहिलके खण्डैर अबतक इस सती रानीका स्मरण पथिकोंको करातेहैं ।

स्काट (सरवाल्टरस्काट-Sir Walter Scott.)-स. ई. १७७१ में जन्मे, इनके बाप स्काटलैंडके शाही दफतरमें क्लार्क (लेखक) थे। इनके माता पिता स्काटलैंडके उन सीमावर्ती प्राचीन वंशोंमेंथे जिनकी वीरताका साक्षी इतिहासहै। इन्हीं वंशोंकी वीरताका वर्णन स्वरचित ग्रंथोंमें करके स्काटने अपने पूर्वजोंका नाम चिरंजीव कियाहै । शुरूमें स्काटका स्वास्थ अच्छा नहीं रहिताथा एवं जल वायुबदलनेके लिये वह अपने दादाके ग्राममें, जो केलसोके निकट था गयेथे, इस स्थानके समीप अनेक लड़ाई झगड़े इनके पूर्वजोंसे पहिले समयमें होचुकेथे अतएव वहां इन्होंने अनेक खण्डैर तथा स्थान ऐसे देखे जिनके सम्बंधमें अनेक वीरताकी कहानियें प्रसिद्धथीं। इन्हीं वीरताके किस्सोंका समावेश पश्चात स्काट साहबने स्वरचित गद्यपद्य ग्रंथोंमें बड़ी तारीफके साथ किया। इन्होंने स्काटलैंडके देश वियालयमें शिक्षा पाईथी, पश्चात स्काटलैंड की अदालतोंमें कुछ दिनोंतक वकालतकीथी । एक लड़कीसे इनको प्रेमथा लेकिन उससे विवाह न होसका था। स. ई. १७९७ में एक फरासीसी लड़की मिस कारपेंटरसे इनका विवाह हुआ और स. ई. १७९९ में सेलकर्क शायरके शेरिफका पद इनको मिला। उसी सालसे इन्होंने कविता करना शुरू किया स.ई.१७९९ तथा १८१४ के बीच इनके रचे अनेक काव्य छपे जो वीररससे परिपूर्ण हैं। स. ई. १८१४ में इन्होंने उपन्यासोंके लिखनेकी तरफ ध्यान दिया और कितनेही उपन्यास अत्योत्तम लिखकर देशभरमें प्रसिद्धि पाई । स. ई. १८२६ में वैलेन्टायनका छापाखाना जिसमें इनकी शरकतथी टूटगया जिसके कारण १ लाख २० हज़ार पौंड इनपर ऋण होगया । दिवालिया बनना इन्होंने स्वीकार न किया एवं रातदिन ग्रंथ रचनामें मेहनत करके बहुतसा ऋण निपटाया परंतु घोरपरिश्रम करनेसे इनकी स्मरणशक्ति घटगई और यह ऐसे निर्बल होगये कि स्वास्थ्य सम्हालनेके लिये इटेली तथा भूमध्य सागरमें इनको जाना पड़ा।

यात्रासे कुछ लाभ न हुआ निदान स्वदेशको लौटे और कुछ दिनतक बेहो-
शि रहनेके बाद सिधारगये। यह बड़े उदार चित्त और सन्मानीथे, कोईभी
का शत्रुनथा, उम्रभरमें किसीसे नाराज़ी नहीं हुई थी। लोग इनसे मिलकर
प्रसन्न होते थे क्योंकि इनकी बातचीत सभ्दा,नम्र,दिललुभाने वाली और प्राचीन
ग्रन्थोंसे परिपूर्ण होतीथी।

स्टीफिन्सन (जार्जस्टीफिन्सन– George Stephenson)यह एक
प्रसिद्ध अंग्रेज़ी आविष्कार हुयेहैं, इन्होंने चलनेवाली रलगाड़ीकी सम्भावनासिद्ध
करनेके लिये लोको मोटिव एञ्जिन (धुंयेकीकल) बनाई थी और स. ई.
१८१४ में उसी कलसे रेलगाड़ियें चलाकर दिखलायाथा यह इन्हींके परिश्रमका
परिणामहै कि आजकल रेलगाड़ियें भक २ करती सैकडों कोस घंटोंमें चली
जातीहैं। स्टीफेन्सनके बाप कोयलेकी खानमें नौकरथे। २० वर्षकी उम्रमें स्टीफे-
न्सनका विवाह हुआ था और स. ई. १८१२ में १०० पौंड वार्षिक वेतनपर को-
यलेकी खानमें इञ्जिनियरका पद इनको मिला थाइसी खानकेलिये स.ई.१८१४में
इन्होंने एक धुयेंकी कल बनाईथी जो ८ गाडियोंको ४ मील प्रति घंटेके हिसाब
से लेजासकतीथी। इसी कलको स्टीफेन्सन साहबने और सुधारा जिससे वह
फी घंटे १५ मीलजानेलगी। इनके जीतेजी कई एक रेलकी सड़कें भी इङ्गलैंडमें
तयार होगई थीं और यह उनके चीफ इञ्जिनियर नियत किये गयेथे। स. ई.
१७८१ में इङ्गलैंडमें जन्में, स. ई. १८४८ में मरे।

**स्वर्णमई(कासिमबाजारकी महारानी स्वर्णमई, सी० आई०
ई०)** जिलावर्दवानके भटाकोल नामक ग्राममें स. ई. १८२७ की साल जन्मी
और ११ वर्षकी उम्रमें कासिमबाजारके राजा कृष्णनाथ रायको व्याही गईं। कृष्ण-
नाथ रायके परदादेदीवान कृष्ण कान्तनन्दीने वारेनहैस्टिङ्गज साहबके प्रान
एककठिनस्थलपर बचायेथे एवं जब वारेन हैस्टिङ्गज़ गवर्नरजेनरल हुये तो
इन्होंने बाबू कृष्णकान्तको अपना दीवानबनाया, जिससे कृष्णकान्तके धन
और सामर्थकी कुछ सीमानरही और बड़ी भारी ज़िमीदारी खरीद करसकोयही
अतुल विभव विर सतमें स. ई. १८३२ की साल राजा कृष्णनाथरायको मिली।
स. ई. १८४४ में राजा कृष्णनाथरायं आत्मघातकर्के निर्वंश मरगये और वसी
यत लिखगये कि मेरी स्त्री कुछ न पावे और सब जायदाद ईष्टइन्डियाकम्पनी
लेलेवे। राजाके मरतेही इष्टइन्डिया कम्पनीने राज्यपर अपना अधिकार करलिया
निदान महारानी स्वर्णमईने कलकत्तेके सुप्रीम कोर्टमें कम्पेनीपर नालिशकी
और यह बात प्रमाण करादी कि वसीयत नामा लिखते समय राजा बेहोशथा।

स. ई. १८४७ में महारानीकी डिकरी हुई और सब जायदाद मुर्शिदाबाद, राजशाही, पवना, दीनाजपुर, माल्दा, रंगपुर, बोगड़ा, फरीदपुर, जैसोर, नदिया, वर्द्वान, हवड़ा, चौवीस परगना, गाज़ीपुर तथा आज़मगढ़के ज़िलोंमें है उसको मिलगई । महारानीने जायदाद पाकर रायराजविलोचनराय एक सुयोग्य पुरुष को अपना दीवान नियत किया औरसब ऋण जो जायदादपर पहिले अप्रबंधोंके कारण होगयाथा अल्प कालहीमें चुका दिया। महारानी जबतक जीतीरही प्रतिवर्ष १ लाख रुपया पुण्यार्थ खर्च करती रही, बंगालमें कोई ऐसा घर न होगा जो महारानीकी दातव्यताकी प्रशंसा न करता हो, अकाल पीडितोंकी महारानीने सदैव लाखों रुपयेसे सहायताकी, सैकड़ों स्कूलों तथा शफाखानोंको लाखों रुपये चन्देमें दिये । महारानीके दीवानने राज्यप्रबंध बड़ी नीति, बुद्धिमानी, सच्चाई और धर्मके साथ किया और पहिलेकी अपेक्षा आमदनी बहुत बढ़ाई। यह सब आमदनी राज्यके सुधारने, आसामियोंका सुख चैन बढाने, दीनदुःखियोंका क्लेश दूर करने, पुल तथा सड़कें बनवाने और उचितरीतिसे पुण्य करनेमें लगाई गई । महारानीके पुण्यके काम पर्देमें रहिकर इतने लाभदायक और लोकहितकारी नहोते यदि दीवान सत्यचित्तसे उसका सहायक न होता । बृटिश गवर्नमेंटने स. ई १८७२ में स्वर्णमईको महारानीकी उपाधि देकर यथार्थमें धर्म नीति और दयाकी प्रतिष्ठाकीथी । स. ई.१८७८ में राजराजेश्वरी विक्टोरियाने भी महारानीके परमोदारताके कामोंपर रीझकर उसको सी० आई० ई० अर्थात् भारत की मुकुटमणिकी उपाधि दी थी । वर्तमान कालमें महारानी स्वर्णमईके समान कोई दूसरी स्त्री नहीं हुई जिसने निजधनको नियमितरीतिसे सर्व साधारणके उपकारमें लगाया हो । दीनोंका दुखदूर करना, विधवाओंके आंसू पोंछना, भूखोंको भोजन,नंगोंको वस्त्र, रोगियोंको औषधि, यात्रियों तथा पथिकोंको शरण और विद्यार्थियों तथा ग्रंथकारोंको सहायता देना इसदयावंतीके नित्य कर्मथे । इसके कोई सन्ताननथी परन्तु यह मनुष्य जाति मात्रको अपना कुटुम्ब मानतीथी । स. ई. १८९५ में वैकुंठवासी हुई और राज्य अपनी बहिनके बेटेको सौंपगई ।

हकीकतराय (खालसापन्थके बलिदान)–इनके बाप बागमल खत्री स्यालकोटके हाकिमके पास कारकुनथे।विवाह इनका बचपनहीमें पंजाबके किसी प्रतिष्ठित सिंह वंशमें होगयाथा । किसी मुल्लाके मकतबमें जो शहिर स्यालकोटकी एक मसजिदमें था यह फारसी पढ़नेको जायाकरतेथे । एक दिन वादानुवादमें अपने सपाठी मुसलमान लड़कोंके मुँहसे हिन्दुओंके देवताओंके लिये गाली सुनकर हकीकतके मुंहसे मुसल्मानी मतकी कुछ निन्दा निकलगई ।

मुसल्मान लड़कोंने बातका वितण्डा करदिया, मुल्लाजीनेभी सुनतेही काज़ी-जीको इत्तलाकी, काजीजीने तुरंत हुक्म देदिया कि काफरको सूली देदो। लाचार होकर हकीकतके बापने लाहौर जाकर हाकिम आलाके पास अपीलकी लेकिन उसनेभी क़ाज़ीजीका हुक्म बहालरखा। हकीकतकी उम्र उसवक्त १७।१८ वर्षकी थी, गलेसे १६ वर्षकी कामिनी बंधीहुईथी निदान माता पिताने अश्रु धारा बहा २ कर बेटेको बहुत कुछ समझायी और कहाकि "बेटा मुसल्मानों का राज्य है कुछ वश नहीं चल सकताहै, तुमहीं हमारे बुढ़ापेकी टेकैहो, तुम्हारे बिना हम अन्धे होकर बूंद २ भर पानीको तड़फ २ कर मरेंगे, इस बहूके देखते औरभी कलेजा टूक होताहै क्योंकि इसका तुम्हारे सिवाय कोई सहारा नहीं है, बेटा विचारकर देखो और लाचारीका मुकाम समझ मुसल्मानही होकर प्राण बचालो"। पाषाण का हृदयभी माता पिताका विलाप कलाप सुनकर वेधित होताथा लेकिन वीर हकीकतरायने धर्मकी अपेक्षा प्राणको तुच्छ समझ मुसल्मान होना स्वीकार न किया निदान मलेक्ष हाकिमके हुक्मसे लाहौरमें बसन्त पंचमीके दिन लड़कोंकी बातोंमें निरापराध हकीकतरायका लोहूबहाकर बागमलका वंश नष्टकर दियागया। लाहौरमें हकीकतरायकी समाधि बनीहै जिसपर प्रति वर्ष वसन्तके दिन बड़ा भारी मेलाहोताहै। किसी कवीश्वरने सत्य ही कहाहै कि–

दो०–धन दै दारा राखिये, दारादै तनराख।
धन दारा तन सबै दै, एक धर्मके काज॥

स. ई. १७३४ में जन्मे, स. ई. १७५२ में धर्मके लिये जान देदी।

हमीरसिंहदेव (राना उदयपुर)–यह राना अजयसिंहके भतीजेथे, स. ई. १३०१ में उदयपुरकी गद्दीपर बैठे और स. ई. १३१३ में दिल्लीके बादशाहको परास्तकर्के चित्तौड़ गढ़ इत्यादि निज पूर्वजोंका सब राज्य, जो दिल्लीके खिलजी सम्राट अलाउद्दीनने राना लखमसी (लक्ष्मण सिंह) के वक्तमें छीन लिया था, पुनः विजय करलिया। इनके समयमें मेवाड़ राज्य की कीर्ति पुनः स्थापन हुई, यह बड़े प्रजापालक थे।

हमीर देव चौहान (रणथम्भोरनरेश)–यह ब्यावर (अजमेर) नरेश महाराजा बीसल देवके वंशमें बड़े वीर तथा दृढ प्रतिज्ञनरेश हुयेहैं। अन्तिम दिल्लीपति पृथ्वीराज चौहान इनसे कई पीढ़ी पछि होकर दिल्ली–अजमेरके राज्यको प्राप्त हुये। कवि सारङ्ग धरने हमीर देवके नामसे "हमीरगैरा" तथा "हमीरकाव्य" नामक ग्रंथ रचकर बहुत कुछ इनाम पायाथा। सारङ्ग

धर कविके दादा रघुनाथ इनके गुरुथे। कहितेहैं कि मीर मुहम्मद मुग़ल नाम-क सर्दारसे दिल्लीके बादशाह अलाउद्दीनकी एक बेगमकी आँखलड़गईथी जब यह खबर अलाउद्दीनको हुई तौ वह अपनी जान लेकर भागा और कई राजाओंके दर्बारमें गया लेकिन किसीने उसको शरण न दी। अन्तमें वह हमीरदेवके दर्बारमें रणथम्भोर पहुंचा। हमीरदेवने हाल सुनकर उदारतापूर्वक शरण दिया। खबर पातेही अलाउद्दीनने हमीरदेवसे अपना अपराधी मांगा लेकिन राजाको शर्णागतका परित्याग करना स्वीकार नहीं हुआ निदान अला-उद्दीनने रणथम्भोरपर चढ़ाई की। नतीजेके विषयमें मुसलमान इतिहासकारों तथा हिन्दू कवीश्वरोंके लेख एक दूसरेसे विरुद्ध हैं। इतिहासोंमें लिखाहै कि स.ई. १३००में कई महीनेतक लड़नेकेबाद हमीरदेव परास्त होकर मारेगये और मीर मुहम्मद जब पकड़कर लायागया तौ अलाउद्दीनने उससे पूछा कि "अब छोड़ दिये जानेपर तुम ठीक २ चलोगे" लेकिन उसने उत्तर दिया कि "यदि वश चला तौ तुम्हारा सरकाटकर महाराजा हमीरके पुत्रको तख्त दिल्लीपर बिठलाऊंगा"। यह सुनकर अलाउद्दीनने उसको हाथीके पैरसे कुचलवाडाला। लेकिन कवीश्वर लोग "हमीरहठ" में लिखतेहैं कि, अन्तिमदिनके युद्धको जाते वक्त हमीरदेव कोटकी रक्षाके लिये मीरमुहम्मदको छोड़गये और रानियोंसे कहिगये कि, जब किलेपरसे रणभूमिमें हमारा झंडा गिरा देखो तौ हमको रणशाई हुआ जान तुम लोग पेशतरसे तय्यार की हुई अग्निमें भस्म होजाना। अन्तमें महाराजकी जीत हुई, अलाउद्दीन परास्त होकर भागा, भावीवश भागड़के वक्तमें किसीको झंडेकी सुधिनरही। झंडेको गिरादेख राजभवनमें कुलाहल मचगया रानियें तुरंत अग्नि-में प्रवेशकरगईं, राजदासियोंने क्षणमात्रमें महिलपरसे कूद २ कर जानखोदी, राजमाता राजभगनियों तथा राजकन्याओंने टक्करें मार २ कर प्राणहतडाले, यह अनर्थ हुआ देख मीरमुहम्मदनेभीजाना धिक्कार समझ कुयेंमें गिरनेसे देर नहीं की। महाराजने लौटकर जब राजभवनमें चिड़ियातक न पाई और देखा कि, जिसके लिये इतनी आपत्ति उठाई वहभी नहीं है तौ उनके चित्तमें वैराग्यका उदय हुआ और निज पुत्रको राजतिलकदे शिवजीके मंदिरमें जाकर उन्होंने अपना शिर काटकर चढ़ा दिया। महाराज हमीरसिंहदेवके शिवको शिरकाटकर चढ़ानेकी तस्वीर अबतक महाराजा पटियालाके भवनमें विद्यमानहै। निम्नस्थ दोहा आपहीके विषयमें प्रसिद्ध है:-

दो०-सिंहगमन सापुरुष वचन, कदली फल एकबार।
त्रियातेल हमीरहठ, चढ़े न दूजी बार॥

हरगोविंदजी (सिक्खोंके छठेगुरु)–गुरु अर्जुनसाहबके घर स-ई. १५९५ में जन्मे। माताका नाम गंगाथा। स. ई. १६०६ में गद्दीपर बैठे। ठाट अमीरी रखतेथे। दो तलवारें बाँधतेथे, एक गुरियाईकी दूसरी अमीरीकी। चित्त आपका बच्चेपनहीसे रण सम्बंधी कामों तथा डंड कुश्ती, पटेबाजी, फरी गदका तथा तीरन्दाजी इत्यादि में लगताथा। बडे स्वरूपवान तथा हृष्टपुष्टथे। स. ई. १६११ में निजपिता गुरु अर्जुन साहबकी समाधि इन्होंने बनवाई थी। दिल्लीके मुगल सम्राट जहाँगीरने दीवान चण्डूलालके कहनेसे इनको ग्वालियरके किलेमें नजरबन्द किया परंतु थोडेही दिनोंबाद इनके महत्वके चरित्र सुनकर इनको अपने पास बुलाकररक्खा। एकदिन अवसर पाकर गुरुने बादशाहसे चण्डूलालकी सब करतूत जो उनके पिता गुरु अर्जुनके मरवाने तथा इनको नजरबन्द करानेमें उसनेकीथी कहिदी। चन्डूलाल बादशाहके हुक्मसे गुरुको सौंपागया, गुरुने उसको मरवाडाला। आपसे पहिले जो पांच गुरुहुये मुल्कीमामलोंसे कुछ सरोकार नहीं रखतेथे लेकिन आपने दीनी तथा मुल्की दोनोंही प्रकारके मामलोंमें हिस्सा लिया। स. ई. १६४४ में परलोकगामीहुये।

हरदत्तपंडित (पदमञ्जरीके कर्त्ता)–जयादित्य तथा वामनकृतकाशिका अष्टाध्याईके ऊपर इन्होंने पदमञ्जरी नामक व्याख्या लिखीथी।

इसबातके प्रमाण मिलते हैं कि ये माघकविसे पीछेहुये (देखो माघ) आपस्तम्ब तथा गौतम धर्म सूत्रोंका भाष्यभी इन्होंने रचाथा।

हरवोंग–इस काशीनरेशने अपने राज्यमें सब चीजें एक भाव बेचनेकी आज्ञा दीथी। इसीकारण प्रसिद्धहै कि–"राजहरवोंगराजा टकेसेर भाजी टकेसेर खाजा"। हरवोंगके समय इत्यादिका कुछ विशेष हाल नहीं मालूम्।

हरदीक्षित (बृहच्छब्देन्दुशेखरकेकर्त्ता)–यह भट्टोजि दीक्षितके पौत्र थे। वि. सं. की १८ वीं शताब्दी में इन्होंने भट्टोजिदीक्षितकृत सिद्धांत कौमुदी पर बृहच्छब्देन्दुशेखर और मनोरमापर शब्दरत्ननामक व्याख्याकीथी

हर्ष–देखो श्रीहर्ष।

हरिदास–यह योगिराज इस समयमें योगाभ्यासकी महिमाको प्रकट करनेवाले साधुओंमेंसे थे। पंजाबकेशरी रणजीतसिंहजीने प्रशंसा सुनकर इनको अमृतसरसे अपने दर्बारमें बुलायाथा, यह वर्षोंकी समाधि लगासकतेथे।

गवर्नर जनरलहिंदके सैनिकमन्त्री आसबर्न साहिब अपने रोजनाम्चे में लिखतेहैं कि स. ई. १८३८ की साल ६ ता.जूनको रणजीतसिंहजीने हरिदासफकीरको एकसन्दूक में बन्द कराके धर्तीके भीतर गड़वादिया, दश महीने बाद जब

जमीन खोदकर सन्दूक खोलागया तौ साधू पद्म आसन बैठे हुये मिले, शरीरमें बिलकुल माणनहीं मालूम होतेथे, लेकिन थोडीहीदेर बाद कुछ २ श्वास चलती मालूम हुई और अधिक समय नहीं बीताथा कि महायोगीश्वरने नेत्र खोल कहा कि "बहुत सोये"। प्रायः स. ई. १८०८ में इनका जन्महुआ, ये पंजाबके रहिने वालेथे।

हरदेवलाल (हुलकाकेदेवर)–बाबूकृष्णबलदेव बर्म्मा "बुंदेलखण्ड पर्यटन" में लिखतेहैं कि स.ई.१६२८के लगभग जब ओडछाके राजा जुझारसिंह दिल्लीदर्बार में रहने लगे तो राजप्रबन्धका भार इनके भाई हरदेव सिंहके शिरपड़ा, हरदेवसिंहके वक्तमें घूसखानेवालोंका निर्वाह न था एवं ईर्षावश इन्होंने भाइयोंमें वैमनस्य करानेके लिये राजा जुझारसिंहको लिखा कि कुँवर हरदेवसिंहका राज महिषी से अश्लील सम्बन्धहै। पत्रदेखतेही राजाने ओडछे आकर रानीसे कहा कि यदि हरदेवसिंह से तुम्हारा घृणित सम्बन्ध नहींहै तो अपने हाथसे उसे विष देदो। रानीने बड़े दुःखसे धर्म रक्षार्थ राजाका प्रस्ताव स्वीकार करके भोजन प्रस्तुत किये। भोजन परोसते समय रानीके अश्रु संचालनहो उठा। हरदेवसिंहने क्लान्तहो कारण पूंछा जिसके उत्तरमें रानी चीखें मारकररोनेलगी। बहुत प्रबोध करनेपर बोली कि बेटा! अब मैं माताकहे जाने योग्यनहींहूं, महाराजको मेरे सतीत्वमें सन्देहहै। स्त्रीका पहिला धर्म सतीत्व रक्षाहै जिसकी इस समय परीक्षाहै। इसकारण यह दुर्भागिनी आजपुत्र सरीखे देवरका विषपूरित भोजन परोस कर पुत्र हत्या करनेको प्रस्तुत हुई है। यह सुनतेही हरदेवलालने वह भोजन खालिया और कहा कि माता! तेरी धर्मरक्षासे मेरी सुकीर्ति युगानुयुग होगी। रानीनेभी इनसौजन्य पूरित वाक्योंको सुन अत्यंत कातरहो विषखालिया। जुझारसिंहभी यह धर्मपरीक्षा देखरोनेलगे। हरदेवसिंह रसोईका शेष विषपूरित भोजन बाहर उठवालाये और उन्होंने अपनी दशाका अन्तिम समाचार इष्टमित्रों सेवकों तथा कर्मचारियोंसे कहा। उनमेंसे बहुतोंने जो हरदेव सिंहके सद्गुणोंसे अनुरक्तथे वह विषपूरित भोजन तुरंत खालिया और थोडीही देरपीछे सबके सब अटल निद्रामें सोगये। इसजघन्यपापसे चारों ओर हाहाकार मचगया। सजातीय तथा विजातीय सब लोगोंने महाराज जुझारसिंहको सर्वदा भयमदजानकर उनसे सम्बन्ध तोड़दिया। उन्हीं दिनोंसे हरदेवलाल तथा हुलकादेवी विशूचिकाके दिनोंमें पुजनेलगे। हुलकादेवीके मन्दिर और हरदेवलालके चौतरे तथा कूप समस्त भारतवर्षमें ठौर २ बने हैं।

हरिदासस्वामी (वैष्णवधर्मप्रवर्तक)–"भक्तसिन्धु" ग्रंथके आधारपर मिस्टर ग्रौसने लिखाहै कि अलीगढ़के पास एक गाँवमें जिसको अब हरिदासपुर कहते हैं ब्रह्मधीरनामक सनाढ्य ब्राह्मण रहितेथे जिनके पुत्र ज्ञान

धीरके इष्टदेव गोवर्धनपर विराजमान श्री गिरिधारीजीथे। ज्ञानधीरका विवाह मथुरामें हुआ था जिससे एकपुत्र आशधीरहुआ। आशधीरका विवाह वृंदावनके निकटस्थ राजपुर ग्राममें गंगाधर ब्राह्मणकी कन्यासे हुआ था जिससे हरिदासजीका जन्महुआ। बचपनहीसे हरिदासजी भगवद्भक्तिमें लीनथे और अन्यलडकोंकी भांति खेलना कूदना उनको पसंद नहीं था।२५ वर्षकी उम्रमें हरिदासजी गृहत्यागीहो वृंदावनमें मानसरोवरपर जा बसे और थोडेही दिनपीछे वहाँसे निधवनको उठगये। वहींपर श्रीबाँकेविहारीजीकी मूर्ति इनको मिलीथी जिनका बड़ाभारी मंदिर अबतक वृंदावनमें है,इस मंदिरके अधिकारी स्वामी हरिदासके भाई जगन्नाथके वंशधर हैं। हरदासजी परम विरक्त तथा महात्यागीथे और सदैव ईश्वरके ध्यानमें मग्नरहतेथे। भक्तमालवर्णित यमुनाजीमें पारसपत्थरफेंक देनेकी कथा इन्हीके विषयमेंहै। सङ्गीतशास्त्र इनको पूर्णरीतिसे आताथा, सुप्रसिद्ध गवैया तानसेन इनका शिष्यथा। एकदफे मुगलसम्राटअकबरने चाहा कि स्वामीजीका गानासुने परंतु यह कठिनथा निदान तानसेन बादशाहके हाथ सेवकके रूपमें तानपूरा लिवाकर स्वामीजीके पास पहुंचा, यह चित्र वृंदावनमें अबतक मौजूदहै। स्वामीजी अपने प्राचीन शिष्यको देख प्रसन्न हुये, तानसेनने कुछगाया परंतु जानबूझकर चूककी तब स्वामीजीने स्वयंगाकर बतलाया,बादशाहने मोहितहो स्वामीजीके चरणछुये और मोरों तथा बंदरोंके चुगानेके खर्चके लिये जागीरदी। स्वा० हरिदासके बनाये पदोंके दो छोटे २ ग्रंथहैं। सिद्धांत नामक ग्रंथभी इन्हीका बनायाहुआहै। गवैयोंके सिवाय साधारण लोग इनके बनाये पदोंको नहीं गासकतेहैं। यह कवितामें अपना यह छापरखतेथे-"श्रीहरिदासके स्वामीश्यामा कुंजविहारी"। इनकी गद्दीके मुख्यस्थान वृंदावनमें तीनहैं श्रीबांकेविहारीजीका मंदिर, निधवन और मौनीदासजीकीटट्टी। इनकी शिष्य परम्परामें अनेक सुकविहुयेहैं जिनमेंसे मौनीदासजी ९ वेंथे। मौनीदासजीकी टट्टीमें स्वामीहरिदासजीका जन्मोत्सव हरसाल बड़े समारोहसे होताहै। स्वा० हरिदासकी भाषाकविता सूरदास तथा तुलसीदासकी कविताके समानहै और इनके बनाये संस्कृतपद जयदेव स्वामीकृत पदोंसे कमनहीं। डाक्टर ग्रीअर्सन साहब अपने ग्रंथमें लिखते हैं कि. स. ई. १५६० में हरिदासस्वामी विद्यमानथे।

हरिनाथ (भाषाकवि)—प्रसिद्ध कवीश्वर नरहरिजू इनके पिता थे। यह भाट महापात्र ग्राम असनी जिला फतेपुरके रहनेवाले थे। हरिनाथ बडे भाग्यवान, उदारचित्त और दानीहुये, जिस दर्बारमें गये लाखों रुपये, हाथी, घोडे, ग्राम इत्यादि प्राप्तकरके लौटे पर पास कुछ नहीं रक्खा सब लुटादिया।रीवाँनरेश नेजारामबघेलेने१ लाख रुपया और वीररानी दुर्गावतीने सवालक्ष रुपया इनको इनाम दिया था, पश्चात् हरिनाथजीने महाराज मानसिंह जयपुर नरेशके दर्बारमें पहुंच निम्नस्थ दोहे सुनाय दोलक्ष रूपये इनाम पाये:-

दो०-बलिवोई कीरतिलता, कर्णकरी द्वै पात।
सींची मान महीपने, जब देखी कुम्हलात॥

दो०-जातिजाति ते गुण अधिक, सुन्यो न अबहूं कान।
सेतुबाँधि रघुबरतरे, हेला दै नृप मान॥

जब हरिनाथजू रुपये तथा अनेक सामान सहित घरको लौटे आरहेथे तो रास्तेमें एक नांगापुत्र उनको मिला और उसने हरिनाथजूकी प्रशंसामें यह दोहा पढा-

दो०-दान पाय दोई बढे, की हरि की हरिनाथ।
उन बढ लम्बे पग किये, इनबढ लम्बे हाथ॥

यह सुनतेही हरिनाथजूने सब धनधान्य उस नागापुत्रको देदिया और आप रीतेहाथ घरको लौटआये। वि. सं. की १७ वीं शताब्दीमें इनका समयहै।

हरिश्चंद्र भारतेन्दु (हिन्दी सम्राट) यह बाबूजी काशीके रहनेवाले बाबू गोपालचंद्रजी अग्रवाल वैश्यके पुत्रथे, माता इनको केवल ५ वर्षका, पिता ८ वर्षका छोड़कर मरगयेथे, बनारसके क्वीन्स कालिजमें कई वर्षतक इन्होंने अंग्रेजी पढ़ीथी, संस्कृत तथा फार्सीकेभी पूर्ण ज्ञाता थे, तामिल और तैलङ्गके सिवाय इसदेशकी अन्य सब भाषाओंकोभी बड़े परिश्रमसे घरपर पढ़ा था। कविता बच्चपनही से अनेक भाषाओंमें करतेथे लेकिन हिंदी कविता करनेमें निपुणथे। १६ वर्षकी उम्रमें इन्होंने "कविवचनसुधा" नामक पत्र निकालना शुरू किया था, पश्चात् अनेक और पत्र, पत्रिकायें निकाली थीं तथा सैकड़ों गद्य, पद्य पुस्तकें रचकर हिंदी भाषाका भण्डार परिपूर्ण कियाथा, बा० हरिश्चन्द्रके पहिले साधारण रीतिसे इस प्रान्तभरमें केवल संस्कृत, फार्सी तथा अंग्रेजीके पठन पाठन का चर्चाथा, भाषाग्रंथोंका रचना, छपवाना तथा पढ़ना तुच्छ काम गिना जाताथा। बाँ० हरिश्चंद्रके उद्योगसे देशभर की रुचि शनैः २ इस ओर बढ़ी, सब लोगोंको हिन्दी लेख पढ़नेकी अभिलाषा उत्पन्न हुई। फिर तो उत्तरोत्तर क्रमसे सैकड़ों अच्छे २ ग्रंथकार होगये और फायदा होते देख ग्रंथोंको छापकर प्रकाशित करनेवाले सहजहीमें मिलने लगे। इसी कारण बा. हरिश्चंद्रको "हिन्दी सम्राट्" कहना यथार्थ है। स० ई० १८७० से १८७४ तक बा० हरिश्चंद्र बनारसमें आनरेरी मजिष्ट्रेट तथा म्युनिसिपेल कमिश्नर रहे। बनारसमें चौखम्भास्कूल, हिंदी डिबेटिंग क्लब, अनाथरक्षिणी सभा तथा काव्यसमाज आपने स्थापनकी थी। आप अनेक बड़ी २ सभाओं तथा समाजोंके प्रेसीडेन्ट तथा मेम्बरभी थे। धनाढ्य तो थे ही, विद्वानोंकाभी

सत्कार खूब करतेथे । काशीके पंडितोंने जो प्रशंसा पत्र हस्ताक्षर करके आप-को दिया था उसमें लिखा था कि-

दो०-सब सज्जनके मानको, कारण इक हरिचंद ।
जिमि स्वभाव दिनरैनते, कारण नित हरिचंद ।

कहतेहैं कि सहस्रों मनुष्योंका कल्याण बाबूहरिश्चंद्रके द्वारा होताथा । विद्योन्नतिके लिये उन्होंने बहुत कुछ व्यय किया था । वह पक्के राज भक्त थे और देशहितके आगे अपने धन, मान तथा प्रतिष्ठाको तुच्छ समझते थे। उनका शील स्वभाव ऐसा था कि साधारण लोगोंके सिवाय भारतके बहुतसे राजाओं महाराजाओं तथा यूरूप और अमेरिकाके प्रधान लोगोंसे उनकी मैत्रीथी । काशीके बड़े २ पंडित तथा सर्वसाधारण उनकी प्रतिष्ठा करतेथे और काशीनरेशकी सभामें उनका बड़ा आदर होताथा । स. ई. १८८९ में हिंदीसमाचारपत्रोंके सम्पादकोंने एकमत होकर उनको भारतेन्दुकी उपाधिदी थी । वह वैष्णवथे और मत वा धर्मको विश्वासमूलक मानकर प्रमाणमूलक नहीं मानतेथे । अहिंसा, दया, शील, नम्रता आदिकोभी धर्मके लक्षणोंमें गिनतेथे । अंतमें कितनेही दिन बीमार रहकर सिधारे । अन्तिम दिन जब अन्तःपुरसे प्रेरित टहिलुनीने आकर आपसे पूछा कि आज आपकी तबियत कैसीहै ? तब आपने उत्तरमें कहा कि आज रातको अन्तिम पतनिका गिरकर तमाशा खतमहोगा । स. ई. १८५० में जन्मे, स. ई. १८८५ में सिधारे ।

हरिश्चंद्रदानी (सूर्य्यवंशीनरेश)–यह राजा त्रिशंकुके पुत्रथे, महाराज रामचंद्र इनसे ३० पीढी पीछे हुये । एकदफे हरिश्चंद्रके राज्यमें घोर दुर्भिक्ष पड़ा, लोग भूखों मरनेलगे तब उन्होंने अपना सब धन धान्य प्रजाकी रक्षामें लगादिया और आप निर्धन होगये । ऐसी आपत्तिके समयमें ऋषि विश्वामित्रने उनके धर्मकी परीक्षा करनी चाही और आकर कहा कि "महाराज ! मुझे धन दीजिये और कन्यादानका फल लीजिये" । सुनतेही महाराजने अपना बचा बचाया माल अस्बाब बेंचकर ऋषिके अर्पण किया । पुनः ऋषिने कहा कि धर्ममूर्ति ! इतने धनसे मेरा काम न चलेगा और मुझे आपके सिवाय कोई दूसरा धनाढ्य धर्मात्मा संसारमें दृष्टिगोचर भी नहीं होता, हाँ ! काशीमें एक स्वपच मायापात्र है कहो तो उससे जाकर धनमाँगू । महाराज हरिश्चंद्र इतनी बात सुनतेही स्त्री पुत्र समेत विश्वामित्रको साथले उस स्वपचके घर गये और उससे कहा कि "भाई ! तू हमें एक वर्षके लिये गिरवी रखले और इनका मनोरथ पूरा कर" । श्मशानमें जाय चौकी देने और जो मृतक आवे उससे करलेनेका काम स्वपचने महाराज हरिश्चंद्रको सौंपा और विश्वामित्रको रुपये गिन दिये, हरिश्चंद्रकी रानीने विवश हो एक ब्राह्मणके घर चौका बर्तन धोनेकी नौकरी

करली। कितनेही दिन पीछे महाराजका पुत्र रोहिताश्व मरगया, महारानी उसे ले मरघटमें गई और ज्योंही चिता बनाय अग्नि संस्कार करने लगी त्योंही महाराज हरिश्चंद्रने आकर कर माँगा। महारानीने डिढ़कारी फोड़, रोकर कहा कि "महाराज! यह आपका इकलौता पुत्र रोहितास्व है और सिवाय इस चीरके जो पहिने खड़ी हूं मेरे पास देनेको कुछ और नहीं है"। महाराजने कलेजे पर पत्थर रखकर कहा कि "रानी! मेरा इसमें कुछ वश नहीं है, मैं दूसरेका चाकर हूं यदि उचित रीतिसे कार्य न करूंगा तो अधर्म्मी ठहरूंगा"। इस बातके सुनतेही महारानीने चीर उतारनेके लिये ज्योंही आँचल पर हाथ डाला कि तीनों लोक काँपने लगे, हाहाकार मचगया, पृथ्वी पुकार उठी कि "बस! बस!! बस!!! परीक्षा होचुकी, हरिश्चन्द्र दानी और धैर्य्यवान् है"। महाराजके सब कष्ट स्वप्नवत् होगये, पुत्र रोहिताश्व जीउठा और महाराज तथा महारानीका कीर्त्तिस्तम्भ "आचन्द्र-दिवाकर" अटल होगया। पश्चात् महाराज हरिश्चन्द्र बहुकालतक धर्म राज्य करके दुर्लभ पदको प्राप्त हुये।

हरीराय (सिक्खोंके सप्तम गुरु)–यह गुरु हरगोविन्दजीके पौत्र थे और इनके पिताका नाम दत्ताजी था। शाहरूमका राजदूत इनकी महिमा सुनकर दिल्लीसे लौटती समय इनके दर्शनोंको आया था। मुल्की मामलातमें भी इन्होंने खूब हिस्सा लिया, यह पञ्जाबके हिन्दुओंके पेश्वा गिने जाते थे। इनकी समाधि कीरतपुर मुल्क पञ्जाब में है, हरकृष्णजी इनके कनिष्ठ पुत्र ५ वर्ष की उम्र में गुरुकी गद्दीपर बैठे। स० ई० १६२९ में जन्मे स० ई० १६६१ में सिधारे।

हातिमताई–यह अरबदेशवासी अब्दुल्लाका पुत्र बड़ा परोपकारी और दानी हुआ, मुसल्मानोंके पैग़म्बर मुहम्मद साहिबके जन्मसे थोड़ेही दिन पहिले मरचुका था। इसका बेटा बाद को मुसल्मान होगया। इसके वृत्तान्तमें एक फ़ारसी किताब मिलती है, जिसका अनुवाद उर्दू अङ्गरेजी इत्यादि कई भाषाओंमें होगया है। हातिमताई की कबर अबतक अरबके एक गाँवमें मौजूद है।

हाफिज (फारसी कवीश्वर)–प्रसिद्ध फारसी ग्रन्थ दीवानहाफ़िज इसका बनाया हुआ है। पूरा नाम इसका मुहम्मद शमशुद्दीन था। मुल्क ईरानके शहिर शीराजका रहने वाला था, कुछ दिनोंतक सुल्तान वग्दादके दर्बारसे इसका सम्बन्ध रहा। स० ई० १३८८ में मरा।

हाफ़िजरहिमतखाँ (रूहेला)–इसका बाप शाहआलमखाँ स० ई० की १७ वीं सदीके अंतमें अफ़ग़ानिस्तानसे आकर मुग़ल सम्राट् दिल्लीके दर्बार

में किसी उच्चपद पर नौकर हुआ था। शाहआलमखाँ के हाफिज रहिमतखाँ तथा दाऊदखाँ दो पुत्र थे। दाऊदखाँ ने अपनी वीरतासे मुग़ल सम्राटको खुश किया और नवाब का खिताब तथा रामपुर (रुहेलखण्ड) की जागीर इनाममें पाई। दाऊदखाँके वंशज अबतक रामपुरमें राज्य करते हैं। हाफ़िज़ रहिमतखाँ ने उस मुल्कके अधिकांशपर जो अब क़िस्मत रुहेलखण्डमें शामिल है बहुत दिनोंतक हुकूमत की, और पीली भीतको गाँवसे बसाकर शहिर बनाया और हफीजाबाद नाम रक्खा। बरेली और पीलीभीतके बीच हाफिजगंज भी उन्हींने पथिकों तथा फौजके ठहरनेके लिये बसाया था। पीलीभीत, बरेली और आँउला जि० बदायूंमें अबतक हाफिज रहमतकी बनवाई मसजिदें तथा अन्यान्य इमारतें भग्नावस्थामें पड़ी हैं। बरेली में उस स्थानपर जिसको अब भी किला कहिते हैं उन्होंने एक कोट बनवाया था जिसको सन ५७ के गदरके बाद ब्रिटिश गवर्नमेंटने खुदवाकर फिकवा दिया। हाफिज रहिमत यथाशक्ति न्याव करना चाहता था, राउपहाड़सिंह खत्री जिसकी गढ़ी बरेलीमें अबतक टूटी फूटी पड़ी है उसका दीवान था। कहते हैं कि एक दफे शहर बरेलीसे ३ कोस पूर्व नरियावल ग्राममें देवीका मेला देखने राउ पहाड़की बेटी रथमें बैठकर गई थी, हाफिज रहिमतके भाञ्जेकी उस पर आँख पड़ी, देखतेही मोहित होगया और सवारोंको हुक्म दिया कि पकड़ लो। रथवानको जब यह मालूम हुआ तो उसने तुरंत चादरसे कसकर लड़कीको कमरसे बाँध लिया और सवारोंको धोखेमें डालनेके लिये रथके पीछेका ताँगा छुरीसे काट सड़क पर छोड़ दिया और हवाकी समान बैलोंको उड़ाता हुआ अपने मालिककी प्रतिष्ठाको लेकर गढ़ीके फाटकमें घुस पड़ा और सवार उस को न पकड़ सके। स्वामिभक्त चाकरकी काररवाई देख राव पहाड़की आँखोंसे कृतज्ञताके आंसु बहने लगे, उसने रथवानके हाथोंमें सोनेके कड़े डलवा दिये और पूरी तनख्वाह पर आजन्म नौकरीसे माफ किया, बैलोंको प्रतिदिन ५ सेर जलेबी बाँधदीं और हुक्म दिया कि उनसे कुछ काम न लिया जाय। जब यह बात हाफिज रहिमतके कानमें पहुँची तो उसने अपने भाञ्जेको उचित दण्ड दिया। हाफिज रहिमत प्रायः १२ बच्चोंका बाप था। आलमगीरीगंज, जुलफिकारगंज तथा शहामतगंज नामक शहर बरेलीके मुहल्ले उसीके बेटोंके नामसे प्रसिद्ध हैं। हाफिजरहिमत खाँ अन्तमें नवाब वजीर अवधसे लड़कर कटरा जि० शाहजहाँपुरके मैदानमें मारा गया और उसके लड़कोंकी बात तक किसीने नहीं बूझी। हाफिजरहिमत अपने समयके सब रुहेला सर्दारोंका मुखिया समझा जाता था।

हारीत मुनि (आयुर्वेदीयहारीतसंहिताके कर्ता)-इन्होंने आयुर्वेद अपने पिता ऋषि जाबालिसे पढ़ा था। ऋषि जाबालि राजा दश-

रथके समयमें विद्यमान थे। हारीतमुनिने दो वैद्यक ग्रन्थ रचे थे जिनमेंसे एक वृद्धहारीत संहिता और दूसरा लघुहारीत संहिताके नामसे प्रसिद्ध है। उक्त दोनों ग्रंथोंमें श्रीमान् आत्रेय महर्षि और हारीतमुनिके प्रश्नोत्तर हैं। व्यासकृत महाभारतमें वैशम्पायन ऋषिने हारीतके विषयमें यह कथन लिखाया है कि "मैंने जाबालिपुत्र हारीत को एक सरोवरमें नहानेको जाते हुये देखा, वह वीरत्वकी मूर्त्ति थे, तेज उनका सूर्य्यकासा था, मस्तकपर जटा ललाटमें त्रिपुण्ड, कानोंमें स्फटिकमाला, बायें हाथमें कमण्डलु, दहिनेमें दण्ड, कंधेपर कृष्ण मृगछाला और गलेमें यज्ञोपवीत सुशोभित था, उनकी मूर्त्ति शांतिमय थी, स्वभाव दयालु था और एक टहिलुवा साथ था"।

हार्डिङ्ग (वाईकौन्ट हेनरी हार्डिङ्ग–Viscount Henery Hardinge) यह शहर डरहम (इंग्लैण्ड) के रहनेवाले एक पादरीके पुत्र थे। थोड़ेही उम्रसे यह फौजमें भरती होगये थे और स० ई० १८०४ में कप्तानके पदपर तरक्की पाकर बढ़ते २ अंगरेजी सेनामें उच्चपदको प्राप्त हुये थे। बहुतसी लडाईयोंमें ड्यूक आफ्‌वेलिङ्गटनके साथ २ बड़ी बहादुरीसे लड़े थे। स० ई० १८४४ में गवर्नरजनरल हिंद नियत होकर आये और मुदकी तथा फ़ीरोजशाह की लड़ाईयोंमें सिक्खोंकी सेनाको परास्त किया। स० ई० १८५५ में फील्ड-मार्शलका पद इनको दिया गया। स० ई० १७८५ में जन्मे और स० ई० १८५६ में मरे।

हारूँरशीद (खलीफाबग्दाद)–ये अबू अब्दुल्ला मेंहदीके पुत्र, बग्दादके अब्बासवंशोत्पन्न पंचम खलीफा थे। अपने बड़े भाई अलहदीके बाद २०। २२ वर्षकी उम्रमें स. ई. ७८६ की साल तख्तपर बैठे। शाम, पैलेस्टायन, अरब, ईरान, आरमेनियां, काबुलिस्तान, नैतोलिया, आज रवायजान, वैबिलन, ऐसीरिया, सिन्ध, खुरासान, ताबारिस्तान, जाबुलिस्तान, बड़ा बुखारा, और मिश्र इत्यादि देशोंमें इन्हींका राज्य फैला हुआ था। इनके शासन कालमें अधिक मुल्क तो विजय नहीं हुआ लेकिन अनेक काम देशोन्नति, प्रजापालन और राज्यप्रबन्धके सफलतापूर्वक हुए। यह फार्सी तथा अर्बीके विद्वान होकर गुणी जनोंका खूब सत्कार करते थे। किसी कविकी पद्यरचनापर प्रसन्न होकर इन्होंने ५ लाख अशर्फियें इनाम् दीथीं। अनेक और कवीश्वरोंको भी १। १, २। २ लाख दिरम दिये थे। अनेक सड़कें, सफाखानें, स्कूल, कारवाँ सरायें भी बनवाई थीं। डाक्टरी, पुलिस तथा शिक्षा इत्यादि अनेक राज्य विभाग स्थापन करनेका भी अनुभव पहिले पहिले इन्हीको अरबके बादशाहोंमें हुआ था। इन्होंने यूनानियोंको कई दफे परास्त किया था, अन्तिम दफे स. ई. ८०४ में इनकी हार हुई और४०हजार सेना मारी गई लेकिन दूसरीही साल फ्रिजिया पर चढ़ाई करके उन्होंने फिर शाह यूनानको परास्त किया और उसके अनेक सूबों

पर अधिकार जमाकर राजस्व वुसूल किया। फ्रांसके सम्राट् चार्लस दीग्रेटके साथ हारूँकी मित्रता थी और एक अतीव उत्तम घड़ी हारूँने उसको नजरकी थी। स. ई. ८०९ में २३ वर्ष राज्य करके खुरासानमें मरे और तूस (मशहद) में दफ़न किये गये। यह मुसल्मान थे; बेटा अलअमीन इनका उत्तराधिकारी हुआ।

हावर्ड (जानहावर्ड–Gohn Howard) इस प्रसिद्ध अंगरेज जगत हितैषीका बाप शहर लन्डनमें सौदागरी करताथा और इसको छोटासा छोड़कर मरगयाथा। बड़े होकर इसने अपने से २७ वर्ष बड़ी एक विधवाके साथ शादी की लेकिन वह तीनवर्ष बादही मरगई। स. ई. १७५६ में यह पुर्तगालकी राजधानी लिस्वको उनलोगोंकी सहायता करणार्थ गये जिनकी भूकम्पसे हानि हुई थी। लिस्वसे लौटकर यह हैम्पशायर (इङ्गलैन्ड) में वसरहे और स. ई. १७५८ में इन्होंने अपना दूसरा विवाह किया लेकिन दूसरी स्त्रीभी स. ई. १७६५ में एक बेटा छोड़कर मरगई। उस समय यह बेडफोर्डके समीप कार्डिङ्गटन में रहतेथे और वहाँ इन्होंने कुछ जायदाद् भी खरीदलीथी। स. ई. १७७३ में शेरिफ़का ओहदा इनको मिला, उक्त ओहदेपर रहकर स्पष्टरीतिसे इनको जाँच होगई कि जेलखानोंमें कैदियोंके साथ पशुओंके समान बर्ताव किया जाताहै निदान इन्होंने सर्कारी आज्ञा लेकर इङ्गलैंडके जेलखानोंका दौरा किया और उद्योग करके पार्लियामेंटसे आईन पास कराया जिससे कैदियोंकी तकलीफ बहुत कुछ घटगई। पश्चात् इन्होंने युरूपके अन्यराज्योंमें भी भ्रमण करके जेलखानोंकी दीन दशाकी जाँच की और भिन्न२ राजाओंसे उद्योग करके उसमें सुधार करवाया। अंतमें यह क्रीमियाको गये, वहाँ उन दिनों बुखार फैल रहाथा, एक बीमारका इलाज करते समय हावर्ड साहब को उसकी बीमारी उड़लगी और मृत्युका कारण हुई। स० ई० १७२७ में जन्मे, स० ई० १७९० में मरे।

हितहरवंश गोस्वामी (राधावल्लभीय सम्प्रदायके आचार्य)– देवबन्द जि० सहारनपुरमें व्यास स्वामी उपनाम हरिराम शुक्लके घर तारावतीके उदरसे मिती वैशाख शुक्ल ११ वि० सं० १५५९ को जन्मे। प्रथम विवाह इनका देवबन्दमें रुक्मिणी नामक कन्यासे हुआ जिससे दो पुत्र और १ कन्या उत्पन्न हुई। इन तीनों बालकोंका विवाह करनेके बाद गोस्वामी श्री हितहरवंशजी वृंदावन वासकी इच्छासे घरवार छोड़ चलते हुये। मार्गमें होडलके पास चरिथावल ग्राममें एक ब्राह्मण इनको मिला जिसने अपनी दो कन्यायें तथा श्रीराधावल्लभ ठाकुरकी मूर्त्ति इनके अर्पणकी जिसको लेकर यह वृंदावनमें आये और वहाँ मितीका० शु० १३ वि० सं०१५८२को श्रीराधावल्लभजीकी स्थापना की और राधावल्लभीय सम्प्रदायका प्रचार किया। राधावल्लभीय लोग अपने नामके पहिले हित लिखते हैं। हित हरवंशके शिष्योंमेंसे अनेक अच्छे कवीश्वर हुयेहैं। इनकी पहिली स्त्रीका वंश देवबन्दमें है और पिछली दोनों

स्त्रियोंका वृंदावनमें । " श्रीराधासुधानिधि " तथा " कर्मानंद " काव्य इन्होंने बनाये संस्कृत ग्रंथ हैं । भाषामें इनके रचे ग्रंथ " वृंदावनशतक " और " हित चौरासीधाम " हैं ।

हिमाचलराम (भाषाकवि)—यह शाकद्वीपीब्राह्मण रियासत भटौली ज़ि. बहिरायचके रहनेवाले थे । नागलीला, दधिलीला इत्यादि इनके रचेग्रंथ हैं । नि. सं. १९१५ में मृत्युवश हुये ।

हिल (सर रौलैंड हिल–Sir Rowland Hill)—यह बर्मिन्घम (इंग्लैंड) के रहनेवाले महाशय प्रथम लोगोंको गणित शास्त्रकी शिक्षा देकर अपना निर्वाह किया करते थे पश्चात् दक्षिणी आस्ट्रेलियन कमीशनके मंत्रीका पद इनको प्राप्त हुआ और स. ई. १८३७ में डाकखानेके नियमोंके सुधारकी तरफ इनका ध्यान फिरा निदान इन्होंने एक पुस्तकरची और उसमें इस बातपर जोर दिया कि चिट्ठियोंपर तौलके हिसाबसे महसूल लेनाचाहिये, दूरीके हिसाबसे नहीं । कुछ दिनोंबाद पार्लियामेंटने एक कमीटी इनके विचारोंकी जाँचके लिये नियत की जिसने खूब जाँच करनेके बाद इनकी तजवीजोंकी सिफ़ारिशकी एवं स. ई. १८४० में पेनीपोष्टेजका आईन जारी कियागया और हिल साहिबको इङ्गलैंडके पोष्टमाष्टर जेनरलका ओहदा मिला । थोड़ेही दिनों बाद मालूम होगया कि पेनीपोष्टेजका आईन जारी करनेसे सरकारको बहुत फायदा हुआ है । स.ई. १८६४ में हिल साहिबको दो हज़ार पौंड वार्षिककी पेन्शन मिली और के. सी. बी. की उपाधि स.ई. १८४० हीमें मिलचुकीथी । आक्सफोर्ड विश्वविद्यालयने भी डी. सी. यल. की उपाधि आपको दीथी । स. ई. १७९५ में जन्मे स. ई. १८७९ में मरे ।

हुमायूं (द्वितीय मुगलसम्राट्दिल्ली)—यह मुगल सम्राट् बाबरका बेटा था, इसके तीन छोटे भाई और थे । २२ वर्षकी उम्रमें यह बीमार पड़ा, जीनेकी कुछ आंशा न रही, तब तो बाबरने जो अपने बेटोंको अत्यंत प्रेम कर ताथा इसके पलंगके चारों तरफ घूमकर ईश्वरसे प्रार्थना की कि "हे परमात्मन् ! इसको जी दान दे और बदलेमें मुझे ले" । उसी वक्तसे हुमायूंको आराम हो चला और बाबर बीमार हो मरगया । मरतेवक्त बाबरने हुमायूं से कहा कि अपने छोटे भाइयोंके साथ किसी तरहकी गर्द न करना । पितृभक्त हुमायूंने स. ई. १५३० में तख्तपर बैठकर गजनी, काबुल, कंधार तथा पंजाब अपने भाई कामराँको; सम्भल दूसरे भाई असकरीको; अलवर तीसरे भाई हिंदालको दिय और केवल आगरे तथा दिल्लीके आस पासका मुल्क अपने पासरक्खा । स. ई. १५४० में शेरशाह बंगालके सुबेदारने हुमायूं को परास्त किया, ऐसी हीन दशामें हुमायूं ने अपने भाइयोंसे मददमांगी लेकिन उन्होंने मदद देनेके बजाय उसकी जान भी लेलेनी चाही निदान लाचार होकर उसे ईरानकी तरफ भागना पड़ा, रास्तेमें अमरकोटके किलेमें स. ई. १५४२ की साल उसके अकबर पैदा हुआ,

हुमायूं के पास उसवक्त एक मुश्कनाफेके सिवाय और कुछ न था निदान उसी को तोड़ अपने सर्दारोंमें थोड़ा २ बांट खुशी मनाई। हुमायूं बड़ा दयालु, उदार और विद्वान् था, ज्योतिषमें पूरा अभ्यास रखताथा, अकबरकी जन्मपत्रीमें अत्युत्तम ग्रह देख खुशी के मारे नाँचनेलगाथा। स. ई. १५४४ में ईरान पहुँचनेपर शाह ईराननें यथोचित हुमायूं की खातिर की और कुछ दिनबाद १० हजार फौज देकर हिंदोस्तानकी तरफ वापिसभेजा। रास्तेमें हुमायूं ने अपने कृतघ्नी, निर्दयी भाई कामराँ कोपरास्त करके काबुल, कंधार तथा पंजाब छीन लिया और दिल्लीकी तरफ बढ़कर स.ई. १५५५ में सिकन्दरशाह सूर कोपरास्त करके दिल्ली का तख्त विजय किया। सर्दार बैरमखाँको जिसने हरहालत में हुमायूं का साथ दिया था सर्वोच्चपदवी खानखानाकी दी गई और आगरेसे बदलकर दिल्ली में राजधानी नियत कीगई। दिल्लीमें केवल ७ महीने राज्य करनेके बाद सन्ध्या समय एक दिन हुमायूं बालाखानेपरसे नमाज पढ़नेके लिये उतरते वक्त नीचे गिरपड़ा और ४९ वर्षकी उम्रमें मरगया! हुमायूं अपने पिताकी समान दृढ चित्त नहोकर बड़ादयालुथा, उसके दुखदाई भाई कईदफे उसके हाथमें पड़े लेकिन उसने कभी जानसे नहीं मारा और इसी लिये उसको अनेक कष्ट उनके द्वारा भोगने पड़े। कहते हैं कि जब हुमायूं शेरसूरसे हारकर भागा जाताथा तो भोजपुरके समीप उसका घोड़ा गंगामें गिर पड़ा जिससे वह डूबने लगा, इस मौकेपर निजाम नामक भिश्तीने उसकी जान बचाई और इनाममें यह माँगा कि जब हजरत आगरेमें पहुँचें तो एक दिन दोपहरके वक्त ढाई घंटेकी बादशाही मुझको अता फर्मावें। जब हुमायूं आगरे पहुंचा तो निजामभी हाजिर हुआ, हुमायूंके हुक्मसे उसने २½ घंटे तख्तपर बैठकर इजलास किया और तमाम अमीर वजीर उसका हुक्म बजालाये। निजामने इस थोड़ेसे वक्तमें अपनी मशकमेंसे कटवाकर चमड़ेका सिक्का चलाया और अपने भाई बंन्दोंको निहाल करदिया। हुमायूं स. ई. १५०८ में पैदा हुआ, स. ई. १५५६ में मरा।

हुलासरामकवि–यह खंडलद्वीपीब्राह्मण प्रयागदत्तके पुत्र जि. बाराबंकी, तहिसील. फतेहपुर, ग्राम रामनगरके रहनेवाले थे। बुद्धिप्रकाश और बैताल पञ्चविंशतिकाका भाषापद्यमें अनुवाद तथा रामायण लंकाकाण्ड इनके रचे ग्रंथहैं। वि. स. १८४५ में जन्में, वि. स. १९१२ में मरे।

हेमचंद्र (प्राकृतका अन्तिमवैयाकरण)–कुमारपाल चरित्रसे पता लगता है कि बम्बईप्रदेशान्तर्गत खम्भातके रहनेवाले चाचिग नामक वैश्यके घर वि. सं. ११४५ में चाङ्गदेव नामक पुत्रने जन्म लिया। चाङ्गदेव ९ वर्ष की उम्रमें जैन मत ग्रहण करके साधु होगया और तबहीसे उसका नाम हेमचंद्र प्रसिद्ध हुआ जिसकी गणना जैनियोंके महत्पुरुषोंमें है। बड़े होकर हेमचंद्रने पट्टन (गुजरात) के राजा सिद्धराज तथा कुमारपालके दर्बारमें बड़ा सत्कार

पाया, उसके उपदेशके प्रभावसे राजाने जैनधर्म ग्रहण किया और अपने राज्य भरमें उक्त धर्मका प्रचार कराया तथा १४०० विहार बनवाये। जब राजा सिद्ध राज निर्वंश मरगया तो हेमचंद्रने राजमंत्रियोंकी सम्मतिसे राजाकी जातिके एक लड़के कुमार पालनामकको गद्दीपर बैठादिया। इसी कारण कुमारपाल हेमचंद्रको बहुत मानता रहा। निम्नस्थ ग्रंथ हेमचंद्रकृत हैं:-कुमारपालचरित्र, जैनसूत्रभाष्य, वेदप्रचार, भारतसङ्कृतशास्त्र, धातुपारायण, सिद्धहेमशब्दानु शासन, प्राकृतशब्दानुशासन, अभिधानचिन्तामणि, अनेकार्थनाममाला, देशीनाममाला, पुरुषचरित्र, अध्यात्मोपनिषद्, छन्दानुशासन, अलङ्कारचूड़ामणि और निघण्टु। वि. सं. १२२९ में हेमचंद्र परलोकगामीहुये।

हेमचंद्र वनर्जी (बंगलाकवि)–ये हाईकोर्टके वकील बंगालके रहने वालेथे। बंगलाकाव्य इनका कहा हुआ उत्तमहै। स. ई. १९०३ में सिधारे।

हेमाद्रि पंडित (चतुर्वर्गचिन्तामणिके कर्ता)–यह पंडितजी तैलङ्ग या द्राविड ब्राह्मण प्रतीत होतेहैं। चतुर्वर्गचिन्तामणि इनका रचा ग्रंथ धर्मशास्त्रमें उत्तम है। यह दक्षिणदेशान्तर्गत देवगिरिके राजा महादेव भूपति के दर्बार में सर्वोपर कार्यकर्त्ताथे। अनेक विद्याओंमें प्रवीणथे, वाग्भट्टकृत अष्टांगहृदयसंहिता पर इन्होंने व्याख्या भी रचीथी। पं. वोपदेवके समकालीन होकर प्रायः वि. स. की १२ वीं शताब्दीमें हुये।

हेरोडोटस–Herodotus(फिरङ्गियोंका प्रथम इतिहासकार)-यह यूनानका रहनेवालाथा, और वहांके अन्यायी राजा लिडेमसके वक्तमें इसने एशिया, अफेरिका तथा यूरूपके अनेक देशोंमें भ्रमण करके भूमण्डलका इतिहास संग्रह कियाथा और जिन २ देशोंमें गया वहाँके लोगोंकी चाल ढाल तथा रहिन सहिनसे भी जानकारी प्राप्तकी थी। इस यात्रासे लौटकर हेरोडोटस यूनानमें आया और स्वदेशवासियोंकी अन्याई राजा लिडेमसके निकालनेमें मददकी लेकिन उनको कृतघ्नी पाकर यूनान छोड दूसरी जगह जारहा और ९ जिल्दोंमें संसार का इतिहास लिखा। प्राचीन इतिहासकारोंमें हेरोडोटस सब से अधिक विश्वासयोग्य समझाजाताहै लेकिन उसके लेखोंका अधिकांश अद्भुत रसमें हैं इस कारण उनमेंसे सत्यासत्यका निर्णय करना कठिन है। स. ई. से ४८४ वर्ष पूर्व जन्म और ७८ वर्षकी उम्रमें मृत्युहुई।

हैदरअली (मैसोरकानवाब)–मैसोर प्रदेशान्तर्गत जिलाकोलार के बुड़ीकोट नामक गाँवमें हैदर का जन्म स. ई. १७२२ में हुआ इसका बाप सारीके नवाब फतेमुहम्मदखाँके आधीन होकर कोलारका फौजदारथा और बुड़ीकोटमें रहिताथा। बड़े होकर हैदरअली मैसोरके राजा चिकाकृष्णराज के यहां मामूली सिपाहियोंमें भरती हुआ, बढ़ते २ सेनामें ऊंचापद पागया। स. ई. १७६२ में इसने मैसोरनरेश और उसके मंत्रीको मारकर निकाल दिया और आप मैसोरका नवाब बन बैठा।

पश्चात इसने विदनौरका किला विजय किया और वहांकी लूटसे मालामाल होगया । स. ई. १७३५ में माधवराव चतुर्थ पेश्वाने हैदरको परास्तकरके ३२ लाख रुपये वसूल किये और बहुत सा मुलकभी छीन लिया । स. ई. १७६६ में हैदरने मालावार तथा कैलीकट विजय करलिया और स. ई. १७७३-७४ में वह सब मुल्क जो स. ई. १७३५ में पेश्वाने छीन लियाथा पुनः जीता । ये बड़े बली, निर्दयी तथा रणकार्य्योंमें दक्षथा, इसने अपना राज्य बहुत बढ़ाया, स. ई. १७७२ में कुर्गभी फतेकर लिया । कुर्गजीतनेके मौकेपर ७०० निरपराध मनुष्योंके शिरकटवाये जिनमेंसे दो अत्यंत स्वरूपवानचेहरे जब हैदरके पैरोंपर काटकर रक्खेगये तौ उनकोदेख उम्र भरमें केवल इसीदफे उसको दया आई एवं हुक्म दिया कि " अधिक लोहूमत वहाओ " । स. ई. १७८०-८२ में अंग्रेजोंसे हैदरका मुकाविला हुआ लेकिन वह नहीं हारा । ८० वर्षका होकर स. ई. १८८२ में मरगया । पुरानियानामक महाराष्ट्र ब्राह्मण हैदरका वज़ीर सुयोग्य पुरुष था । हैदरका बेटा टीपू सुलतान उत्तराधिकारी हुआ ।

हैने मैन (सैमुयल हैनेमैन–Samuel Hahnemann)–यह जर्मनीके रहनेवाले प्रसिद्ध हकीमथे । इन्होंने होमियो पैथिक चिकित्सा अन्वेषणकीथी । इनका बाप तसवीर खींचनेका पेशा करताथा और इन्होंने लीपजिगमें रहिकर डाक्टरी पढ़ीथी । स. ई. १८३५ में इन्होंने एक फरासीसी औरतसे विवाह किया और फ्रौंसकी राजधानी पैरिसमें जा रहे जहाँ अंतसमयतक इनकी बड़ी प्रतिष्ठा रही । स. ई. १७५५ में जन्मे, स. ई. १८०४ में मरे ।

हेमूं वक्काल–इनका असली नाम चंपतरायथा. भाटलोग अग्रवालोंकी वंशावली बयान करनेमें इनको अग्रवाल वैश्यबतलाते हैं लेकिन इतिहासोंके अनुसार ये ढूंसर बनियेंथे । पहिले यह दुकान करतेथे पश्चात् सलीम सूरने पेठों तथा बाजारोंका दारोगा इनको नियत कियाथा । मुहम्मद आदिलशाहसूरने गद्दीपर बैठकर इनको अपना वजीर बना लिया और राज्यकाजका सबबोझ इन्हींको सौंपदिया । जब बादशाह अकबर दिल्लीके तख्तपर बैठा तौ हैमूंने क्रमशः दिल्ली तथा आगरेका घेरा किया और कई दफे विजय प्राप्त करनेके बाद हारे । वैरमखाँ खान खाना इनको पकड़कर अकबरके साम्हने लेगया और कहा कि आप अपनी तलवारसे इसकाफिरका शिर धड़से जुदा करदीजिये । अकबरदयालु तौ थाही एवं उसने अपनी तलवार हैमूंके शिरमें छुआकर छोड़दिया लेकिन वैरमखाँने तुरंत हैमूंके टुकडे बखेरदिये । हैमूं बड़े वीर और चतुरथे ।

हैवलाक (सरहेनरी हैवलाक–Sir Henery Havelock)–इनके बापडरहम (इङ्गलैन्ड) के रहिनेवाले एक सौदागरथे । लन्डनमें इन्होंने शिक्षा पाई थी और स. ई. १८१५ में अंग्रेजी सेनामें भरती हुये थे । स. ई.

१८२३ में हिंदोस्तानको आये और अफगानिस्तान तथा सिक्खोंकी लड़ाइयों बड़ी वीरतासे लड़े। सन् ५७ के गदरमें लखनऊ तथा कान्हपुरमें इन्होंने बागियोंको परास्त किया। लखनऊ रेजीडेन्सीमें घिरेहुये अंग्रेजोंके प्राण इन्होंने बड़ी वीरतासे लडकर बचाये, उक्त अवसर पर इन्होंने ४०० सेनासे ५० हजार बागियोंको परास्त कियाथा लेकिन अंतमें आप भी घायल हुये और कुछही दिन बाद मरगये। जब इनकी वीरताकी रिपोर्ट इङ्गलैन्ड पहुंची तो पार्लियामेंटने प्रसन्न होकर अँग्रेजी सेनामें मेजर जनरलका ओहदा तथा १ हजार पौंड वार्षिककी पेन्शन इनको दी, लेकिन जब यह खबर हिंदोस्तानमें आई तो हैवलाक साहब मरचुके थे। स. ई. १७९५ में जन्मे, स. ई. १८५८ में लखनऊमें मरे।

हैस्टिङ्गज (वारेन हैस्टिङ्गज--Warren Hastings)–इन्होंने वोरसेस्टर शायर (इङ्गलैन्डके) एक प्राचीन प्रतिष्ठित वंशमें जन्म लेकर वेस्टमिनिस्टर इस्कूलमें शिक्षा पाई थी। स. ई. १७५० में क्लार्कके पदपर नियत होकर ईस्ट इन्डिया कम्पेनीकी चाकरीमें हिंदोस्तानको आये। फार्सी तथा हिंदोस्तानी भाषाभी खूब जानतेथे और बढ़ते २ गवर्नर जेनरलके पदको प्राप्त हुये थे। इन्होंने हिंदोस्तानमें अंग्रेजी अमलदारी बहुत कुछ बढ़ाई। स. ई. १७८५ में नौकरी छोड़ इङ्गलैंड चले गये और वहाँपर उन अत्याचारोंके कारण, जो हिंदोस्तानमें रहिकर इन्होंने काशीनरेश चेतसिंहपर तथा अवधकी बेगमोंपर किये थे, पार्लियामेंटने इनपर मुकद्दमा कायम किया। ८ वर्ष पर्य्यंत मुकद्दमा चला, अंतमें स. ई. १७९५ की साल निरपराध समझ साफ छोड़दिये गये। उक्त मुकद्दमेमें इनका बहुत खर्च हुआ था जिससे गरीब होगयेथे लेकिन थोड़े ही दिनबाद पार्लियामेंटने ४ हजार पौंड वार्षिककी पेन्शन इनको दी। स. ई. १७६६ मे जन्मे, स. ई. १८१८ में मरे।

होमर–(Homer) इस यूनानी कविकें देश, काल तथा चरित्रोंकी निस्बत ठीक हाल ज्ञात नहीं होता। अनेक विद्वानोंकी सम्मति है कि यह सिमर्ना की रहनेवाली एक अनाथ लड़कीके पुत्र थे। प्रसिद्ध ग्रंथ "इलियड" तथा "ओडेसी" इन्हीके रचेहुये हैं उक्त ग्रंथोका अनुवाद अंग्रेजीमें कविपोपने किया है। होमर अन्धे थे और इनसे पहिले यूरूपमें कोई दूसरा कवि नहीं हुआ। समय इनका स. ई. से प्रायः ८०० वर्ष पूर्व है।

होलराय (कविहोल)–मुगलसम्राट् अकबरके दीवान राजा हरवंशराय इनका सत्कार करतेथे। हरवंशरायने जि० बाराबंकीमें इनको कुछ जमीन दीथी जिसपर इन्होंने अपने नामका होलपुर गाँव वसायाथा। एक दिन गो० तुलसी दासजी होलपुरमें होकर निकले, होलरायजीने उनकी बड़ी आवभगतकी और उनके लोटेकी प्रशंसामें कहाकि–

"लोटा तुलसीदासको लाखटकाको मोल"।

गुसाँईजीने यह सुनकर कहाकि-

"मोल तोल कछु है नहीं लेउ रायकवि होल"। होलरायजीने उस लोटेकी मूर्तिके समान स्थापनाकी और जबतक जीते रहे उसकी पूजा करते रहे। उक्त लोटा होलपुरमें अबतक मौजूद है। होलराय वि. सं. १६४० में विद्यमानथे। ग्रामहोलपुर अबतक उनके वंशजोंके अधिकारमें है।

हंसराज (हंसराज निदानके कर्ता)–इनकी कविता श्लोक बद्ध अति अनूठी है। श्लोक ऐसे ललित हैं कि जिनके पढ़ने तथा श्रवण मात्रहीसे चित्तको आनन्द होताहै। यह बड़े वैद्यथे। विशेष हाल इनका नहीं मालूम।

ह्यूम (डैविडह्यूम--David Hume)–इस प्रसिद्ध इतिहासकारने वर-विकशायर(इङ्गलैन्ड)के एक सभ्य मनुष्यके घर जन्म लेकर एडिनबरो (स्काटलैन्ड)के विश्व विद्यालयमें शिक्षा पाई थी। स. ई. १७३४ में बृस्टल नगरके किसी प्रधान कार्य्यालयमें क्लार्क (लेखक) होगयेथे लेकिन काव्य रचनाकी ओर अधिक रुचि होनेके कारण थोडेही दिनोंबाद नौकरी छोड फ्राँसको चले गये। इन्होंने बहुतसी पुस्तकें रची थीं जिनमेंसे इङ्गलिस्तानका इतिहास मुख्य है। यह अनेक प्रतिष्ठित सर्कारी ओहदोंपरभी रहेथे, अंतमें थोडीसी पेन्शन पाकर अपनी जन्मभूमिमें आरहे। इनके बाप घर विकशायरसे स्काटलैंडकी राजधानी एडिनबरोमें जावसेथे और वहींपर स. ई. १७११ में डैविड ह्यूमका जन्म हुआ था। स. ई. १७७६ में डैविडह्यूम सिधारे।

ह्योईं थसङ्ग–(Hiuen Thsang)–यह चीनीपथिक बौद्ध साधू था। स. ई. ६२९ में चीनसे चलकर फरगाना, समरकंद, बुखारा तथा बल्ख होता हुआ हिंदोस्तानको आयाथा और इस देशकी चारों दिशाओंमें भ्रमण करके स. ई. ६४५ में चीनको लौटगया था। इसने अपनी यात्राके ग्रंथमें लिखा है कि "उन दिनों काबुलसे लेकर बंगालतक और हिमालयसे लेकर संहलद्वीपतक सर्वत्र देश छोटे २ राज्योंमें विभागित था। कश्मीर, मगध और उड़ीसाके सिवाय बौद्धमतकी दशा अन्य सब जगह गिरती हुई थी। भारतवासी मनुष्य सच्चे, विद्वान, शूरवीर, परिश्रमी तथा उद्योगी थे"।

ह्योईंथसङ्ग ने अपने यात्राके ग्रंथमें उस समयके अनेक छोटे २ राज्योंका भी, जिनके अब नामतक नष्ट होगये हैं, व्योरेवार सविस्तर वृत्तांत लिखा है। प्रत्येक राज्यके सम्बन्धमें उसकी सीमा सहित लम्बाई चौडाई तथा फसलों और फल फूलोंका हालभी लिखा है। मनुष्योंकी समाजिक और धार्मिक व्यवस्था और रहिन सहिन ढङ्ग चाल इत्यादिकाभी वर्णन किया है। संक्षिप्तः उक्त पुस्तकके देखनेसे भारतवर्षकी दशा जो स. ई. के सातवें शतकमें थी स्पष्ट मालूम होजाती है।

क्षेमकरण मिश्र (कवीश्वर)-यह सरवरिया ब्राह्मण ग्राम धनौली तहसील रामसनेही घाट जि० बाराबंकीके रहनेवाले थे। पिताका नाम आधार मिश्र, पितामहका लछीराम और प्रपितामहका नाम लाल मणि मिश्रथा। वि. सं. १८३५ में इनका जन्म हुआ, ७ वर्षकी अवस्थासे संस्कृत पढ़ना आरम्भकिया, कई बडे २ पंडित विद्वानोंसे विद्यापढी, पश्चात् बहुत दिनोंतक मथुरामें रहकर पिंगल शास्त्राध्ययन किया। यह संस्कृत तथा भाषा दोनोंहीमें कविता करते थे। संस्कृतमें श्रीराम रत्नाकर वृत्त, रामास्पद, गुरुकथा तथा आह्निक इनके रचे ग्रंथ हैं। भाषामें रामगीतमाला, कृष्णचरितामृत, पदविलास, वृत्त भास्कर, रघुनाथ घनाक्षरी, गोकुलचंद्रमा तथा कथानक नामके ग्रंथ इन्होंने रचे थे। इन्होंने अम्बाला, बरोडा तथा बम्बई आदिस्थानोंमें जाकर बहुतसा द्रव्योपार्जन कियाथा और गयाश्राद्ध, ब्रह्मभोज तथा ८ कन्याओंके विवाह धूमधामसे करनेमें खूब खर्च किया था। अन्तावस्थानें १४ वर्ष पर्य्यंत अयोध्यावास करके क्षेमकरणजी वि. सं. १९१५ की साल परमधामको सिधारे।

क्षेमराज श्रीकृष्णदास सेठ 'श्रीवेंकटेश्वर' स्टीम् प्रेस बम्बई. के मालिक)-आप साधारण रीतिसे अपना नाम खेमराज श्रीकृष्णदास लिखते हैं। आपके पिता श्रीकृष्णदासजी राजपुतानाके शेखावाटी प्रदेशमें चूरू नगरके रहनेवाले थे। जन्म आपका कार्तिक शुदी ८ वि.सं.१९१३में हुआ। लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, कल्याण (बम्बई) के मालिक सेठ गंगाविष्णुजी आपके बडे भाई थे। प्रायः ३० वर्षसे आप कुटुम्बसहित बम्बईमें रहते हैं और आस्तिकता, सरलता, व्यापारकुशलता तथा देशहित इत्यादि दुर्लभ गुणोंके उदाहरण हैं। आपका जारी कियाहुआ "श्रीवेंकटेश्वर समाचार" सप्ताहिकपत्र हिंदीके सर्व्वोत्तम समाचार पत्रोंमें है।

प्राचीन संस्कृत विद्या तथा मातृभाषा हिन्दीके उद्धारके लिये आपका पुस्तक प्रकाशनका व्यापार अत्यंत प्रशंसनीय है। इससे जगदुपकारके साथ २ लाखोंही रुपयेका नफा आपको हुआ है। हजारों संस्कृत तथा हिन्दीके दुष्प्राप्य प्राचीन और अर्वाचीन ग्रंथोंको छापकर तथा उनके तिलक रचवाकर और आवश्यकीय विषयोंपर नयेग्रंथ बनवाकर सर्व साधारणके लिये आपने ऐसी बड़ी सुलभता करदी है कि भारत भूमिमें पहिले की अपेक्षा अब बहुत कुछ विद्याकी वृद्धि देखनेमें आती है। बड़े २ राजे महाराजे बम्बई जानेके अवसरपर श्रीवेंकटेश्वर प्रेसमें पधारते हैं, सेठजी उनका सन्मान करना अपना सौभाग्य समझते हैं और वहभी सेठजीकी उचित प्रतिष्ठा करके सर्व साधारणको देश हितकी उत्तेजना देते हैं। सेठजी स्वधर्मप्रिय पुरुष हैं बडे नीतिनिपुण हैं। सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी आजदिन सं० १९६३ में तीन पुत्र और दो कन्याओंके पिता हैं। स्वास्थ्य अच्छा है और धन प्रतिष्ठा गौरव सुबुद्धि शान्ति सब कुछ प्राप्त है। ऐसेही उद्योगी सत्पुरुषोंका जीवन सफल कहाता है।

जीवन चरित्रस्तोम.

(मदनकोष)

परिशिष्टभाग।

आकलैंड (जार्ज एडिनलार्ड आकलैंड–(George Eden Lord Auckland)–स. ई.१७८४ में जन्मे।डरहमके बेरोनेट,विलियम एडिनके तृतीय पुत्रथे ई स.१८०६ में आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटीसें ग्रेजुएट हुये। लार्डमिन्टो गवर्नरजनरल हिंदकी बहिनेसे आपकी शादी हुईथी। प्रथम बहुत दिनोंतक आयरलैंडके चीफ सिक्रेटरीरहेथे। १८३६ से १८४२ तक गवर्नरजनरल हिंदके पदपर काम किया। १८४८ में इङ्गलैंडमें परलोकगामीहुये। आप बड़े योग्य शासकथे, माल विभाग का प्रबन्ध आपने प्रशंसनीय कियाथा। लेकिन रूसियोंके भयसे दोस्त मुहम्मद की जगह बृटिश गवर्नमेंटसे मित्रता रखनेवाले शाहशुजाको काबुलकी गद्दीपर बिठलानेके लिये अंग्रेजी फौज अफगानिस्तानमें भेजकर बैठेबिठाये जो अशान्ति आपने फैलाई उसके लिये आपका शासन इतिहासमें बदनामहै। अंग्रेजी फौज काबुल, कंधार तथा गंजनीपर अधिकार करके १८३९ में शाहशुजाको काबुलकी गद्दीपर बिठलानेमें समर्थ हुई लेकिन प्रजाका मन मुट्ठीमें नहीं आसका क्योंकि वह लोग शाहशुजाको नापसन्द करतेथे। १ वर्ष तो काम बेखटके चलागया लेकिन १८४१ में दोस्त मुहम्मदके पुत्र अकबरखाँके उकसानेसे अफगानिस्तानकी समस्त प्रजाने उपद्रव उठाया और अंग्रेजी फौजको जो केवल १६००० थी घेरालिया। सर विलियम मैकनाटन साहब सेनापति गोलीसे मारेगये और बड़ी खुशामद दरामदके बाद अंग्रेजी सेनाको हिंदोस्थान वापिसजानेकी आज्ञा मिली। लेकिन अफ़गानिस्तानमें रहिनेके कारण यह बीमार और जाड़ेसे कड़कड़ाती हुई सेना दूर नहीं पहुंचने पाई थी कि असंख्य अफगानोंने टूटकर बड़ी निर्दयतासे उसको नष्ट करडाला। केवल घायल होकर डाक्टर ब्रिडन (Dr. Brijdon) साहबने फटेहालों कई दिनके फाकेसे एक अधमरे टट्टूपर ज्यों त्यों भागकर जलालाबादके किलेमें खबर पहुंचाई कि १६००० फौजमें केवल मैंही बचाहूं। यह खबर सुनकर अफसरों और सिपाहीयोंकी आंखोंसे आंसू चलनेलगे और जहां २ यह खबर पहुंची सब

लोगोंने शोक मनाया। वास्तवमें यह शोक नहीं मिटसका जबतक कि लार्ड आकलैंडके उत्तराधिकारी लार्ड एलनबरोके शासनमें अंग्रेजी सेनाने काबुलपर चढ़ाई करके इस हत्याके बदलेमें अफगानोंके रक्तसे नदीनाले नहीं बहा दिये।

आलकट (कर्नैल यच. यस्. आलकट–Col H. S. Olcutt)–अमेरिकन सिविल युद्धमें बड़ी वीरतासे लड़े । युद्धविभागके स्पेशल कमिश्नर रहे, मैडमब्लेवैतस्कीकी थ्योसोफिकल सोसाइटी स्थापन करनेमें आपहीकी मददसे सफल हुई थी। सं. ई. १९०५ में बूढ़े हैं और थ्यासोफिकल सोसायटियोंके प्रधान हैं।

एडीसन (टी. ए. एडीसन प्रसिद्ध आविष्कार–T. A. Edison, the famons inventor) उत्तरी अमेरिकामें ओहियोस्टेटके मिलन नामक नगरमें ११ फरवरी, १८४७ की साल जन्मे। अब न्युजर्सी (उत्तरीअमेरिका)में रहते हैं आपके पिताके वंशका निकास हालैंडका था और माताके वंशका निकास स्काटलैंडका। आप प्रथम टेलीग्राफका काम करतेथे । पश्चात् १८७१ से ७६ तक LawGold Indicator कम्पनीके सुपरिन्टेन्डेन्ट रहे। निम्नस्थ आविष्कार आपने कियेहैं:-

1. Gold and stock Printing टेलीग्राफ
2. System for Quadruplex and sextuplex Teligraphic transmission.
3. The carbon Telephone Transmitter. (दूर बैठे बातचीत करने का यंत्र)
4. The Microtacimeter for detection of small variations (गर्मी और सर्दीके सूक्ष्मतर अन्तर जाननेका यंत्र)
5. The Aerophone and Magophone for amplifying and magnifying sounds (इस यंत्रके द्वारा अत्यंत मंदस्वर भी भारी आवाजके समान सुनाई देता है)
6. Electric pen (बिजलीका कलम)
7. Electric Railway (बिजलीकी शक्तिसे चलनेवाली रेलवे)
8. Kinetograph.
9. Phonograph (इस यंत्रमें बातचीत अथवा राग भरकर रबड़की नलियोंद्वारा सुनाया जाताहै।
10. The Incandescent Light System (बिजलीकी रोशनी)

आसफजाह दशहजारी सिपहसालार खानखाना बहादुर–

(मुगल सम्राट शाहजहाँके मुख्यमंत्री)—आपका असली नाम ख्वाजा अबुलहसन था। आपकी बेटी मुमताज महल (ताजबीबी) की शादी शाहजहाँ (स. ई. १६२८-५८) के साथ हुईथी और बादशाह जहांगीरकी बेगम नूरजहाँ आपकी छोटी बहिन थी। बहिनके साथ आपका कुछ बिगाड़था, इसलिये पहिले कुछ समय तक आपको बादशाहका कोपभाजन बनना पड़ाथा। फिर आपको बंगालकी सूबेदारी दीगई। पश्चात् मुख्य मंत्रीके पदपर तरक्की हुई और अटककी जागीर मिली। सिपह सालार महाबतखाँने स.ई.१६२७-२८में जब बादशाह जहाँगीरको कैदकर लियाथा तो उस अवसरपर आसफजाहने अटकके किलेमें भाग कर पनाह लीथी। महावतखाँने किलेको घेरकर इनकोभी पकड़ लिया लेकिन शीघ्रही पंजाबकी सूबेदारीपर भेजदिया। उन्ही दिनोंजहाँगीरका देहांत होगया और भाइयोंके मुकाबलेमें इन्होंने शाहजहाँकी तख्तपानेके लिये मदद की शाहजहाँने तख्तपर बैठकर इनको अपना मुख्य मंत्री बनाया और ६ हजारी मनसब तथा "आसफखाँ" का खिताब दिया। पश्चात् "आसफजाह" का खिताब तथा दसहजारी मनसब इन्होंने पाया। फिर बीजापुरके नवाब आदिल शाहको परास्तकरके इन्होंने सिपहसालार खानेखाना बहादुरकी उपाधि प्राप्त की। यह बडे विद्वानथे। दिल्ली आगरा और कश्मीरमें इनके बड़े २ मकानथे। लाहौरमें मरे और जहाँगीरकी कबरके पास दफनाये गये। ढाई करोड रु० की जवाहरात छोड मरेथे।

एलजिन (विक्टर अलेकजंडर ब्रूस, यम. ए, के. जी, जी. सी. यस. आई., जी. सी. आई. ई., पी. सी., यल. यल. डी., डी. सी. यल., एलजिन और किन कारडाइनके ९ वें अर्ल—

१६ मई, स. ई. १८४९ की सालजन्मे। आपके पिता अष्टम अर्ल आफ एलजिन १८६२-६३ में वायसराय हिंदथे और उनका देहांत हिमालय पर धर्मशाला नामक स्थानमें हुआथा। हमारे चरित नायककी शादी १८७६ की साल सौथेस्कके अर्लकी बेटी कान्स्टैन्ससे हुई थी। एटन और बैलियलकालिज आक्सफोर्डसे यम. ये. की परीक्षा पास की। १८८६में विकटोरिया महारानीके घरेलू विभागके खजांची तथा कमिश्नर तामीरातका ओहदापाया। थोड़ेही दिनोंबाद फायफशायरके लार्डलफतिनेन्तका पद आपको मिला। १८९४ से ९९ तक वासराय हिंदके उच्च पदपर रहे। सहवास सम्मति आईन आपहीके शासनमें जारी हुआ लार्ड एलजिन १९०५ में विद्यमानहैं। प्रसिद्ध लार्ड ब्रूस आपके पुत्रहैं। एनीविसेन्ट (सेन्ट्रल हिंदूकालिज बनारसकी संस्थापक) आप थ्योसोफिकल सोसाइ-

समुराई वंशमें। स.ई.१८४२की साल जन्मे फ्रान्सदेशमें शिक्षापाकर फ्रांस दर्बारमें स्थित जापानी राजदूतके सैनिक अफसरका पद पाया। आपके वंशमें वीरताका काम पहिलेहीसे होता आताहै।आप बड़े कुरूप लेकिन लम्बे चौड़े हृष्टपुष्ट हैं स्त्री आपकी सुंदर, सुशीला, सुशिक्षिता, गर्वहीन है और अमेरिकाके एक कालिजमें शिक्षा प्राप्तकियेहुये हैं। फ्रांससे लौटनेपर जापानके सेनाविभागमें एक ऊंचा पद आपको दियागया।कुछ समय पीछे आपको बुद्धिमान देखकर जापानी सरकारने यूरोपके देशोंसे युद्धपद्धति सीख आनेके लिये भेजा।यहांसे लौटकर यमागाटाकी आधीनतामें आपने जापानी सेनाका प्रशंसनीय सुधार किया। पश्चात् क्रमशः युद्ध विभाग और जलसेनाके प्रधान रहे। शिक्षाविभागके मंत्रीका भी काम किया। १८९४ में युद्धविभागके मंत्रीका पद पाया। चीन जापानके संग्रामके समय जापानी सम्राटसे आज्ञा लेकर युद्धमें सम्मिलित हुये और अपनी९० हजार सेनाके साथ बड़ी बहादुरीसे लडकर पोर्ट आर्थर टिलबर्ड और टिलिनवानमें अधिकार किया चीनयुद्धके पश्चात् आप जापानी साम्राज्यके अत्यंत प्रिय कर्मचारी होगये पहिले कौन्ट, फिर मार्कुयसकी उपाधि पाई और जापानी साम्राज्यके सर्वोच्च सेनाध्यक्षका पद पाया। सेनाको सुयोग्य बनानेके लिये सैनिकोंपर कड़ी दृष्टि रखतेहैं और अन्याय नहीं करतेहैं। निम्नकर्मचारी तथा सैनिक आपपर विश्वास रखतेहैं और आदरणीय मानते हैं। रुस जापानयुद्धमें जो १९०४-०६ में हुआ आपहीने पोर्ट आर्थर, मंचुरिया, मुकदन इत्यादिको फतेह करके रूस जैसे बृहत् साम्राज्यकी सेनाके धुरें उड़ादियेहैं जिससे दुनियांभरको रूसियांको परास्त होते देख दांतोंमें उंगली दाबना पड़ी।

कर्ज़न (जार्ज नैथेनियल कर्जन, यम.ए.,जी.यम. यस. आई.,जी. यम. आई. ई., पी. सी., यफ्. आर. यस., जे. पी., डी. यल., केडिल्सटनके प्रथम बैरन (George Nathaniel Curzon, M.A., G.M.S.I, G.M.I.E., P.C., F.R.S., J. P., D. L., 1st Baron of Kedleston)— ११ जनवरी, स ई. १८५९ की साल स्कार्सडेल तथा ब्लाश्वीके चतुर्थ बैरन रेवरेन्ड ऐल्फ्रेड नैथेनियल होल्डेन कर्जनके घर केडिल्स्टन (आयरलैंड) में जन्मे। एटन और वैलियल कालिज आक्सफोर्डमें यम. ए. तथा डी. यल. की परीक्षायें उत्तीर्णकीं। १८९५ में वाशिङ्गटन (अमेरिका) के एक रईसकी परम सुंदरी बेटी मेरी विकटोरियानामकसे शादी की। आप पहिले ब्रिटिशगवर्नमेन्टकी सेवामें १८८० की साल यूनीयनके प्रेसीडेन्ट हुयेथे। १८८५ में मुख्य आमात्य लार्ड सालिसबरीके मंत्रीके प्रायवेट उपमंत्रीका पद पाया और उसी साल डर्बी शायरकी तरफसे पार्लियामेन्टकी मेम्बरीके लिये कोशिश की। १८९१ से ९२

तक उपमंत्री आफ स्टेट रहे। १८९५ से '९८ तक विदेशी मामलातके उपमंत्री आफ स्टेटके पदपर काम किया और मध्य एशिया, ईरान, अफगानिस्तान पामीरपर्वत स्यामद्वीप, इन्डो चायना तथा कोरियामें भ्रमण करके पूर्वीय देशोंका अनुभव प्राप्त किया तथा राजकीय भौगोलिक सभाकी तरफसे सोनेका पदक पाया। १८८३ में लोदियन प्रबन्धका इनाम (Iothian essay prize) और १८८४ में आर्नल्ड प्रबन्धका इनाम (Arnold essay prize) भी आपको मिलाथा। १८८३ में आलसोल्स कालिज आक्सफोर्डके मेम्बर हुये और १८८६ से ८९ तक सौथ पोर्ट (लंकाशायर) की तरफसे पार्लियामेन्टके मेम्बर रहे। १८९९ से १९०५ तक वायसराय हिन्दके पदपर नियुक्तरहे। यह पद इस समय पृथ्वीके राज्यकर्मचारियोंमें सर्वोच्च गिनाजाताहै। आपके शासनमें इस देशमें निरन्तर अकाल और महामारी फैलीरहीहै लेकिन आपने देशके इन दोनों शत्रुओंका प्रबन्ध भी प्रशंसनीय कियाहै। यूनीवर्सिटी कमीशन, पुलिस कमीशन, आबपाशीकमीशन, कृषिकमीशन आदि कई कमीशन नियत करके और तिब्बतको शान्तिमिशन, काबुलको राजनैतिक मिशन और ईरानको व्यापारी मिशन भेजकरके आपने साम्राज्यकी सीमा दृढ करने गवर्नमेण्टका बल प्रभाव बढ़ाने और अनेक प्रकारसे प्रजाका हित साधन किया। रेलवे आपके समयमें बहुत बढीहै, यूनीवर्सिटी ऐक्ट जारी हुआहै प्रजापरसे कई कर घटाये गयेहैं, किसानोंके हितकर २।३ आईन पास हुयेहैं, सैनिकोंका वेतन बढ़ाया गयाहै और चुपकेसे कई देशी राजाओंने राज्यसे इस्तीफाभी देदियाहै। राजनीति आपकी विलक्षण है और आप अनुभवी विद्वान तथा सुप्रसिद्धवक्ता हैं। भाषण आपके माधुर्यतासे भरपूर होतेहैं। साम्राज्यको दृढ करने और गवर्नमेण्टका दबदबा बढ़ानेके साथ २ प्रजाका हित करनेमें आप अपना कर्तव्य समझतेहैं. १९०२ में राजराजेश्वर एडवर्डसप्तमके राज्याभिषेकके अवसरपर आपने दिल्लीमें एक प्रभावोत्पादक बृहत् दर्बार कियाथा जो इतिहासमें अद्वितीय है। आपके शासनमें नहरें, रेलवे, सड़कें अस्पताल और बार बढानेके लिये करोड़ों रुपयेकी मंजूरी दीगई। मुसाफिरोंके आरामकी बातें सोचनेके लिये रेलवे बोर्ड नियत कियागया। शिक्षा विभागके लिये डैरेक्टर जेनरलका पद स्थापन किया स्कूलमास्टरों, पुलिसवालों और सेक्रेटेरियट आदिके क्लर्कोंका वेतन बढ़ाया। फौज बढ़ाई। सेनापद्धतिका संशोधन किया। काबुल तथा तिब्बतके पड़ोसी राज्योंसे सीमा दृढ करनेके लिये मेलझोल बढ़ाया। राजा प्रजाकी सुविधाके लिये आसामकी चीफकमिश्नरीमें बंगालका कुछ भाग मिलाकर नई लफटिनेन्ट गवर्नरी नियत की। भारतके शिल्प व्यापारको असाधारण उत्तेजना दीगई शिल्प व्यापार सम्बन्धी एक नया विभागभी स्थापन कियागया पूसामें कृषिका-

लिज खोला। प्राचीन स्थानोंकी रक्षाके लिये भी एक नया विभाग स्थापन किया.डाक,तारनमक इत्यादि विभागोंका महसूलघटाया५०लाख पौंडसे अधिक लगान माफ किया। किसानोंके करका बोझा घटाया ३ करोड़ रुपया ब्याजका छोड़ा। इस प्रकार हमारे दयालू वायसरायने अनगिनती सुधार किये और २० करोड़ रुपयेसे अधिकभारतकी प्रजाका कर अपने शासनमें घटाया यह सब करनेपर भी बड़ी भारी प्रशंसाकी बात यह है कि, सर्कारी आमदनी घटनेके बजाय बढ़ी और खजानेमें बचत रही। लार्ड कर्जनकी राजनीति अत्युच्चश्रेणीकी है। आप राजा प्रजाके सच्चे हितचिन्तक हैं आपसरीखा दूसरा वायसराय हिंदोस्थानमें नहीं आया। स. ई. १९०५ में इस्तेफा देकर विलायत चलेगये। निम्नस्थ ग्रंथ आपके रचेहुये हैं:-1. Russia in Central Asia (1889) 2. Persia and the Persian Question (1892), 3. Problems of the Far East (1894).

किचनर (हर्वर्ट होरे शियो किचनर, जी. सी. बी., जी. सी. यम. जी., लार्ड of खर्तुम—Horatio Herbert Kitchner, G. C. B., G. C. M. G., 1st Baron of Khartum)-स. ई. १८५० की साल आयरलैंडमें जन्मे। आपके पिता यच. यच. किचनर ब्रिटिशसेनामें लफटिनेन्ट कर्नैलथे। वुलविच नगरकी Royal marine Acadamy नामक पाठशालामें शिक्षा पाकर रायल इञ्जिनियर हुये उन्नतिकरके १८९६ में मेजर जेनरलके पदपर पहुँचे और १९०० में दक्षिणी अफरीकामें वृटिश सेनाके कमान्डर इन चीफ हुये। आप वीरताकी मूर्तिहैं, युद्धकौशल आपका अलौकिकहै। आतंक इतना है कि सैनिक आपके नामसे कांप उठतेहैं, ऐसोडाके युद्धमें फरासीसोंको परास्त करके मिसरमें अँगरेजोंका विजयघंट आपहीने बजायाहैखर्तूमको विजय कर अंग्रेजोंकी कीर्तिको आपहीने उज्ज्वल किया है जेनरल डनके वधका बदला आपहीने लियाहै। लार्ड रावर्टसके इङ्गलैंड चलेजानेपर ट्रांसवालका विजय भी आपहीने कियाहै। संक्षिप्त आप मिसर और दक्षिणी अफरिकामें वृटिश राज्यके बढ़ानेवालेहैं। ऐसी प्रशंसनीय राजसेवाके उपलक्षमें (१) वृटिशराज्य तथा प्रजाने आपका सत्कार किया है (२) पार्लियामेन्टने खोदके आपकी स्तुति कीहै (३) सम्राट एडवर्ड सप्तमके साथ भोजन करनेका सम्मान् आपको मिला है (४) एक लाख रुपाया इनाम आपको दियागया है (५) जी.सी.बी., जी.सी. यम. जी., और लार्ड आफ खर्तूमकी उपाधियें आपको

दीगईहैं (६) १९०२ की साल भारतके कमांडरइन चीफ अर्थात् प्रधान सेनाध्यक्षका उच्च पद आपको दियागयाहै। नई सैनिक योजना आपहीके समयमें हुई है। १९०५ में अब ५५ वर्षकेहैं लेकिन् शादी नहीं कीहै। आप शिक्षाप्रचारकेभी समर्थक हैं। गार्डन्कालिज़ खर्तुम आपहीका स्थापितहै।

कार्न वालिस (चार्लस) मार्कुयस आफ-कार्नवालिस- Charles, Marquess of Cornwallis) -इङ्गलैंडके एक प्रतिष्ठित अमीर खान्दानमें स.ई. १७३८ की साल जन्मे। एटन और कैमबृजके कालिजोंमें शिक्षा पाई और पिताके मरनेपर अर्ल आफ-कार्नवालिसका खिताब पाया। १७५८ में बृटिश सेनामें भरती होकर कैप्टिन हुए और शनैः२ उच्च पदपर पहुँचे, १७७६ की साल उस युद्धपर जो अमेरिकाकी रियासतोंने संयुक्त होकर स्वाधीनता प्राप्तकरनेके लिये बृटिश गवर्नमेंटसे ठानाथा भेजेगये।इस युद्धके अन्तर्गत अनेक छोटीमोटी लड़ाइयोंमें आपने विजय प्राप्त की लेकिन अन्तको यार्कटाउनकी लड़ाईमें संयुक्तरियासतोंके कमांडर-इन चीफ जेनरल वाशिंटनसे परास्त होगये। १७८६ से ९३ तक हिंदोस्थानके कमान्डर-इन- चीफ तथा गवनर्र जेनरल रहे। आपके शासनमें बंगलौर विजय हुआ, कलकत्तेमें निजामत सदर- अदालत स्थापिहुई, प्रत्येक जिलेमें कलेक्टर और जज नियुक्तहुए, जमीन्दोरों द्वारा जमाबन्दी वसूल करनेका सदैवके लिये दृढ प्रबन्ध कियागया और १७९०-९२ में द्वितीय मैसोर युद्ध हुआ जिसमें मैसुरके टीपू सुलतानने हारकर युद्धके खर्चका ३ करोड़ रुपया दिया और उसका आधा राज्य अंग्रेजों तथा उनके साथी मरहटों और हैदराबादके निजामने आपसमें बांटलिया; इस युद्धमें बडी सज धजसे लार्ड कार्नवालिस स्वयं संयुक्त हुएथे जिससे औरंगजेबके समयका रसद इत्यादिका प्रबन्ध याद आताथा। कई महीने पीछे शासनकी अवधि पूरी होनेपर इङ्गलैंड वापिस गये और मार्कुयसका खिताब पाया। उस समय हिंदोस्थानमें अंग्रेजी राज्य केवल बंगाल आसाम उत्तरीयसर्कार और बम्बई तथा मदरासके निकट वर्ती समुद्रतट कई स्थानोंपर था। पश्चात् जब अनेक युद्धोंके खर्चसे जो निरन्तर लार्ड वेलिजली गवर्नर जनरल हिंदके १० वर्षके शासनमें होतेरहे, अंग्रेजी खजाना खाली होगया तो ईस्ट इन्डियाकम्पेनीके डैरेक्टरोंने दूसरीदफे आपको गवर्नर जनरल नियत करके हिंदोस्थानमें भेजा और आज्ञा दी कि जिस्तरहहोसके युद्धकी अग्नी शान्तकरना। हिंदोस्थान पहुंचनेसे केवल १० हफ्ते पीछे १८०५ की साल पश्चिमोत्तरदेश (संयुक्तप्रान्त) में दौराकरतेहुए गाजीपुरमें ज्वरसे लार्ड कार्नवालिसका देहान्तहुआ।

कैलासचंद्र शिरोमणि भट्टाचार्य, पं. महामहोपाध्याय-आप संस्कृत कालिज बनारसमें सीनियर प्रोफेसरहैं । स. ई १९०४ में अधिक वृद्ध होगयेहैं, पालकीपर सवार होकर कालिजमें पढाने आतेहैं । १८२९ में पं. घनश्याम सार्वभौम भट्टाचार्य बंगाली ब्राह्मणके घर जिला वर्दवानमें जन्में । आपकी समान न्यायदर्शनका ज्ञाता विद्वान् इस समय हिंदोस्थानमें विरलाही होगा । " सूत्रकी व्याख्या " नामक पुस्तक आपकी विरचित है । बनारस कालिजके मासिकपत्र " पंडित " में आपने संस्कृतके अनेक प्राचीन ग्रंथ सम्पादन करके छपवायेहैं । गवर्नमेंटने पं. महामहोपाध्यायकी उपाधिसे आपको विभूषित कियाहै । रहिनसहन पुराने ढंगकाहै ।

कृष्णचन्द्रसिंह-(महाराजा नदिया) आपके बापका नामरघुरामथा महाराजाका खिताब आपको मुगल बादशाह दिल्लीने दियाथा । काशीसे पंडित बुलाकर आपने वाजपेय तथा अग्निहोत्र यज्ञ २२ लाख रुपयेके खर्चसे कियेथे यज्ञके अन्तमें पंडितोंने आपको "अग्निहोत्री वाजपेयी श्रीमन्महाराज राजेंद्र" की उपाधि प्रदान की थी । नदिया (नवद्वीप) आपके समयमें न्यायदर्शनकी यूनीवर्सिटी गिनाजाताथा। उन सब छात्रोंके लिये जो नदियामें दूर २ से पढनेको आतेथे आपने छात्रवृत्तियें नियतकी थीं । पंडित विद्वानोंको हजारों जागीरें तथा मिल्कें आपने दी थीं । बंगालमें अबतक प्रसिद्धहै कि"जिसने कृष्णचंद्र सिंहसे दान नहीं पाया वह ब्राह्मणही नहीं" । आप संगीत तथा शिल्पविद्याके प्रचारकथे ज्ञानवापीकूप बनारसकी सीढियें आपने बनवाई थी । दो लाख रुपयेके खर्चसे पितृश्राद्ध कियाथा। बंगालमें जगद्धात्री पूजा जो प्रतिवर्ष अक्टूबरके महीनेमें हुआ करतीहै । आपहीकी जारीकीहुई है । १७५७ में पलासीके युद्धके अवसरपर अंग्रेजी जेनरल लार्ड क्लायबको मदद देकर आपने राजेंद्र बहादुरकी उपाधि पाईथी । ७० वर्षकी उम्रमें परलोकगामीहुये और महाराजा शिवचंद्रसिंह आपके उत्तराधिकारी हुये । तंत्रसार ग्रंथके रचयिता तथा बंगालमें कालीपूजाका प्रचार करनेवालेताजक पंडितकृष्णानन्द सार्वभौम उपनाम आगमवागीश आपहीके दर्बारमें थे । आनन्दमंगल" और विद्यासुंदर" नाटकोंके करता पं० भारतचंद्रभी आपहीके दर्बारको सुशोभित करतेथे ।

कृष्णराजेंद्र ओडेयर,महाराजा बहादुर, जी. सी. यस. आई.(मैसूरनरेश) आप महाराजा चामराजेंद्र, जी. सी. यस. आई. के पुत्र हैं । स. ई. १८८४ में जन्में । १८९५ में पिताके परलोकगमनकरनेपर मैसूरके गद्दीपर बैठे । वरदवानके

झाला राना विनयसिंहकी राजकुमारीसे विवाह किया। १९०२ की साल मैसूरमें दर्बार करके लार्ड कर्जन वायसराय हिंद्रने राज्यके पूर्णअधिकार आपकोसौंपे नाबालिगीकी हालतमें राज्यप्रबन्ध आपकी माता वाणी विलास और आपके पिताके दीवान सरशेषाद्रि ऐअर करतेरहेथे। राज्याभिषेकके स्मारकमें एक शिल्पविद्यालय और एक अनाथालय राजधानी मैसूरमें खुला।,इस राज्यमें ३० हजार वर्गमील भूमिहै, प्रायः ५० लाख आबादीहै और आमदनी प्रायः दो करोड रुपया वार्षिक है। यह राज्य एक आदर्श देसी राज्य है,अंग्रेजों की वस्ती इसमें बहुतहै और यहांका प्रबन्ध उत्तमहै। सालभरमें एक दफे राज्यकी प्रजाके, ४०० चुने हुये प्रतिनिधि शासन परिपाटीकी जाँच करके त्रुटियोंको दूर करतेहैं। अपने पिताके किये हुये सुप्रम्बन्धोंमें आपने कुछ हस्तक्षेप नहीं किया है।

गंगाधर शास्त्री तैलंग, पं० महामहोपाध्याय, स.ई. १८५०में काशीमें जन्मे आपके पिता नरसिंहशास्त्री तैलंग ब्राह्मण घरबार सहित बंगलौरसे काशीमें उठ आयेथे। पं० राजारामशास्त्री और बालशास्त्रिसे आपने विद्या पढ़ी।काव्य षट्दर्शन में अपूर्व योग्यता रखते हैं। संस्कृत श्लोक अच्छे बनातेहैं। यज्ञ भी कराना जानते हैं अनेक शिष्योंको पढ़ाकर आचार्य्यपरीक्षा पास कराई है। गवर्नमेंटने अपार विद्याके कारण आपको पं० महामहोपाध्यायकी उपाधि दीहै। नित्यनैमित्तिक कर्मानुष्ठानसम्पन्न सदाचारी ब्राह्मण हैं। रहन सहन पुराने ढंगका है। कई पुत्रोंके बाप हैं। वाचस्पति मिश्रकृत "न्यायभाष्य" और जगन्नाथपंडितराजकृत "रसगंगाधर" का सम्पादन आपने किया है। शाश्वतधर्मदीपिका नामक ग्रंथ भी आपहीका संग्रहीत है। संस्कृतकालिज, बनारसके मासिकपत्र "पंडित" को लेखोंद्वारा सहायता देतेहैं। संस्कृतकालिज, बनारसमें प्रोफेसरका पद आपको प्राप्तहै। १९०५ में अधिक पठन पाठनके कारण कुछ अशक्तसे होरहेहैं।

ग्रिअर्सन(—जी. ए. ग्रिअर्सन, बी. ए., सी. आई.ई.-G.A. Grierson, B.A, C.I.E.) आयरलैंडकी राजधानी डबलिनके समीप ग्लेनाजिथेरी नामक कसबेमें ७ जून सन् १८५०को जन्मे। जार्ज ऐबरहेम ग्रिअर्सन, यल. यल. डी. आपके पिता थे। श्रूजबरी और ट्रिनिटी कालिज डबलिनमें शिक्षा पाकर बी. ए. और फिलासोफर आफ, डिवीनिटी (Ph. D.) के इम्तिहान पास किये। गणितशास्त्रमें बड़ी योग्यता (Honors,) प्राप्त की। हिन्दोस्थानीभाषा तथा संस्कृतके लिये वजीफा पातेरहे १८७३ की साल सिविल सर्विसमें नियत

होकर हिंदोस्थानको आये और असिस्टेन्ट कलेक्टर मैजिस्ट्रेटका पद पाया।१८८० में विहार प्रदेशमें स्कूलोंके इन्स्पेक्टर हुए। १८८७ में गयाके कायम मुकाम कलेक्टर हुए। १८९२ में हावड़ाके मैजिस्ट्रेट हुए। १८९६ में पटनाके ऐडीशनल कमिश्नर हुए और उसी साल सूबे बिहारमें अफीमके एजेन्टके पदपर बदलेगये। अनेक देशीभाषाओंकी जाँच पर्तालके लिये १८९८ में गवर्नमेन्टने आपको स्पेशलड्युटीपर नियत किया। अंतमें विलायत गये। लिन्हर्स्ट (किम्बरली) में रहतेहैं। १९०७ में जीवितहैं। नाना भाषाओंके सीखने और ग्रंथरचनेका अनुराग है।ग्रंथरचनाके उपलक्षमें गवर्नमेंटने आपको सी. आई. ई. की उपाधि दीथी। एशियाटिक सोसाइटी वंगालके, रायल एशियाटिक सोसाइटीके फोलकलोर सभा और कलकत्ता यूनीवर्सिटीके सभासद हैं। निम्नस्थ अंग्रेजीग्रंथ आपके विरचित हैं:-

१. मैथिली भाषाका व्याकरण.

२, बिहारप्रदेशकी, सात भाषाओंके व्याकरण.

३. " के किसानोंका रहन सहन.

४. हिंदोस्थानी काव्यका इतिहास.

५. विहारीकी सतसईका अनुवाद.

६. काश्मीरी व्याकरणपर प्रबन्ध.

गुरुदासबनर्जी जस्टिस,सर.,यम डी. ये. यल., नाइट (स्वधर्मानुरागी) स. ई.१८४४में जन्मे। अनेक महत् पुरुषोंके सदृश केवल ३ वर्षकी उम्रमें आपभी पितृहीन होगयेथे। पढाने लिखानेकी चेष्टा जननीको करनेको पडीथी जो ईश्वर से डरनेवाली होकर इस समयमें दुर्लभ थी। माताकी ईश्वरभक्ति और धर्मनिष्ठाका अक्षय प्रभाव आपके स्वभावपर पडाथा और इसी कारण पश्चिमी शिक्षासे उत्पन्न धर्मसम्बंधी उदासीनताके इस विचित्र कालमें आपका धर्माचरण सर्वथा निष्कलङ्क रहसका। कितने सन्तोषकी बात है कि, यह भाग्यवती माता अपने पुत्रको हाईकोर्टका जज होते देखनेको और स्वदेशवासियोंके चित्तमें सर्वोच्च प्रतिष्ठा व प्रेम पानेका अनुभव करनेको प्रचुरकाल तक जीवित रहीथी। प्रेसीडेन्सीकालिज कलकत्तेसे २१ वर्षकी उम्रमें आपने यम. ये. पास किया और एक ही वर्ष पीछे आईनकी बी. यल. परीक्षा उत्तीर्णकी। मट्रीकुलेशन और यफ. ये. की परीक्षाओंमें भी आपका नम्बर यूनीवार्सिटीभरमें प्रथम आयाथा। बी. यल. की परीक्षा पासकरनेके पीछे बेरहामपुर (बंगाल) में वकालत करना आरंभ किया और वहांके कालिजमें आईनके अध्यापकका पद पाया। १८७२की साल कलकत्ता हाईकोर्टमें वकालत करनेको आये। इससे

९ वर्ष बाद आईनकी डी. यल. परीक्षा उत्तीर्ण की और टागोर--ला--प्रोफेसरका पद पाया। नवयुवकोंके धर्म, शिक्षा, लोकाचार इत्यादिके हितसाधनका आपको दृढ अनुराग है। कई वर्ष तक सभासद रहनेके उपरान्त १८७९ की साल कलकत्ता विश्वविद्यालयमें सर्व्वोच्चस्थान जिसवक हिंदोस्थानी पहुँचसकतेहैं आपको प्राप्तहुआथा अर्थात् आप उक्त विश्वविद्यालयके वायस--चैनसेलर नियत कियेगयेथे। इस स्थितिमें जो बहुमूल्य सेवा आपने कीथी उसका स्मरण भविष्यमें होनवाली कई पीढीतक रहेगा। १८८७ की साल आप बंगालकी व्यवस्थापक सभाके मेम्बर बनायेगये और प्रौढ--स्वतंत्र निर्णयशक्ति सम्पन्न होनेके कारण विख्यात हुये। १८८८ में कलकत्ता हाईकोर्टके जजका उच्च पद आपको प्राप्तहुआ। इस स्थितिमें जो सफलता और ख्याति आपने प्राप्त की उसके लोक विदित होनेके कारण इस क्षुद्र निबन्धमें लिखनेकी आवश्यकता नहीं है। १९०२ में लार्ड कर्जनके विश्वविद्यालयसम्बधी कमीशनमें आपकी नियुक्ति हुई। दो हिंदोस्थानी मेम्बरोंमेंसे एक आप थे। यहां आपकी कर्तव्यपरायणता सत्यशीलता तथा सामर्थ्यका विकाश हुआ और जब कमीशनके सहाकारी फिरंगी मेम्बरोंसे आपकी राय विपरीत पडी तो बेधडक आपने भिन्नमतका लेख पेश करदिया जो यूनीवर्सिटीऐक्टकी कडाई बहुत कुछ घटानेमें समर्थहुआ। १९०४ की साल १५ वर्ष पर्य्यंत न्यायाधीशके आसनपर बैठकर ५९ वर्षकी उम्रमें आपने पेन्शन ली। जब वायसरायने ऐसी जल्द राज्यसेवासे अलग होनेका कारण पूछा तो आपने उत्तर दिया कि मेरी उम्र बहुत होनेआई, अब मुझको जीवनका शेषभाग शास्त्राध्ययनमें बिताना चाहिये और अपनेसे कनिष्ठोंकी उन्नतिका मार्गभी नहीं रोकना चाहिये।

अब आप अपना बल पौरुष जिसकी अभी आपमें कमी नहींहै पूर्ववत् अधिक स्वतन्त्रताके साथ परमात्मा तथा स्वदेशकी सेवामें लगावेंगे। गवर्नमेन्ट तथा प्रजा दोनोंहीका आपपर सदैव विश्वास रहाहै। राजराजेश्वरने आपकी सेवाको स्वीकार करके नायट (Kt.) की उपाधिसे आपको विभूषितकिया है। हालमें आपने शिक्षाविषयक एक पुस्तक रचीहै जो मनोहर और आभ्यासिक है। आपके चरित्रसे विदित होताहै कि, किसतरह कोई हिन्दू अत्युच्चश्रेणीकी शिक्षा पाकर अत्युच्चपद पाताहुआ, राजा तथा प्रजाका समान रीतिसे विश्वासपात्र रहकर निपुण सत्यधर्मावलम्बी हिन्दू रहसकताहै।

ग्रिफिथ (आर. टी. यच. ग्रिफिथ, यम. ए., सी. आई. ई.--R. T. H. Griffith, M. A., C. I. E.) कोर्सली (विल्टशायर) में २५ मई

१८२६ की साल जन्मे पिता आपके रेवरेण्ड आर. सी. ग्रिफिथ. यम. ए. कोसिह्ली (विल्टशायर) में रेक्टर (Rector) थे। क्विन्स कालिज आक्सफोर्डसे बी. ए. की परीक्षा १८४६ में और यम. ए. की परीक्षा १८४९ में उत्तीर्णकी। संस्कृतके प्रोफेसर यच. यच. विल्सन साहबसे आक्सफोर्डमें संस्कृत पढी। १८४९ से ५३ तक मार्लबरो कालिजके आसिस्टन्ट मास्टर रहे। १८५४ से ६२ तक क्वीन्सकालिज, बनारसमें अंग्रेजीभाषाके प्रोफेसर रहे। १८६३ से ७८ तक क्वीन्सकालिज, बनारसके प्रिन्सीपेल रहे। १८७० से ८५ तक पश्चिमोत्तर देश व अवध (युक्तप्रान्त) में शिक्षाविभागके डैरेक्टर रहे। १८८५ में गवर्नमेंटने सी. आई. ई. की उपाधिसे आपको विभूषित किया। पेन्शन पाकर एकान्त वासकी इच्छासे कोटागिरी (नीलगिरीपर्वत) पर पधारे। गवर्नमेन्टकी चाकरीमें आपका आतङ्क असाधरण था, धुरन्धर विद्वान् और न्यायशील होनेके कारण निम्न कर्मचारी आपपर विश्वास रखतेथे और आदरणीय मानतेथे। ऐसा महाविद्वान जो अंग्रेजी, संस्कृत, ग्रीक, लैटिन फार्सी आदि भाषाओंमें समान रीतिसे निपुण होकर कविता करनेमें विलक्षणशक्ति सम्पन्नहो, कठिनतासे प्राप्तहोसकताहै। बगीचा फुलवाड़ी लगाने, ग्रंथ अवलोकन करने और कवितारचनेकी ओर आपकी विशेष रुचि है। बनारस कालिजका मासिक संस्कृत पत्र "पंडित" आपका जारीकियाहुआ है, इसका सम्पादन भी ८ वर्ष पर्य्यंत आपने कियाथा। कुमारसम्भवका, यूसुफजुलेखाका, ऋग आदि चारों वेदोंका और सात जिल्दोंमें वाल्मीकीरामायणका अनुवाद अंग्रेजीगद्यमें और कृष्ण यजुर्वेदका अनुवाद अंग्रेजीगद्यमें आपने कियाहै। इसके सिवाय प्राचीन संस्कृत लेखोंके आशयपर औरभी कई पद्यमय अंग्रेजीग्रंथ आपने रचेहैं। स. ई. १९०६ में वृद्धहैं, शादी नहीं कीहै।

गोपालकृष्ण गोखले–बी. ये., सी. आई. ई. (राजनीतिविशारद पंडित स. ई. १८६६ की साल एक साधारण स्थितिके महाराष्ट्र ब्राह्मणके घर आपका जन्म हुआ। पिताका देहान्त आपकी बाल्यावस्थाहीमें होगया। प्रथम कुछ समय तक कोल्हापुरमें पढकर आपने एलफिन्स्टनकालिज बम्बईसे बी० ए० पास किया और एक नये स्कूलमें जो सार्वजनिकसभा पूनाकी तरफसे स्वदेश हितके लिये खोलागयाथा ७५) रु० मासिक पर नौकरी की। माता और ज्येष्ठ भ्राता आशामें थे कि शीघ्रही कोई उच्च पद आपको प्राप्तहोगा, आपका विचार भी स्वार्थरहित स्वदेशीकार्यसे बहुत दिनोंतक सम्बध रखनेका नहीं था लेकिन सार्वजनिक सभाके तिलक, रानडे आदिक परस्वार्थी मेम्बरोंके गिरोहमें थोड़ेही दिन रहनेके पीछे आपके विचार पलटगये। यावत जीवित आपने

सार्वजनिक सभाके मेम्बर रहनेका प्रण किया और २० वर्ष तक ७५ रु० मासिकपर उक्त स्कूलमें नौकरी करनेकी शपथ की। बहुत वर्ष नहीं बीतने पाये थे कि आपलोगोंके निरन्तर उद्योगसे वह स्कूल वर्तमान फर्गूसन कालिज पूनाके रूपमें परिणत होगया जिसके कारण बम्बईके गवर्नरने अनेक अवसरोंपर सार्वजनिकसभाके मेम्बरोंकी सराहना की। १८८७की साल सार्वजनिकसभाके त्रैमासिक पत्रके लिये एक उपयुक्त ईमान्दार सम्पादककी आवश्यकता हुई। सभाके प्रधान मिस्टर महादेव गोविन्द रानडेने सुयोग्य समझ पत्रके सम्पादन का भार आपको सौंपा। इस अवस्थामें सरकारी रिपोर्टों तथा हस्तलिखितलेखाओंका संग्रह तथा संक्षेपकरना आपका कर्त्तव्य था जिसको बुद्धिमानीसे पालनकरनेके साथ २ स्वल्पव्यय तथा राजनीति सम्बन्धी शिक्षा प्राप्तकरनेका अवसर आपको मिलता था। इस कार्यमें महाशय रानडेसे आपको असाधारण सहायता मिलती थी। और इसी कारणसे आपके और उनके बीच गुरुशिष्यसम्बन्ध ऐसा दृढ़ होगया था कि महाशय रानडेके स्वर्गवासी होनेपर भी उसमें अन्तर नहीं पड़ा। मिस्टर रानडेके विषयमें आपकी लेखनीसे निकले हुए अनेक लेखोंको पढ़नेसे जो समय २ पर समाचारपत्रोंमें प्रकाशितहुए हैं उपरोक्त कथन सहजहीमें विदित हो सकता है।

१८९७ की साल जब ब्रिटेन और भारतवर्षके राजस्व व राज्यकरादि सम्बन्धी नातेको जाँचने तथा नियमित करनेके लिये इङ्गलैण्डमें वेल्बी कमीशनकी नियुक्ति हुईथी तब कमीशनके सामने इस वृहत प्रश्नके विषयमें हिंदोस्थानी राय प्रकटकरनेके लिये इस देशसे बुलाये जाने पर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी(बङ्गाल) सुब्रह्मण्य ऐयर (मदरास), डिनशा एडलजी वाचा (बम्बई) और गोपाल कृष्ण गोखले (पूना) इङ्गलैंडको पधारे थे।

कमीशनकेमेम्बरोंने तत्त्वांककी श्रेष्ठता,व्याख्याकीस्पष्टता और स्वदेशानुरागी विश्वासकेनीतोमय उत्साहकेलिये आपकी बड़ी प्रशंसाकी। स्वदेशको लौटकर पंडितजीने स्वेच्छा पूर्वक प्लेगका प्रबन्ध करना आरंभ किया जिसके लिये सर्वसाधारणने तथा बम्बई गवर्नर लार्ड सेन्डहर्स्टने आपकी बड़ाई की और बम्बईकी व्यवस्थापक सभाका मेम्बर आपको बनाया। सर पी० एम०, मेहताके अलग होनेपर वायसरायकी व्यवस्थापकसभाकी मेम्बरी आपको दीगई।

स्वदेशहित तथा राज्यसेवाका परिचय सदैवही आपसे मिलताहै एवं गवर्नमेन्टने प्रसन्न होकर सी० आई. ई. की उपाधिसे आपको विभूषित किया है। आपने फर्गूसनकालिजमें बहुतकाल पर्य्यंत कठिन परिश्रम कियाहै, स्वदेशके परिमित व्यय व अन्यान्य राजनीति सम्बन्धी प्रश्नोंका विचार पूर्वक अध्ययन व संशोधन कियाहै, स्थिर तीक्ष्ण व स्पष्ट व्याख्याकरनेकी अद्भुत शक्ति आपमें पाईजातीहै। सतपथसे कदापि नहीं हटनेवाली और किसी हालतमें नहीं हिचकनेवाली स्वतंन्त्रताका आवाहन आपमें हुआहै। स्वदेशवासियोंके पक्षमें सदैव चित्तके पूर्ण उत्साहका परिचय आपसे मिलता रहा है।अन्तःकरण व बुद्धि की निर्मलता, तेजोमय योग्यता और स्वार्थका सर्वथा अभाव आपके स्वाभाविक गुण हैं। हमारी जातीयसभा इण्डियन नेशनल कांग्रेसके आप महासहायक हैं। लोकल सेल्फ गवर्नमेन्टके पक्षपाती होकर उसको अधिक विस्तृत करानेका उद्योग करनेके लिये १९०५ की साल आप इङ्गलैंडको पधारे थे। वहांसे लौटकर राजनैतिक वीरोंकी संख्या बढ़ानेके लिये आपने पूनामें Servant of Indian Society (बन्देमातरम्सभा) स्थापितकी है ऐसेही अनेकानेक दिव्य कारणोंसे पंडित गोपालकृष्ण गोखलेकी गणना हमारे स्वदेशहितैषी राजनैतिक मुखियाओंकी शिरमौर श्रेणीमें की गई है।

"इण्डियन नेशनल कांग्रेसका मत आपका मत है और दुनियांमें जो कुछ है वह सब हमारी भलाईके लिये है" यह आपका विश्वास है.

१९०५ के अन्तमें कांग्रेसका वार्षिक अधिवशन जो बनारसमें हुआ था उसके सभापतिका आसन आपने ग्रहण किया था।

ग्रिफिन (सर लेपिल ग्रिफिन, के० सी०एस आई०– Sir Lepil Griffin, K. C. S. I.)-स० ई० १८४० में जन्मे। १८६० में सिविलसर्विस परीक्षा उत्तीर्ण करके हिंदोस्थानको असिस्टेन्टकलेक्टर–मैजिस्ट्रेट होकर आये। १८७० में पञ्जाबके चीफ सिक्रेटरीका पद पाया। १८८०में चीफपोलीटिकेल अफसर होकर अफगानिस्तानको गये। १८८१ में के० सी० यस० आई ० का खिताब पाया। १८८७ से ८८ तक इन्दौर दरबारमें रजीडेन्ट रहे। १८८८से८९ तक हैदराबाद (दक्षिण) रजीडेन्ट रहे। १८८९ में शादी की। ईष्टइण्डिया एसोसियेशनके ईरानी इम्पीरियल बैङ्कके, और ब्रह्माकी जवाहरातकी खानोंवाली कंपनीके आप प्रधानहैं। बृटिशगवर्नमेन्टकी चाकरीमें अनेक राजाओं महाराजाओंको गद्दीपर बिठलानेका आपको अवसर मिला था इसी कारण बहुधा इतिहासकारोंने राज्यदाता(King Maker) का विशेषण आपको दियाहै।इङ्गलैंडमें १९०६ की साल जीवित हैं "एशियाटिकत्रैमासिकरिव्यु" नामक पत्रके जन्मदाता आपही हैं।

पंजाबके सरदार, पंजाबके राजें, मध्यहिंदके प्रसिद्ध स्मारकचिह्न, रणजीत सिंहका चरित, इत्यादि कई अंग्रेजी ग्रंथ आपके बिरचित हैं।

जमशेदजी नसरवानजी टाटा (पार्सी कामवीर) स० ई० १८३९ की साल गुजरातदेशके शहर नौसारीमें पार्सी ज्ञातिके पुजारियोंके वंशमें आपका जन्म हुआ। १३ वर्षकी उम्रमें प्रारंभिक शिक्षा पानेके लिये बम्बईमें आये।इसके ३ वर्ष पीछे एलफिन्स्टन कालिजमें भरती हुए लेकिन २० वर्षके होने नहीं पायेथे कि पिताको व्यवसायमें मदद देनेके लिये कालिज छोडदिया।१८३५ की साल लन्डनमें हिंदोस्थानी बैंक खोलनेके विचारसे आप इङ्गलैंडको पधारे लेकिन उन दिनों बम्बईमें तबादलेका भाव गिरजानेसे आपको बड़ा टोटा हुआ इस कारण बैंक खोलनेकी योजना छोडकर आप १८६७ में स्वदेशको वापिस आये। ऐबीसिनियाके साथ उन दिनों अंग्रेजोंका युद्ध ठनाहुआथा, पिताके साथ शरीक होकर आपने लड़ाईपर रसद पहुँचानेका ठेका लिया जिसमें खूब नफा हुआ। फिर आपने हिंदोस्थानमें रुईका सूत बनवाकर बेंचनेका प्रशंसनीय बृहत् व्यवसाय जारीकिया जिसका फल यह हुआ कि धीरे२ बम्बईमें कपडा बिननेकी दस्तकारीकी मूल आरोपण। होगई। शीघ्रही आपने बम्बईके समीपमें तेलका एक पेंच खरीदकर उसको पुतलीघरमें परिणित किया और कुछ समय तक उसको चलाकर बडा लाभ उठाया. १८७२की साल फायदेके साथ उस पुतलीघरको बेचकर आप इङ्गलैंडको दूसरी दफे गये। वहां पहुंच लङ्काशायरके अनेक पुतलीघरोंका आपने अवलोकन किया और कातने–बिनने की दस्तकारीकी सर्वोत्तम नवीन रीतिकी खोजमें बडे परिश्रमसे लगे रहे और उक्त विषयका अच्छा अनुभव प्राप्त करके भारतको लौटे और १ जनवरी १८७७ को अर्थात् जिस दिन मलिका विक्टोरियाने कैसरे-हिंदका खिताब लियाथा उस दिन आपने नागपुरमें "एम्प्रेसमिल" नामक पुतलीघर जारी किया। इससे बडा भारी लाभ हुआ निदान कईअन्य स्थानोंमें भी आपने पुतलीघर जारी किये। बढते २ काम इतना बढ़ा कि अब एक लाखसे भी अधिक मनुष्य आपके पुतलीघरोंमें काम करतेहैं। कइ दफे निष्फल उद्योग करनेके पश्चात आपने १८७७ की साल टाटाकम्पनी स्थापनकीथी। कार्यनिपुण तथा बुद्धिमान मालिक होनेके कारण इस कम्पनीकी दोनों गोलार्द्धोंमें खूब उन्नति हुई पैरिस तथा न्युयार्कमें भी कम्पनीकी शाखायें खोलीगई। चीनमें व्यवसाय फैलाने और जापान तथा पूर्वी एशियाके साथ भारतका तिजारती सम्बंध दृढ करनेके लिये आपने हाँगकाँग और शंघायमें व्यवसायके केन्द्र स्थापन किये। हिंदुस्थानी रुई बारीक कपडा बिननेके लायक नहीं होतीथी अतःकरोडों रुपेयकी विदेशसे भारतमें आतीथी। गवर्नमेंटके अनुभवी अफसर मिश्रकी रुईको बारीक कपडोंकी बिनाईके लिये उत्तम बतलातेथे लेकिन उनकी रायमें उसका इस देशमें

पैदा होना असम्भव था । भारतहितैषी टाटाने १८९६ में एक छोटी पुस्तक रचकर सर्कारी अफसरोंकी रायका खण्डन किया और सिद्धकिया कि, यदि भारतीय वायूकी अत्यंत खुश्कीका और जलसे खूब सींचनेका प्रबंध किया जासके तो मिश्रकी रुईकी खेती इस देशमें सफलता पूर्वक होसकतीहै ।तजुर्बा करनेके लिये शीघ्रही आपने एक खेतबुवांकर सफलता पाई फिरतो आपने मिश्रकी रुईके बीज विनामूल्य बाटना आरंभ किया जिसका फल यह हुआ कि लम्बे रेशेवाली रुई भारतमें ढेरों होतीहै ।

आपने भारतवासियोंको लोहेकी दस्तकारी सिखाने काभी उद्योग कियाथा इस कार्यकी पूर्तिके लिये अमेरिकाके अनुभवी कारीगिरोंको बुलाकर नौकर रखाथा उन लोगोंके तजुर्बा करनेपर सिद्धहुआ कि मध्यहिंदमें सबसे अच्छा लोहा निकलता है अतःगवर्नमेंटकी आज्ञासे मध्यहिंदमें लोहेकी खानें खोदनेका कारखाना आपने जारीकिया । रेशमकी दस्तकारीके भी आप ही जन्मदाता थे जिसका प्रारंभ जापानियोंके ढंगपर मैसोरमें हुआहै ।

भारतवासियोंको उच्च शिक्षा दिलानेके भी आप पक्षपाती थे और तन मन धनसे सहायता करतेथे ।एक दफे बम्बईके गवर्नरने किसी जलसेमें शिल्पसम्बन्धी शिक्षा पर एक व्याख्यानदियाथा और चन्देसे उसके लिये धन एकत्र करनेके वास्ते रईसोंका ध्यान आकर्षित कियाथा।उस व्याख्यानका आप पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि पार्सीलड़कोंको शिल्प शिक्षाप्राप्तकरणार्थ विलायत भेजनेके लिये चन्देसे आपने एक स्थायी फन्ड स्थापन किया और आपभी जी खोलकर उसमें चन्दा दिया । १८९६ में उक्त फन्डको बढ़ाकर आपने ऐसा प्रबन्ध किया कि जिससे प्रत्येक जातिका भारतवासी उससे लाभ उठासके।अन्तमें नवीन बातोंके आविष्कार और विज्ञानकी उन्नतिके लिये एक कालिज खोलनेके वास्ते आपने ३२ लाख रुपयेकी जादाद अर्पणकी जिसकी खालिस वार्षिक आय १२५००० रु० होतेहैं । गवर्नमेन्टने भी इस काममें मदद दीहै और महाशय टाटाकी योजनाके अनुसार बम्बईमें वैज्ञानिक खोजका कालिज(Research Institute) खोलनेकी बात स्थिरहुई है ।

आपने बहुत धन कमायाथा । बड़ी भारी जमीन्दारी मोल लीथी। पुतली घरोंसे,भारतके फलोंका विलायतमें व्यापार करनेसे, मैसूरमें रेशमकी खेतीसे और लोहा बनानेके कारखाना आदिसे भी आपको बडी भारी आमदनी थी । उम्रभर अपनेको तथा भारतवासियोंको धनाढ्य बनानेमें लगेरहे । कई करोड़का मक़दूर होनेपर भी गर्व तथा दिखावटका आपमें लेश नहीं था । मई १९०४ में जर्मनीके एक स्वास्थ्यकर स्थानमें आपका देहाँत हुआ । आपकी मृत्युसे केवल पार्सियोंहीकी नहीं किन्तु भारतभरकी हानि हुई ।

आप बतौनी वीर नहीं थे, कामवीर थे । भारतके शिल्प और व्यापारकी उन्नति जो इस समय दृष्टि गोचर होती है विशेषतः आपहीके उद्योगसे हुई है। निज उद्योगसे बढ़नेवालोंमें ऐसे मनुष्यका उदाहरण सहसा नहीं मिलेगा जिसने महाशय टाटाकी सदृश मातृभूमिकी उन्नति करतेहुये अपनेको तथा स्वदेशवासियोंको धनाढ्य बनानेकी सदैवकोशिश कीहो और अपने उपार्जित द्रव्यको ऐसी उदारताके साथ देशोन्नतिमें लगाया हो। अब आपके बृहत् व्यवसायके प्रबन्ध करता आपके कई पुत्र हैं। बम्बईमें आपका बड़ा भारी महल है।

जावजी दादाजी—आपकी गणना उन महत्पुरुषोंमें है जो परम उद्योगी होनेके कारण गरीबसे अमीर हुये हैं। दादाजी नामक आपके पिता, शाहपुरके रहनेवाले गरीब थे और उदर निर्वाहके कारण [illegible] आकर बसे थे। लड़कपनमें जावजी स्कूलके उद्दण्ड लड़कोंमें गिनेजातेथे और बड़े होकर [illegible] अमेरिकन मिशन प्रेसमें२ रुपये मासिकपर टायप साफ करनेकी नौकरी की थी और बढ़ते २ तीस रुपया वेतन पाने लगेथे। इसी चाकरीद्वारा कुछ पूंजी जमा करके स.ई.१८६४की साल बम्बईमें उन्होंने एक छोटासा छापाखाना जारी कियाथा जो अब निर्णयसागर नामसे प्रसिद्ध है। जावजी टायपके काममें निपुण थे, नौकरोंके साथ अच्छा वरताव करतेथे, किसी धर्मसे द्वेष नहीं रखतेथे,सुख-दुखको समानभावसे देखतेथे, धैर्य और दृढतासे उद्योग किये जातेथे और घर बाहर सबको प्रसन्न रखतेथे। इन्हीं शुभ गुणोंके द्वारा निर्णयसागर प्रेसकी असाधारण उन्नति हुई और जावजी बड़े धनी सेठ होगये। जनवरी. १८८६ से आपने "काव्यमाला" नामक मासिक पुस्तक जारी कीथी जिसमें अनुपलब्ध प्राचीन संस्कृतग्रंथ संशोधन करके टिप्पणीसहित छापेजातेहैं। बहुतसे और ग्रंथ भी निजव्ययसे छपवायेथे जिससे व्यवसायकी उन्नति हुई, विद्याका विस्तार हुआ और प्राचीन ग्रंथ नष्टहोनेसे बचे। निर्णयसागरके वर्तमान मालिक, सेठ तुकाराम जावजी, आपके पुत्र हैं। इस प्रेसमें छपाईका काम अत्युत्तम, निहायत साफ और विलायतीढंगका होता है। स. ई. १८३९ में जन्म, स. ई. १८९० में मृत्यु।

डेवी (सर हम्फरी डेवी बैरोनेट—Sir Humphery Davy Bart.) कार्नवालमें स. ई. १७७८ की साल जन्मे। लडकपनमें संकुचितरीतिकी शिक्षा पाई। १७ वर्षकी उम्रमें एक डाक्टरके पास काम सीखनेके लिये उम्मेदवारी की और गम्भीरतासे विद्या अध्ययनमें चित्त लगाया। २ वर्ष बाद रसायन विद्याकी तरफ ध्यान आकर्षित हुआ। आप उन दिनों अपने मित्र टानकिन साहबके मकान पर रहकर अपरिचित मिश्रित द्रव्योंके योगोंसे नवीन सिद्धान्त स्थिर करनेकी खोज किया करते थे। टानकिन साहब आपके इस उद्योगको

वृथा समझतेथे और इसी कारण अप्रसन्न रहते तथा शोक किया करतेथे कि अगर किसीं दिन आग लगगई तो मकान हिल जायगा और हम सब उड़जायंगे । लेकिन आपकी प्रारब्धमें इन परीक्षाओंसे सिद्धि प्राप्त होनी थी । १९ वर्षकी उम्रमें प्रकाश और उष्णताके विषयमें आपने एक निबन्ध लिखा । यह आपका पहिला ही कला सम्बन्धी लेख था । २१ वर्षकी उम्रमें डाक्टर बेडोज़ने वृस्टलके एक चिकित्सालयका 'निरीक्षक' आपको नियत किया । इसी समयसे आपके खोजकी चमत्कारिक गतिका आरंभ हुआ । १८०१ में राजकीय रसायनिक कर्मशालाके डैरेक्टरका पद आपको प्राप्तहुआ और दूसरी वर्ष रसायन विद्याके प्रोफेसरका ओहदा मिला । पोटेशियम, सोडियम, मैगनेशियम, स्ट्रोन्शियम नामक धातोंको तथा क्लोरायन गेसको आपने ढूंढ निकाला और सिद्ध किया कि आयोडायन मिश्रित पदार्थ न होकर मूलवस्तु है । रसायन सम्बन्धी तृणमणिशक्तिकी भी उन्नति आपके द्वारा हुई ।

पश्चात् खानोंकी गर्म भवककी परीक्षा करनेमें मन लगाया जिससे डेवीकृत सुरक्षित दीपककी उत्पत्ति हुई । यह दीपक बारीक तारके पिंजरेमें रहताहै जिसके कारण खानोंके भीतरकी असाधारण वायु नहीं जलने पाती है।असाधारण वायु अधिक एकत्र होजानेपर कभी २ पिंजडेके भीतर जाकर दीपक की लपटसे जलने लगती है लेकिन लपट पिंजड़ेके बाहर नहीं निकल सकतीहै और ऐसा होतेही असाधारण वायुकी अधिकता जानकर खान खोदनेवाले तुरन्त बाहर निकल आतेहै । १८१८ में सर हम्फरी डेवीको वैरोनेटका खिताब मिला । २ वर्ष पीछे रायल सोसायटीके प्रधानका पद पाया । इस प्रकार तेजोमय कार्यकलापसे परिपूर्ण कई वर्ष और बीते । १८२७ में सकतेका रोग हुआ । १८२९ में मृत्यु हुई । शहर जेनीवाके बाहर समाधि दीगई ।

नवल किशोर,सी.आई.ई.-आपके पिता यमुनाप्रसादभार्गव सासनीग्राम जिला अलीगढ़के रहनेवालेथे । उनकें ५ पुत्रथे जिनको शिक्षादेनेमें कोशिश की थी । हिन्दी उर्दू पढ़कर १२ वर्षकी उम्रमें नवलकिशोरको आगरा कालिजमें भरती करायाथा । वहां ५ वर्ष पढ़कर "कोहनूरप्रेस" लाहोरमें नौकरी की और छापेखानेका काम सीखा स्वामीके सदैव शुभचिन्तक रहे सन् ५७ के गदर पीछे अंग्रेज हाकिमोंकी सम्मतिसे लखनऊमें "नवलकिशोरप्रेस" स्थापनकिया और "अवधअखबार" नामक उर्दू समाचार पत्र निकाला । "अवधअखबार को निःपक्ष और सर्व हितकारी होनेके कारण सबने स्वीकारकिया । आमदनी बढ़नेके साथ २ मुं० नवलकिशोरने प्राचीन ग्रन्थोंके खोजकरने, शुद्ध कराके उनको छपवाने और उनके तिलक रचवाने इत्यादिमें कोशिश की ।

जो ग्रन्थ सैंकड़ो रुपयके खर्चसे नहीं मिलते थे वह ही आपके उद्योगसे कौड़ियोंके मोल होगये जिससे पठन पाठनमें अत्यन्त सुलभता हुई और प्राचीन विद्या नष्ट होनेसे बची। इसके सिवाय जिन विषयोंपर जरूरत देखी ग्रन्थकारोंको पारितोषिक देकर नये ग्रन्थ रचवाये। फिर प्रत्येक शहर और गांवमें अपने एजेण्ट नियत किये जिससे देशभरमें संस्कृत अर्बी फारसी, उर्दू, हिंदी पुस्तकोंका प्रचार होगया और कारखानेकी बडी उन्नति हुई। पश्चात् कानपुर, लाहौर, दिल्ली, आगरा तथा अजमेरमें "नवल किशोरप्रेस" की शाखायें खोली गई और मुहताजोंके लिये दवा, अन्न, वस्त्र आदिका सदाव्रत जारी किया गया। देशहितके कामोंसे प्रसन्न होकर गवर्नमेंटने मुन्शीजीको सी. आई. ई. का खिताब दिया; प्रयाग यूनीवर्सिटीका सभासद् बनाया और लखनऊ जेलका अवैतनिक निरीक्षक तथा लखनऊकी चुंगीका मेम्बर नियत किया। पश्चिमोत्तर देशकी गवर्नमेण्टको मुन्शीजीपर बड़ा विश्वास था, लार्ड साहबके दर्बारियोंकी सूचीमें उनका नाम था और दिल्लीके दर्बार कैसरीके अवसर पर उनको अवधके रईसोंमें अव्वल नम्बरकी कुर्सी मिलीथी। शरीफ गरीबोंकी गुप्त रीतिसे सहायता करते थे। हजारों कन्याओंके विवाहोंमें मदद दीथी और देशोपकारके कामोंमें चन्दा देनेसे भी नहीं चूकेथे। चन्देकी सूचीमें निम्नस्थ रकमें मुख्य हैं;-

१ आगराकालिज, बोर्डिङ्ग हौसेके लिये २० हजार रुपया नकद और १५ हजार रुपया वार्षिक आयकी भूसम्पत्ति।
२. लेडी डफरन् फन्डमें १५ हजार रुपया।
३. जुबिली हाई स्कूल लखनऊके लिये १५ हजार रुपया।

अन्तमें इतना कहना और शेष है कि, मुन्शीजी बड़े परिश्रमी तथा पुरुषार्थी थे, सब काम खुद देखतेथे, लखनऊमें उनके उद्योगसे कागज़ बनानेका कारखाना खुलाथा, लखनऊ और उन्नांवके ज़िलोंमें बड़ा भारी इलाका उन्होंने खरीदाथा और इन सब कामों पर हज़ारों नौकर उनके नियुक्त थे। भले चंगे योगिराजोंकी समान मृत्यु पाई। मुं. प्रयागनारायण सुयोग्य पिताके पुत्रहैं।

वि. सं. १८९२ में जन्म।
वि. सं. १९५१ में मृत्यु।

नार्थब्रुक -(टामस जार्ज वेरिङ्ग लार्ड नार्थब्रुक,पी.सी.,डी.सी.यल., यल.यल., डी. यफ्. आर.यस.,जी. सी. यस आई.-Thomas George Baring,P.C.,D.C.L., L.L.D., F.R. S., G.C.S.I., Earl of North Brook) स. ई. १८२६ की साल लन्डनमें जन्मे। पिता आपके प्रथम वैरन नार्थब्रुक थे जिनके सिधारने पर १८६६ में वैरनकी उपाधि आपको मिली। १८४८ में शादी की लेकिन १ पुत्र और १ पुत्री छोड़कर स्त्री १८६७ में चलबसी फिर दूसरी

शादी नहीं की। क्राइस्ट चर्च कालिज, आक्सफोर्डमें शिक्षा पाई थी। बोर्ड आफ ट्रेडके, होम आफिसके, इन्डिया आफिसके और ऐडमिरल्टीके क्रमशः प्राइवेट सिक्रेटरी रहे थे.। १८५० से ६६ तक पार्लियामेन्टके मेम्बर रहे। १८५९ से ६४ तक साम्राज्य हिंद्के उपमंत्री रहे। बीचमें कई महीने: तक १८६१ की साल सेनाविभागके उपमंत्री रहे। १८७२ से ७६ तक वायसराय हिन्द्के पद पर काम किया। पश्चात् इङ्गलैंड जाकर अलसेनाधिभागके मंत्रीका पद पाया और उस पर १८८० से ८५ तक रहें। १९०४ में परमधामको सिधारे। आपके हिंदोस्थानी शासनमें बिहारमें दुकाल पड़ा जिसका प्रबन्ध आपने अत्युत्तम किया और अन्य कामोंमें खर्च घटाकर अकालके कामोंमें खर्च करनेसे गवर्नमेन्टकोष की भी स्थिति नहीं बिगड़ने पाई। इस अकालमें गवर्नमेन्टने ९ करोड़ रुपये खर्च कियेथे। जोधपुर और काश्मीर राज्योंके भीतरी झगड़ोंको आपने बुद्धिमानीसे शान्त किया था। अंग्रेज़ी रेज़ीडेन्टको विष देनेके अपराधमें, पूरा सबूत न होनेपर भी महाराजा गैकवाड़ आपहीके समयमें गद्दीसे उतारेगयेथे. लेकिन उनके उत्तराधिकारी वर्तमान गायकवाड़ महाराजा सैयाजीरावकी शिक्षाका अच्छा प्रबन्ध कियाथा और उनके बालकपनमें राजा सर टी० माधवरावको दीवान नियत करके बड़ोदा राज्यकी हालत नहीं बिगड़नेदीथी। इन्कमटैक्स घटाकर, म्युनिसिपेलिटियोंके दुखदायी करोंको दूर करके तथा अनेक निरर्थक खर्च घटाकर देशोपकारी कामोंमें खर्च करके आपने प्रजाका हित किया था और गवर्नमेन्टकोषकी भी हालत नहीं बिगड़नेदीथी। भारतीय सेनाके खर्चकी बारीकीसे जांचकरके १ लाख रुपयेकी बचत निकालीथी। १८७५-७६ की साल राजराजेश्वर एड्वर्ड सप्तम, प्रिन्स आफ-वेल्सकी स्थितिमें हिंदोस्थान आयेथे जिसका प्रभाव देशी नरेशों और प्रजापर अच्छा पड़ाथा। आपको २॥ लाख रुपया वार्षिक वेतन मिलताथा लेकिन अपने खर्चके लिये घरसे रुपया मंगवातेथे। वेतनका रुपया दान पुण्यमें खर्च होताथा। आपका कथन है कि "भारतका शासन इस प्रकार करनाचाहिये जिससे प्रजाका भला हो, और भारतवासियोंको विदित होजाय कि हम उन्हींके हितके लिये शासन करतेहैं". प्रजाकी स्वतंत्रताको नष्ट करनेवाली फौजदारी कानूनकी शक्तिको और देशी नरेशोंको कष्ट पहुचानेवाली पोलीट्रिकल एजेन्टोंकी सख्तीको शिकायत सुनतेही आपने उठालियाथा।

इङ्गलैंडमें १० हज़ार एकड़ भूमि आपकी जमींदारीमें है। "ईसामसीहके उपदेश" नामक अंग्रेजी ग्रंथ आपका विरचित है। इस समय आपके पुत्र वाईकौन्ट बेरिङ्ग लन्डनमें विद्यमान होकर पार्लियोमेन्टके मेम्बर हैं।

निजामुल्मुल्क, फ़तेहजँग, आसफ़जाह, हफ्त२हजारी, सूबेदार बहादुर (हैदराबाद राज्यके संस्थापक)–आपका नाम क़मरुद्दीन खाँ था और आप

गाजी उद्दीन खाँ के पुत्र थे। मुगलसम्राट, औरंगजेबके समयमें आपका पांच हजारी मनसब था। औरंगजेबकी मृत्युके पीछे तख्तके लिये जो झगड़ा उसके बेटोंमें हुआथा उससे आप बिलकुल अलग रहेथे। पश्चात् बहादुरशाहने तख्त-पर बैठकर खानदौराँ, खानबहादुरका खिताब और अवधकी सूबेदारी तथा लखनऊकी फौजदारी आपको दी। कुछ समय पीछे नौकरी छोड़, फकीर हो आप दिल्ली चलेगये। जहां दारुशाहने तख्तपर बैठकर फिर आपको तलब किया। फर्रुखसियरने तख्तपर बैठकरनवाब निजामुलमुल्क, फतेहजंगका खिताब; हसहजारी मनसब और दक्षिणकी सूबेदारी अपको दी। मुहम्मदशाहने तख्तपर बैठकर आपका पद और उपाधिबहाल रखी। मुहम्मद अमीनखाँ कोकानीके मरनेपर मुख्य मंत्री नियत होकर आप दिल्ली आये। मंत्रीके पदपर रहतेहुये आपने औरंगजेबके समयके कायदे जारी करने चाहे लेकिन दर्बारके अन्य सर्दार आपके खिलाफ हो गयेपश्चात् दक्षिणकी सूबेदारी पर आपको भेजा-गया लेकिन शीघ्रही नौकरीसे अलहिदा करदियेगये। उस समय मुगल साम्राज्यकी गिरतीका जमाना था अत एव कुछ फाज एकत्र करके शकर खैर-वके युद्धमें अपने उत्तराधिकारीको परास्त करके आपने दक्षिणके सूबेपर अधि-कार करलिया और इस समयसे नाममात्रको आप दिल्लीके आधीन रहे। मुगल सम्राट् दिल्लीने इसी समय आपको आसफजाहका खिताब दियाथा। अन्तमें आप मरहटोंसे लड़तेरहे और कर्नाटक तथा अर्कोट विजय किये। स.ई.१७४८ में १०० वर्षके होकर इस दुनियासे कूच किया।

नौरोजजी मानकजी वाडिया, सी. आई. ई. (पारसी दानवीर)- आप सूरत नगरके रहनेवाले हैं। आपकी माता मोटली बाईके बापदादाने जहाज बनानेके काममें करोड़ों रुपये पैदाकियेथे जो अन्तमें मोटली बाईको मिले। मोटली बाईके पिताका नाम सेठ नसरवानजी वाडिया था। मोटली बाई २६ वर्षकी उम्रमें विधवा होगईथी और उसने पार्सियोंमें विधवाविवा-हकी प्रथा रहने पर भी दूसरी शादी नहीं की थी। वह बड़ी दानवीरा थी और सदैव अपनी जायदादकी रक्षा करनेमें जो सालसिटद्वीपमें है तथा अपने एकलौते पुत्रके लालन पालनमें लगी रहतीथी। १८९७ में मोटली बाईका देहान्त ८६ वर्षकी उम्रमें हुआ।

माताके पश्चात् वाडिया महाशयने १ करोड़ रुपया दान किया। दुनिया-भरमें जिसकिसी मनुष्यपर यकायक शोचनीय दैवविपत्ति पड़ेगी वह इस करोड रुपयेकी आमदनीसे मदद पावेगा।

अग्निसे, जलसे, ज्वालामुखीके उद्गारसे, दुर्भिक्षसे, भूकम्पसे विपद्ग्रस्त होनेपर अथवा किसी अन्यप्रकारकी दैवविपत्तिसे निरुपाय होनेपर मनुष्य इस करोड रुपयेकी आमदनीसे सहायता पावेगा।

भाऊनगरी-(सर मञ्चरजी मरवानजी भाऊनगरी) के. सी. आई. ई. स. ई. १८९५ से १९०५ तक कनजरेवटिव दलमें शरीक होकर वृटिश पार्लियामेन्टके मेम्बर हैं और इङ्गलैंडमें रहतेहैं। एक अमीर पारसी सौदागरके घर १५ अगस्त, १८५१ की साल बम्बईमें जन्मे । एलफिन्स्टनकालिज, बम्बईमें शिक्षा पाई । कालिज छोडनेके पीछे समाचारपत्र सम्पादनका काम करतेरहे। १८७३ की साल भाऊनगरराज्यकी तरफ़से एजेन्ट नियत हुये और बादको उक्त राज्यके कानूनी सलाहकारका पद आपको मिला। १८९५ में इङ्गलैंड चलेगये और ब्रटिश पार्लियामेन्टमें मेम्बरी पाई । १८९७ में ब्रटिशगवर्नमेंटने के, सी. आई. ई. की उपाधिसे आपको विभूषित किया। घोडेकी पीठ पर सवारी लेने और व्यायामकरनेके अनुरागी हैं।आपसे पेश्तर केवल दादाभाई नौरोजीही ब्रटिश पार्लियामेन्टकी मेम्बरी पानेमें समर्थ होसके थे और इन्हीं दोनोंको सिवाय कोई तीसरा हिंदोस्थानी मेम्बर अब भी पार्लियामेंटमें नहीं हैं।

आपने ईस्टइन्डिया कम्पनीके राजप्रबन्धका इतिहास अंग्रेजीमें रचा है और महारानी विक्टोरियाके हाईलैंड सम्बन्धी चरितका अनुवाद गुजरातीमें किया है।

भालचंद्रकृष्ण भाटवड़ेकर, यल. यम., जे. पी., नायट,-इस समय हिंदोस्थानी प्रसिद्ध राजनैतिक पुरुषोंमें आपकी गणना है। स. ई. १८८५ से गिरगांव बम्बईमें रहिकर हिकमत करते हैं। १९ फरवरी १८५२ को जन्मे । कृष्ण शास्त्री भाटवडेकर आपके पिता थे और माताका नाम रुक्माबाई था। साविब्रीबाईसे आपकी शादी हुई है। एलफिन्सटन हाईस्कूल और ग्रान्ट मेडीकेल कालिजमें पढकर डाक्टरीकी यल. यम. परीक्षा उत्तीर्णकी है और सोनेका पदक पाया है। १८७४ से ७६ तक बौडरा, पालनपुर और वैसीनमें असिस्टेन्ट सर जियन रहेथे। १८७६ से ८५ तक विज्ञान सम्बन्धी देशीभाषाके कालिज में प्रिन्सीपेल और चीफ़ मेडीकेल अफ़सर. बरोडामें रहेथे। बम्बई यूनीवर्सिटीके सभासद हैं और कभीरउक्त यूनीवर्सिटीके सिन्टीकेट भी होते हैं। बम्बईकी म्युनिसिपैल कार्पोरेशनके, मेडीकेल यूनीयनके और ग्रान्टकालिजकी मेडीकेल सभाके प्रधान हैं। १८९७ से ९९ तक लेजिसलेटिव कौंसिलके ऐडीशनेल मेम्बर और१९०१ में लेजिसलेटिव कौंसिलके मेम्बर रहे थे। बम्बईकी इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्टके भी मेम्बर हैं।

म्युनीसिपेल कार्पोरेशन बम्बईके प्रधान रहिकर जो राजा और प्रजा की सेवा आपने कीथी उसीके पुरस्कारमें नायट (Kt.) की उपाधि पाईहै। सनातन हिन्दुधर्मके अनुरागी हैं । इन्डियन नेशनल कांग्रेसके सहायक हैं ।

स. ई. १९०५ तक वनस्पतिविद्या, स्त्रीचिकित्सा, कुष्ठ, मदिरादोष निवारण आदि विषयोंपर कई अंग्रेजी ग्रंथ आपने रचेहैं।

महावतखाँ, हफ्तहजारी, खानखाना सिपह सालार बहादुर—आप का असली नाम जमानाबेग था। आपके पिता गयूरबेग, काबुलके रहनेवाले सैयद थे और आपके पूर्वज शीराजसे आकर काबुलमें बसे थे। अकबरने मिर्जा हकीमकी मातहितीमें आपको मुगलसेना. में भरती कियाथा और चितौड़की लड़ाईमें बहादुरीसे लड़कर आपने प्रसिद्धिपाईथी। पश्चात् शाहिजादे सलीम (जहांगीर) के निजके ओहदेदारोंमें रहेथे और कुछ कालतक शागिर्दपेशेके बखशीका पद भोगाथा। उस समय आपका मनसब तीन हजारी था और महावतखाँखिताब था। जहाँगीरने तख्तपर बैठकर शहिजादे खुर्रम (शाहजहाँ) की मातहितीमें आपको दक्षिणकी लड़ाई पर भेजा। वहाँ आपने ऐसी उत्तम राजसेवा की कि जिसके प्रभावसे आपकी प्रतिष्ठा और दर्जा दर्बारके अन्य सरदारोंकी अपेक्षा अधिक बढगया। इसके बाद खानदौराँकी जगहकाबुलकी सूबेदारी पर भेजेगये थे।

मुगल सम्राट् जहांगीरके तीन बेटेथे खुर्रम, शाहिरयार और परवेज़। शाहिरयारको नूरजहांकी बेटी जो पहिले पति शेरअफ़गनसे थी विवाही थी। इसी कारण नूरजहां चाहती थी कि जहांगीरके बाद शहिरयारको तख्त मिले।

थोड़े दिनों पीछे जब खुर्रमने बिगड़कर उपद्रव किया तो नूरजहांने अपना इरादा पूरा करनेके लिये आपको काबुलसे तलब किया। दिल्ली पहुँच आपने इलाहाबादकी सूबेदारी पाई और साथियोंको छितर बितर करके खुर्रमका पक्ष हलका करदिया। फिर शाहिजादेपरवेजकी मातहितीमें बिहारके सुलतान मानखारनीको परास्तकिया। परवेजके साथ आपका मेल बढ़ना नूरजहांको बुरा लगा, निदान अपने भाई आसफखाँ वजीरकी मारफ़त उसने दरबारके सब सरदारोंसे आपके खिलाफ़ जत्था करावा और जहांगीरके काबुलके दौरेपर जाते समय आपको बुलाया। लेकिन अर्दलीके ५०० राजपूत सवारों सहित हाजिर होनेपर आपको बादशाहसे मिलनेकी आज्ञा नहीं मिली इस अप्रतिष्ठाको आप बरदाश्त नहीं करसके, निदान जब फ़ौज उतरजानेके बाद बादशाहकी सवारी झेलमपार होरहीथी तो आपने राजदम्पतिको कैद करलिया। यह खबर पातेही वजीर आसफखाँने अपनी जागीरपर भागकर अटकके किलेमें पनाह ली लेकिन वहांसे भी कैद कर लियेगये।

इसके बाद प्रायः १ वर्ष तक राज्यमें आपका पूरा अधिकार रहा अंतमें मौका पाकर नूरजहाँने आपके अर्दलीके सिपाहियोंको मरवाडाला और बादशाहको कैदसे छुड़ाया। इस हालतमें आप भागकर गुजरातके पास शाहि

जादे खुर्रमसे जा मिले, जो उन दिनों बागी होरहाथा। कुछ ही दिन पीछे जहांगीरने परलोकयात्रा की। खुर्रमने तख्तपर बैठकर अपना नाम शाहजहां रखा और आपको हफ्तहजारी मनसब, खानखाना सिपहसालार बहादुरका खिताब, ४ लाख रुपया नकद इनाम, अजमेरकी सूबेदारी और आपके बेटे खानजमाँको मालवाकी सूबेदारी दी। पश्चात् दक्षिणकी सूबेदारी पर आपकी बदली होगई। वहां आपने राज्यप्रबन्धमें सुधार किया, बीजापुरका घेरा किया, अमरकोट और महानकोटके किलोंको उड़ादिया, याकूब हबशीको परास्त किया, फतेहखांको कैद करके दौलताबादको लूटा, लूटका २५ लाख रुपया बादशाहकी भेंट किया और ५ लाख रुपया इनाम पाया। फिर मरहटोंसे लड़तेरहे। १०४४ हि० में ८ बेटे छोड़कर परलोकयात्रा की। और नजफ़शरीफ़ में लेजाकर दफ़नायेगये।

मालोजी भोंसले (मरहटाराज्यके संस्थापक महाराज शिवाजी भोंसलाके दादा)-आप राना चित्तौड़के वंशमें थे। आपसे ७।८ पीढ़ी पहिले शिवराय राना चित्तौड़के कनिष्ट पुत्र भीमसिंहने भोंसलानामक दुर्गमें भागकर अपनी जान बचाईथी, इसीसे उनके वंशज भोंसला कहलाये। मालोजीके पिता सम्भाजी भोंसला दौलताबादाके समीप वेरूलमें रहतेथे और कई ग्रामके जमीन्दार थे। २५ वर्षकी उम्रमें मालोजी अहमदनगर राज्यमें कुछ घुड़सवारोंके अफ़सर नियत हुये और धीरे २ पांच हजार घुड़सवारोंके अफसर होगये। स. ई. १५९४ में आपके पुत्र शाहजी भोंसलाका जन्म हुआ। स. ई. १६०४ में निजाम शाही सरकारने मालोजीको सूपा और पूनाके परगने जागीरमें दिये। स. ई. १५५२ में जन्म, स. ई. १६१८ में मृत्यु।

मीरजुम्ला, मुअज्जमखाँ, हफ्तहज़ारी, सिपहसालार, खानखाना बहादुर-आपका असली नाम मीर मुहम्मद खाँ था। पिता आपके असफहानके रहनेवाले एक अमीर सैयद थे और गोलकुंडामें रहकर जौहरीका पेशा करतेथे। आपने पहिले पहिल गोलकुंडाके नवाब अब्दुल्ला कुतबशाहके दर्बारमें नौकरी की थी और शनैः २ उच्चपद पर पहुचकर करनाटक विजय कियाथा, हीरेकी खानोंपर अधिकार कियाथा, राज्यप्रबन्धमें सुधार कियाथा और मीर जुमलाका खिताब पायाथा। लेकिन दर्बारके अमीर सर्दारोंने ईर्षक होकर आपके घमंडी पुत्र मुहम्मद अमीनकी तरफ़से कुतब शाहको दिल फेरदियाथा जिसके कारण इस्तीफा देकर आप औरंगजेबके पास चले आयेथे। औरंगजेबने आपको अपने पिता मुगलसम्राट शाहजहाँकी खिदमतमें दिल्ली भेजदिया। वहां आपने एक बहुत बड़ा हीरा, १० हाथी और १५ लाख रुपयेकी जवाहरात बादशाहकी भेंटकी और दीवान आला (मुख्यमंत्री) का पद, मुअज्जमखाँका खिताब, ६

हजारी मनसब तथा ५ लाख रुपया नकद इनाम पाया। पश्चात् औरंगजेब की मातहितीमें वीजापुर विजय करनेके लिये भेजेगये। वहां आपने विदर तथा कल्याणका किला फतेह किया और गुलबर्गाके नवाब आदिलशाहको परास्त करके १ करोड़ रुपया वसूल किया तथा कोंकणप्रदेशका राज्य छीन लिया। औरंगजेबके वापिस आनेपर कोंकण प्रदेशका शासन आपके हाथमें रहा। उन्हीं दिनों शाहजहांके बीमार पड़नेसे तख्तके वास्ते उसके बेटोंमें झगड़ा हुआ और गुप्त राजनैतिक कारणोंसे वजीरके पदसे आपको बदल दिया गया और जुमलातुल्मुल्कका खिताब दियागया। इसी समय औरंगजेबसे भी आपकी कुछ अनबन होगई जिसके कारण दौलताबादके किलेमें आपको कैद किया गया, धन धान्य सब खालसा करलियागया और आपके घरके लोगोंको शाही गुलाम बना लियागया। औरंगजेबने तख्तपर बैठकर आपको फिर तलब किया और हफ्तहजारी मन सब, १० लाख रुपये नकदका खिलत और खानदेशकी सूबेदारी दी और अपने भाई शाहशुजाको परास्त करनेके लिये आपको भेजा। शाहशुजाको परास्त करके खिपहसालर, खानखाना बहादुरका खिताब आपने पाया। फिर कूचविहारका राज्य लड़ाईमें जीता और अन्तमें आसामपर चढ़ाई की। कई महीने तक युक्ति पूर्वक लड़कर आसामके राजा धनसुखसे खिराज वसूल किया लेकिन वर्षातका मौसम आजानेसे फौजमें बुखार फैला जिससे अधिकांश सैनिक नष्ट हुए और आपभी सरदी लगनेसे बीमार पड़गये। अन्तमें लाचार होकर बंगालकी तरफ कूंच किया लेकिन खिजरपुर पहुँचतेही १०७३ हि० में इस असारसंसारका सम्बन्ध छोड़ना पड़ा। हैदराबाद (दक्षिण) में आपकी बडी भारी हवेली थी।

मिन्टो (सर गिल्बर्ट जान इलियट-मेरे-किनिन्मौंड, अर्ल आफ मिन्टो, वायसराय हिंद—Sir Gilbert. John Elliot-Murry-Kynyn Mound, Earl of Minto, Viceroy of India)-इंगलेंडके प्रसिद्ध इलियट वंशमें आपका जन्म हुआहै। आपके प्रपितामह प्रथम अर्ल आफ-मिन्टो स. इ. १८०७ से १८१३ तक हिन्दोस्थानके गवर्नर जेनरल रहेथे और यहांसे वापिस जानेपर उत्तम राज्यसेवा करनेके पुरस्कारमें उनका दर्जा बढ़ाया गयाथा और अर्लडम आफ़-मिन्टो उनको प्रदान की गईथी। जेनरल सर टामस हिसलोप, जो १८१७ की साल मेहदीपुरके संग्राममें संयुक्त थे, आपके दादा थे। प्रथम अर्ल आफ़-मिन्टोके भाई सर ह्यू इलियट, म्युरिच, बर्लिन और नैपिल्समें आमात्यका पद भोगनेके उपरांत मदरासके गवर्नर नियुक्त हुयेथे। इसलिये भारतसे आपका सम्बन्ध पुराना है। आपका जन्म १८४५ में हुआथा। ईडन तथा ट्रिनिटी कालिज़में आपने विद्या पढ़ीथी। बहादुरीका परिचय पढ़नेके सम-

यमें ही आपसे मिलने लगाथा । ईटनके कालिजमें आप कसरती रहकर विख्यातथे । ट्रिनिटी कालिजमें दौड़की कसरतमें आप प्रथम आयेथे । डिगरी प्राप्त करनेके अवसर पर रीत्यानुसार १० मीलकी घुड़ दौड़में उत्तीर्ण होकर आपने यूनीवर्सिटी स्टीपिल चेसका प्रथम पारितोषिक पायाथा । आप बड़े बहादुर, साहसी पुरुषहैं । संसारके प्रायः सब भागोंका भ्रमण भी आपने कियाहै। सैर और शिकारकेभी बड़े शौकीन हैं । विद्याव्यासंग और साहित्यसेवाकी योग्यता भी सदैवसे आपके वंशमें पाई जातीहै । अब भी आपके छोटे भाई आनरेबिल आर्थर इलियट यम. पी. एडिन्बरोरीव्युके सुयोग्य संपादक हैं । आप भी गंभीर सैनिक विषयोंपर एडिन्बरोरीव्यु, नायनटींथ सेंचुरी, यूनाइटेड सर्विस मैगज़ीन आदि पत्रोंमें निबन्ध लिखा करते हैं । आप युद्ध विग्रह तथा राज्यशासन दोनोंके अनुभवी हैं और ६० वर्षके होजाने पर भी शरीरसे दृढ और प्रसन्नचित्त हैं । १८६७में आप अंग्रेज़ी सेनामें भर्ती हुयेथे । १८७१ में किसी विशेष कारणसे पैरिसमें गुप्तरूपसे रहे और एक भयानक आग बुझानेमें समर्थ हुए । पश्चात किसी गुप्त कार्यके लिये स्पेनकी सीमामें भेजेगये । १८७७ में रूसरूम संग्रामके अवसरपर जब रूसके विरुद्ध रूममें सेना भेजीगई तो आप उसके साथ थे । और डेन्युब नदीपर आपने रूसियोंसे मुकाबला कियाथा । १८७८ की साल अफ़ग़ानिस्थानकी लड़ाईमें आपने शूरता प्रकटकी थी और १८८१ में लार्ड रावर्टसके साथ प्रायवेट सिक्रेटरी होकर रास कुशउमेदको गयेथे । १८८२ में अर्बी पाशाके खिलाफ आप मिश्रकी लड़ाईपर भेजे गयेथे और वहां अबूकिरके संग्रामके अन्तर्गत जिसमें लार्ड वेलिज़लीने विजय पाई थी आप मागकाहके युद्धमें घायल हुयेथे । उसी साल जब लार्ड लैन्सडोन कनाडाके गवर्नर जेनरल नियत हुये तो आपको उनके जंगी सिक्रेटरीका पद दियागया । १८८५ में उत्तरी पश्चिमी कनाडाका वलवा दवानेके लिये आपकी नियुक्ति हुई । उपद्रव शान्ति करनेमें आपने सफलता पाई । १३ वर्ष पश्चात लार्ड ऐवर्डीनके उत्तराधिकारी होकर आप गवर्नर जेनरल कनाडाके उच्च पदको प्राप्त हुये । कनाडाके राज्य और प्रजाकी आपके शासनमें बड़ी उन्नति हुई । सर्वसाधारणकी भलाई पर आपका सदैव ध्यान रहा । १९०५ में वायसराय हिंदके पद पर नियुक्त होकर जब आप भारतको पयान करनेके लिये इंगलैंडको वापिस आये तो राजराजेश्वरकी गवर्नमेंटने कनाडाका अत्युत्तम शासन करनेके पुरस्कारमें अत्युच्च शब्दोंसे भराहुआ प्रशंसापत्र आपको दिया । आपकी पत्नी लेडी मिन्टो, महारानी विक्टोरियाके प्रायवेट सिक्रेटरी सर चार्लस ग्रेकी लड़कियोंमेंसे एक हैं । भारतको पयान करते समय लेडी मिन्टोंने एक बिदायीके जलसेमें कहाथा कि यदि मेरे पतिके शासनमें कनाडोंकी प्रजाके सदृश पूर्वी प्रजाको भी सुख चैन हुआ तो मुझको सन्तोष होगा । लार्ड मिन्टोके

हिंदोस्थान आने पर लेडी मिन्टोंके भाई वर्तमान अर्ल ग्रे कनाडाके गवर्नर जेनरल नियुक्त हुयेहैं । राक्सबरोशायरमें शहर हैनिकसे ६ मील दूर आपका राजप्रसाद "मिन्टोभवन" बहुत सुंदर, भव्य और दर्शनीय है। उसमें पहलेसे ही अनुपलब्ध प्राचीन चित्रों तथा पदार्थोंका संग्रह है। आपने उसमें और भी तरक्की कीहै। स्काटलैंडके प्रसिद्धकवि सर वाल्टर स्काटने मिन्टोभवनको आकर देखाथा और "ले आफ दी लास्ट मिन्स्ट्रेल" नामक काव्यमें उसका वर्णन कियाथा।

मेओ-(रिचर्ड सौथवेल,षष्ठ अर्ल आफ़ मेवो-Richard Sonthwell, 6th Earl of Mayo)-डबलिन (आयरलैंड) में २१ फरवरी,स. ई. १८२२को जन्मे। आपके पितापंचम अर्ल आफ-मेओ थे। और आपका वंश प्राचीन तथा प्रतिष्ठित था आपके अनेक पूर्वजोंने भी बडे२ उच्च पद पायेथे। युवा होकर लार्ड [illegible] अरयरलैंडके मुख्य मंत्री रहे। १८६९ में वायसराय हिंद होकर हिंदोस्थानके। [illegible] ऐन्डमन द्वीपमें १८७२ की साल एक कैदीके हाथसे मारेगये। आपके शासनमें [illegible] बहुत कुछ उन्नति हुई। लार्ड लारेन्सका विचारहुआ अम्बाला दर्बारभी शेरअलीको [illegible] बनानेके लिये आपहीके शासनके पहिले वर्षमें सफलतासहित सम्पूर्ण हुआ। १८६९-७० में ड्युक आफ एडिन्बरो हिंदोस्थानमें आये जिससे देशीनरेशोंके चित्तमें सरकारकी शुभ चिन्तनाने पहिलेकी अपेक्षा अधिक दृढतासे स्थितिपाई।

लार्ड मेओने कृषिविभाग स्थापनकिया और अनेक विभागोंका सुधार किया। मालगुजारी और नमकका महसूल वसूल करनेके कायदोंमें बहुत कुछ सुधार किया। आपके समयमें सड़क, रेलवे और नहिरोंने बहुत विस्तार पाया जिससे देशकी दशामें अधिक उन्नति हुई। लार्ड डेलहौसीका सोचाहुआ पबलिक वर्क्स विभाग (मुहकमा तामीरात) भी आपहीके समयमें स्थापित हुआ। मेओकालिज, अजमेर आपके स्मारकमें खोलागया।

म्युर (सर विलियम म्युर, के. सी. यस. आई., यल. यल. यल. डी., डी सी. यल.-Sir William Muir, K. C. S. I., L. L. D. D. C L.)-म्युरसेन्ट्रल कालिज, इलाहाबाद आपका स्थापित है। १८१९ में जन्मे। ग्लास्गोके रहनेवाले विलियम म्युर आपके पिता थे। १८४० में शादीकी। एडिनबरो और ग्लास्गोकी यूनीवर्सिटियोंमें तथा हैलीबरी कालिजमें शिक्षा पाई। १८३७ में बंगाल सिविल सर्विसमें भरतीहुए। पश्चात पश्चिमोत्तरदेशकी गवर्नमेन्टके सिक्रेटरी तथा बोर्ड आफ रेवीन्युके मेम्बर रहे। सन ५७ के गदरमें खबर विभाग (Iatelligence

Department) के अफसर होकर आगरेमें रहे। फिर गवर्नमेन्ट हिन्दके मंत्री होगये। १८६७ में गवर्नर जेनरलकी कौंसिलके मेम्बर हुए और के. सी. आई. ई. का खिताब पाया। १८६८ में पश्चिमोत्तरदेशके लफटिनेन्ट गवर्नरका पद पाया। १८७४ में इङ्गलैंड जाकर मालविभागके मंत्री हुए।१८७६में कौंसिलआफ इन्डियाके मेम्बर हुये। १८८५ से १९०० तक एडिनबरो यूनीवर्सिटीके प्रिंसीपेल और वाइसे चैनसेलर रहे।

हिंदोस्तानसे पेन्शन पाकर इङ्गलैंडको वापिस जाने पर आपको भारतके सिक्रेटरी आफस्टेटके दफ्तरमें नौकरी दीगईथी। १९०५ की साल एडिन्बरो (स्काटलैंड) में आपका देहान्त हुआ। आपको घोड़ेपर चढ़नेका अनुराग था। फिलासोफर आफ डिवीनिटी (Ph. D.) की उपाधि आपको प्राप्त थी। निम्नस्थ ग्रंथ आपके विरचित हैं:-

1. Life of Mohomed.
2. The Caliphate.
3. Mamluke dynasty.
4. The Coran [illegible] and teaching.
5. The Mohomedan Controversy.

रावर्टस (सर फ्रेडरिक रावर्टस, पी. सी., के.पी., जी. सी. बी., जी. सी. यस. आई., जी. सी. आई. ई., वी. सी., डी. सी. यल., यल. यल. डी., लार्ड आफ कन्धार, प्रिटोरिया ऐन्ड वाटरफोर्ड—Sir Fredrick Roberts, P. C., K. P., G. C. B., G. C. S. I., G. C. I. E., V. C., D. C. L., L. L. D., 1st Earl of Kandhar, Pretoria and Waterford) स. ई. १८३२ की साल कानपुर में जन्मे। आपके पिता जेनरल सर ऐबरेहम रावर्ट, जी. सी. बी. आयरलैंडके रहनेवाले थे। एटन, सैन्डहर्स्ट और ऐडिस्कोम्बी के कालिजोंमें शिक्षा पाकर बंगालके तोपखानेमें लफटीनेन्टके पद पर नौकरी की। १८५९ में एक कप्तानकी बेटी नोरा हेनरीटासे शादी की। शनैः २ उन्नति करतेहुये १८८५ में हिंदोस्थानके कमान्डर इन चीफ हुए। १८५७ के गदरमें लखनऊ, दिल्ली, बुलन्दशहर, आगरा, अलीगढ, कन्नौज, कानपुर, खुदागंज, फतेहगढ़, मियागंज इत्यादि स्थानोंमें बागियोंको परास्त करके शान्तिस्थापन की। १८६७ से ६८ तक ऐबीसीनियाकी चढ़ाई में और १८७१-७२ में लुशाईकी चढ़ाईमें सेनापति रहकर विजय प्राप्तकी। १८८६ की साल ब्रह्माकी लडाईमें भी आपही सेनापति थे। १८७९ से ८० तक काबुल कन्धारके युद्धमें वहांका झगड़ा सदैवके लिये चुकाकर आपने बृटिश गवर्नमेन्टकी कीर्ति अटलरखी

और लार्ड आफ कन्धारकी उपाधि पाई। १९०१-०२ में ट्रान्सवाल (दक्षिणी ऐफरिका) के युद्धमें आप बड़ी बहादुरीसे लड़े और अंग्रेजोंकी बिगड़ी बात बनानेमें समर्थ हुये। इसी युद्धमें आपका इकलौता पुत्र रणशायी हुआ लेकिन आपने उफ नहीं की। थोड़ेही दिन पश्चात् आप इङ्गलैंड बुलालिये गये। उपरोक्त लडाइयोंके सिवाय अन्य बीसियों मोर्चोंपर भी जाकर आपने शत्रुका साम्हना कियाहै लेकिन कहींसे हारकर नहीं लौटेहैं। गवर्नमेंट हिन्दने बीसियों दफे सर्कारी काग़जोंमें आपकी प्रशंसा की है। लड़ाइयोंमें कई दफे आप घायल हुये और कई दफे आपका घोड़ा मारागया लेकिन आपके प्राण बाल २ बचे गये। सैनिक लोग पिताके समान आपको प्यार करते हैं और आपका नाम सुनतेही प्रेमसे विह्वल होजाते हैं। आप राजा तथा प्रजाके प्यारे हैं और आयरलैंडके रहनेवाले हैं। बृटिश गवर्नमेंटने वीरताके कामोंसे प्रसन्न होकर आपको (१) अनेक पदक प्रदान किये हैं (२) लार्ड आफ कन्धार और जी. सी. बी., जी. सी. यस. आई. तथा जी. सी. आई. ई. की उपाधियें दी हैं (३) बड़े २ इनाम भी दिये हैं और (४) बृटिश साम्राज्यकी सेनाके फील्ड मारशलका पद दियाहै जिस पर आप १९०६ तक विद्यमानहैं। पार्लियामेंटकी लार्ड और कामन्स सभाओंने भी आपकी कार्यवाहियोंपर दो दफे कृतज्ञता प्रकाश की है। अनन्यवीर सिपाही होनेके सिवाय आप विद्वान भी असाधारण श्रेणीके हैं। १८८१ में आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटीसे डी. सी. यल. की उपाधि पाईथी। १८८० में डबलिन यूनिवर्सिटीने और १८०३ में केम्ब्रिज तथा एडिनबरोकी यूनीवर्सिटियोंने यल. यल. डी. की उपाधि आपको दीथी।

"वेलिङ्गटनकी उन्नति" और "हिंदोस्थानमें ४१ वर्ष" नामक अंग्रेजी ग्रंथ आपके विरचितहैं।

रिपन (जार्ज फ्रेडरिक सैमुअल राबिन्सन, के. जी. पी. सी, जी. सी. यस. आई., जी. सी आई. ई., वी. डी., डी. यल जे. पी. डी. सी. यल., प्रथममार्कुइस आफ रिपन--George Frederick Samuel Robinson, K. G., P. C., G. C. S. I., G. C. I. E., V. D., D. L., J. P., D. C. L., 1st Marquis of Ripon)-

२४ अक्टूबर, सं. ई. १८२७ को लन्डनमें जन्मे। आपके किसी पूर्वजको स. ई. १६८० में बैरोनेटका खिताब मिलाथा, एवं आपका वंश प्राचीन और प्रतिष्ठित है। आपके बापको अर्लकी उपाधि प्राप्त थी और आपकी माता बकिन्घमशायरके चतुर्थ बैरनकी बेटी थी। प्रथम, अर्ल डीग्रेकी पौत्री हेनरीटा, सी० आई० से आपकी शादी हुई। हलनगरकी तरफसे १८५२—५३ में, हडर्स-

फील्डकी तरफसे १८५३—५७ में, वेस्टरायडिङ्ग (यार्कशायर) की तरफ से १८५७-५७ में पार्लियामेंटके मेम्बर रहे । १८५९-६१ में युद्ध विभागके उपमंत्री रहे । इन्डिया आफिसके उपमंत्री १८६१-६३ में रहे । युद्ध विभागके मंत्री १८६३-६६ में रहे । १८६६ में हिंदोस्थानके मंत्री आफ स्टेट हुए । १८६८ से ७३ तक कौंसिलके लार्ड प्रेसीडेन्ट रहे । १८७१ में आप उस कमेटीके प्रधान थे जिसने वाशिंगटनकी सन्धिका मसौदा तैयार किया था। १८१७ से ७४ तक फ्रीमैसन्सके ग्रैंडमास्टर भी आपही थे । १८८० से ८४ तक वायसराय हिंदके पद पर काम किया। १८८६ में जलसेनाविभागके मंत्री हुए । १८९२ से ९५ तक विदेशीवस्तियोंके मंत्री आफ स्टेट रहे । १८९५ में रिपनके मुख्यनायकका कामभी आपके सिपुर्द रहा । १९०१ में जीवित हैं और इङ्गलैंडमें २१,८०० एकड भूमिके जमींदार हैं। आपके हिंदोस्थानी शासनमें (१) ऐयूबखाँको परास्त करके अमीर अब्दुल रहिमानको काबुल कन्धारकी गद्दी दीगई (२) देशी समाचार पत्रोंको स्वतंत्रता दीगई (३) लोकल सेल्फ गवर्नमेंटका आईन जारी हुआ (४) शिक्षा विभागका सुधार हुआ, विद्याविस्तार हुआ (५) बाहरसे आनेवाले सूती इत्यादि तिजारती असबाब पर से महसूल हटायागया (६) कुछ हिंदोस्थानी सेना बृटिश गोरी सेनाको मदद देनेके लिये १८८२ में मिश्र देशको भेजीगई जो वहां पर बडी दृढता और वीरतासे लड़ी। पश्चात इसी सेनाके कुछ अफसर और सिपाही इङ्गलैंडको भेजे गये जिनका आगत स्वागत वहांपर सब लोगोंने प्रतिष्ठा सहित किया। संक्षिप्तः लार्ड रिपनने अपने शासनमें हिंदोस्थानियोंको अनेक स्वत्व दिये, उनकी आर्थिक दशा सुधारनेका उद्योग किया, विद्योन्नति की और देशियोंकी प्रतिष्ठा बढ़ाई। रिपन कालिज, लखनऊ आपके स्मारकमें खोलागयाथा।

लिटन (लार्ड बुलवर लिटन, जी. सी. यस. आई.—Lord Bwlwer Lytton, G. C. S. I.) आप नामी कवि होकर अनेक ग्रंथोंके रचयिता थे । राजनैतिक पुरुषों तथा सुप्रसिद्ध वक्ताओंमें आपकी गणना है । स. ई. १८७६से ८० तक वायसराय हिंद रहे । आपने शस्त्र सम्बन्धी आईन बनाकर हिंदोस्थानी प्रजासे हथियार लेलिये थे और देशी पेपरोंका मुंह बन्दकरनेके लिये भी आईन बनाया था । १८७४ में मलिका विक्टोरियाने कैसरे-हिंदका खिताब लिया, इसके प्रकाश करनेके लिये आपने दिल्लीमें बृहत दर्बार किया । १८७६-७७ में इस देशमें भयानक अकाल पडा, जिसमे सरकारने ११ करोड़ रुपया खर्च किया, बाहरसे बहुतेरा नाज मंगवाया और अकाल पीड़ित देशोंमें रेल और जहाजद्वारा पहुंचाया लेकिन महान शोकका स्थल है कि तब भी५२ लाख ५० हजार मनुष्य मरगये,

१८७८ में शेर अली अमीर काबुलने बृटिश राजदूतका अनादर किया और काबुलमें आये हुए रूसी मिशनकी प्रतिष्ठाकी। इस पर अप्रसन्न होकर लार्ड लिटनने खैबर, कुर्रम और बोलानकी घाटियोंके रास्तेसे बृटिश फौजको काबुलपर चढ़ा दिया। शेर अली तुर्किस्तानकी तरफ भाग गया और वहीं मरगया। शेर अलीके पुत्र याकूबखाँने गंडमकके स्थानपर सन्धि की जिसके अनुसार घाटियोंके पश्चिमी छोरतक अंग्रेजी सीमा बढ़गई और काबुलमें बृटिश रेजीडेन्ट रखनेकी बात स्थिर हुई। कुछ ही महीने पीछे अफगानोंने सर उठाए, बृटिश रेजीडेन्ट सर लुई कैवेग्नरीको मारडाला और द्वितीय अफगानयुद्धकी नौबत पहुंची। ऐसी हालतमें याकूबखाँने तख्त त्याग दिया और कलकत्ते पहुंचायेगे गये। सर फ्रेडरिक रावर्टसने काबुल पर चढ़ाई की और वहांकी उपद्रवी प्रजाको खूब ही ढीला किया। इसी अवसरपर लार्ड सालिसवरी मुख्यमंत्रीको इङ्गलैंडमें कनजरवेटिवदलकी पराजय होनेसे अपना पद त्यागना पड़ा, यह सुनतेही लार्ड लिटन भी इस्तीफा देकर इङ्गलैंडको पधारे। युद्धका खर्चा निर्वाह करनेके लिये आपने हिंदोस्थानी प्रजापर इन्कमटैक्स लगायाथा। आपके पुत्र लिटनके द्वितीय अर्ल, हर्टफोर्ड शायर (इङ्गलैंड) में रहतेहैं और ४९०० एकड़ भूमिके जमींदार हैं। आपकी पुत्री लेडी एलिजाबेदकी शादी लार्ड बैलफोरके साथ हुईथी जो लार्ड सालिसवरीके पीछे १९०२में इङ्गलैंडके मुख्य आमात्य हुए। १८९१में लार्ड लिटन परलोकगामी हुए।

लेथब्रुज (सर रोपर लेथब्रुज, यम. ए., के. सी.आई. ई. Sir Ropper Leith bridge, M. A., K. C. I. E.) २३ दिसंबर, स. ई. १८४० की साल डेवनशायरमें जन्मे। ई. लेथबृज आपके बाप थे। आक्सफोर्ड कालिजसे यम. ए. पास किया। लैटिन, ग्रीक, हेवरू आदि प्राचीन भाषाओं और गणित शास्त्रमें अपूर्व योग्यता दिखलाई। १८६८ से ७६ तक बंगालके शिक्षाविभागमें रहे। १८७१ से ७८ तक "कलकत्ता, त्रैमासिक रिव्यु" का संपादन किया। १८७७ में शिक्षासम्बंधी कमीशन, शिमलाके मंत्री बनाये गये। १८७८ में पोलीटिकेल एजेन्ट हुए और के. सी.आई.ई.का खिताब पाया। १८९२ में पेन्शन ली। १८९५ में स्त्री मरीं। १८९७ में दूसरी शादी की। डेपुटी लेफटिनेन्ट और लार्डका खिताब आपको प्राप्तहै। डेवन तथा केन्टके जास्टिस आफ पीस भी हैं। १९०१ में डेवनशायर एसोसिएशनके प्रधान बनायें गयेथे। जूनियर कनज, रवेटिवक्लब, लण्डनके भी आप प्रधान हैं। एक्सटरके शिक्षासम्बन्धी डायोसियनबोर्डके और डायोसिशन कानफ़ेरेन्सके मेम्बर हैं। ओकहैम्पटनकी कृषिसभाके उपप्रधान हैं। अपीलोंके कमिश्नर होकर ओकहैम्पटनमें इनकमटैक्सकी अपीलें सुनतेहैं। शिकार करने और गाने बजानेके अनुरागी हैं। शिक्षासम्बन्धी तथा राजनैतिक आन्दोलनोंमें हिस्सा लेतेहैं। १९०७ में जीवितहैं। हिंदोस्थानकी

स्वर्णचरितावली, हिंदोस्थानका इतिहास, बंगालका इतिहास तथा भूगोल और अंग्रेजी नूतन काव्यसंग्रह आपके रचे अंग्रेजी ग्रंथ हैं।

लैन्सडौन (हेनरी चार्लस कीथपेटी-फ़िट्ज़मारिस, के.जी., पी.सी., जी. सी. एस. आई., जी. सी. आई.ई., जी. सी. यम्. जी., डी.सी. यल., यल.यल.डी. पञ्चम मार्कुइस आफ़ लैन्सडौन–Henry Charles Keith Petty-Fitzmaurice, K. G. P.C., G. C. S. I., G. C. I. E., G. C. M .G. , D. C. L., L. L. D., 5th. Marquess of Lansdowne) आप इङ्गलैंडके एक अत्यंत अमीर प्राचीन वैरन वंशमें हैं। आपके अनेक पूर्वजोंने भी बड़े २ पद पायेथे। १४ जनवरी, स० ई० १८४५ की साल आपका जन्म हुआ । १८६६ में पिताके देहांत होनेपर मार्कुयस आफ़-लैन्सडौनका खिताब पाया । १८६९में ड्यूक आफ़ ऐवरकार्नकी बेटी माड, सी० आई० से शादी की और उसी साल वृटिश गवर्नमेंटकी चाकरीमें मंत्री कोषविभागका पद पाया जिसपर १८७२ तक रहे। १८७२से ७४ तक सेनाविभागके उपमंत्रीका पद भोगा। १८८०में हिंदोस्थानके उपमंत्री आफ़-स्टेट रहे। १८८३ से ८८ तक कनाडाके गवर्नर जेनरल रहे। १८८८से ९३तक वायसराय हिंदके पद पर काम किया। इङ्गलैंड वापिस जाने पर सेनाविभागके मंत्रीक उच्च पद १८९५ से १९०० तक भोगा। १९०० में विदेशी मुल्कोंके मंत्री आफ़-स्टेटका पद पाया जिस पर १९०५ तक हैं। १४२००० एकड भूमि आपकी ज़मीदारीमें है। आप प्रमाणिक और पक्के शासक हैं।

वाशिङ्गटन (जार्ज वाशिङ्गटन, अमेरिकाकी संयुक्तरियासतोंके प्रथम प्रेसीडेण्ट--George Washington, 1st. President of United States, America) आपके पूर्वज इङ्गलैंडसेअमेरिकामें जाबसेथे।वरजीनियामें स० ई०१७३२ की साल आपका जन्म हुआ।युवावस्थामें जेनरल ब्रैडककी मातहितीमें फ़्रानसीसोंसे कनाडामें लड़ते रहे। जब अमेरिकाकी रियासतोंने संयुक्त होकर स्वाधीनताके लिये वृटिश गवर्नमेन्टसे युद्धठाना तो सेनाका कमाण्डर इन-चीफ़ आपको नियत किया। बड़ी बुद्धिमानी और वीरताके साथ लड़कर १७७६ में आपने अंग्रेजोंसे बोस्टन् खाली करालिया। पश्चात् कई वर्ष तक युद्ध जारी रहा जिसमें आप कई दफ़े हारे लेकिन १७८१ की साल यार्क टाउनके युद्धमें वृटिश जेनरल लार्ड कार्नवालिसको आपने पूर्णरीतिसे परास्त करादिया । इसके दो वर्ष पीछे सन्धिकी नौबत पहुंची जिसके अनुसार अमेरिकाकी संयुक्त रियासतोंने स्वाधीनता पाई और आपको संयुक्त रियासतोंका प्रेसीडेन्ट बनाया। युद्ध तथा शान्तिमें समान रीतिसे सर्व्वोत्तम शासक और स्वदेशियोंके अत्यन्त प्रीतिभाजन होनेके कारण अमेरिकावाले आपको सर्वश्रेष्ठ पुरुष मानते थे। आप बड़े मजबूत,

शान्ति स्वभावके अंग्रेजथे। बाहरी भाव सर्वथा शान्तिमय मालूम होताथा लेकिन दिल जोशसे भराहुआ था जिसको आप जब्त करसकते थे और दूसरोंमें व्याप्त करसकते थे। जेनरल वाशिंगटनका स० ई० १७९९ में देहान्त हुआ।

वेङ्कटरमणसिंहजूदेव, सर, महाराजा, बहादुर, जी. सी. यस. आई. (रीवाँनरेश) आप सर रघुराजसिंहजू देव, जी०सी० यस० आई० के पुत्र हैं। इस राज्यके संस्थापक महाराज व्याघ्र देवकी आप ३२ वीं पीढ़ीमें हैं। वि० सं० १९३३ में आपका जन्म हुआ। पूरे ३ वर्षके भी नहीं होने पाये थे कि पिताका वैकुंठवास होगया। मातृगणके अनुरोधसे श्रीमानकी शिक्षाका प्रबन्ध राजधानी रीवाँ तथा सतनाहीमें कियागया और कहीं दूर नहीं भेजे गये। अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत भाषाओंके ज्ञान के बाद साहित्य, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, कानून. गणित, युद्ध विद्या आदि की शिक्षा आपको दीगई। पश्चात् राजकाजका व्यवहारिक काम आपको सिखलायागया और स्वराज्यका दौरा तथा भारतके प्रत्येक भागकी सैर कराके देश विदेशकी रीति भांति और चाल ढालसे आपको परिचित किया गया। १८९१ ई० में डुमराऊंकीराज कुमारीसे विवाह हुआ। १८९५ ई० में राजकाजका भार ब्रटिश गवर्नमेन्टकी आज्ञासे आपको सौंपागया। सिंहासनारूढ होनेके दिनही श्रीमानकी प्रथम आज्ञा राज्यलिपि उर्दूके स्थानमें देव नागरी करदेनेकी हुई। श्रीमान हिंदीके बडे प्रेमीहैं। राज्याधिकार पानेके कुछहीदिन बाद श्रीमानका विवाह रतलाम नरेशकी भगिनीसे हुआ। दोवर्ष बाद १२ मार्च स० ई० १९०३ को श्रीयुत उज्जैनिन महारानी साहिबाके गर्भसे वर्तमान महाराज कुमारका जन्म हुआ। श्रीमानबडे विद्यानुरागी हैं। प्रजाकी विद्योन्नति करना अपना मुख्य कर्तव्य समझते हैं। सतनामें श्रीमानने अपने नामसे एक स्कूल खोलाहै। रीवाँमें पहलेहीसे हाई स्कूल, बोर्डिंगहौस तथा संस्कृत पाठशाला है और दीन विद्यार्थियोंके लिये बहुतसी छात्र वृत्तियें नियत हैं। इसके सिवाय राज्यके प्रत्येक बड़े गाँवमें हिंदी और उर्दूकी पाठशालायें हैं। प्रजाके रोग निवारणार्थ राज्यके छोटे २ गाँवोंमें भी अस्पतालहैं। रीवाँ, सतना और उमरियामें बड़े २ अस्पताल हैं। इन अस्पतालोंमें औषधि मुफ्त बाँटी जातीहै। राज्यारूढ होतेही श्रीमानने सतनामें अपने नामका नेत्रौषधालय खोल दियाथा। राज्याधिकार पानेके एकही वर्ष बाद रीवाँ राज्यमें घोर दुर्भिक्ष पड़ा जिसमें प्रजाकी प्राणरक्षाके लिये अनेक प्रयत्न किये गये और २५लाख रुपये खर्च किये गये। इस सुप्रबन्धसे खुश होकर महारानी विक्टोरियाने श्रीमानको जी०सी०यस०आई० का खिताब दिया। उमरियाके आसपास कोयलेकी खानि खोदनेका काम पहलेसे गवर्नमेन्टके हाथमें था राज्यको गवर्नमेन्टसे कुछ कर मिलता था। स० ई० १९०२ में श्रीमानने वहाँके कुल कारखानेको १२ लाख रुपयेंमे गवर्न–

बीचका मुल्क (दोआबा) और रुहेलखण्ड अंग्रेजोंको देदिया। पश्चात् वेलिजलीने मैसूरके टीपू सुलतानको फरासीसोंसे सम्बंध तोड़ने और अंग्रेजोंके साथ सहायक मंडलीमें सम्मिलित होनेके लिये लिखा। टीपूके कान न करने पर १७९९ में तृतीय मैसूरयुद्ध आरंभ हुआ। लार्ड वेलिजलीने खुद चढ़ाई की। टीपू वीरतासे लड़कर श्रीरङ्गपट्टनके किलेमें मारागया और उसका राज्य अंग्रेजों तथा उनके साथी निज़ाम और मरहटोंने आपसमें बांटलिया। इसी समय कर्नाटक और टैन्जोरका राज्य भी अंग्रेज़ी अधिकारमें आया। यह सब मिलाकर प्रायः उतनाही मुल्कथा जितना अब मद्रास प्रेज़ीडेन्सीमें दाखिलहै।

टीपूके मुकाबलेमें अभी तक अंग्रेजोंके साथ२दो दफे मरहटे लड़चुकेथे लेकिन निज़ामकी तरह सहायक मंडलीमें दाखिल नहीं थे। बरोडाके गायकवाड़, नागपुरके भोंसला, इन्दौरके होलकर और मालवाके सेंधिया उस समयके मुख्य मरहटा सरदार थे और पूनाके पेश्वा इन सबके प्रधान थे, लेकिन नष्टबुद्धिको प्राप्त होनेके कारण आपसमें मिलकर नहीं चलतेथे। १८०२ में होलकरसे परास्त होकर पेश्वाने अंग्रेजोंके साथ बैसीनकी सन्धि की जिसके अनुसार अंग्रेजोंके सिवाय किसी देशी, या फिरंगी शक्तिसे सम्बंध न रखनेका वायदा किया और सहायक फौजके खर्चके लिये कई जिले अंग्रेजोंको दिये जिससे बम्बईकी तरफ अंग्रेजी राज्य पहिलेकी अपेक्षा अधिक बढ़गया। मरहटोंकी स्वाधीनताका नाश कारक यह मेल सेंधिया और भोंसलाको पसन्द नहीं आया अतएव द्वितीय मरहटा युद्ध छिड़ा। इसमें गवर्नर जेनरलके भाई सर आर्थर वेलिजली (ड्यूक आफ़-वेलिङ्गटन) और लार्ड लेक अंग्रेजी फ़ौजके सेनापति थे और दूसरी तरफ सेंधिया, भोंसला और जस्वन्तराव होलकर थे। आर्थर वेलिजलीने असाई और आरगांमके युद्धोंमें भोसलाको परास्त करके अहमदनगर छीनलिया लार्ड लेकने अलीगढ़ और लसवाड़ीके युद्धोंमें सेंधियाको परास्त किया और दिल्ली तथा आगरा के शहर छीनलिये। हारकर भोंसला और सेंधियाने १८०३ के अन्तमें सन्धिकी जिसके अनुसार सेंधियाने मुगल सम्राट शाह आलम अन्ध सहित जमुनाके उत्तरोत्तर सब देश अंग्रेजोंके हवाले किया जो नवाब वज़ीर अवधसे पायेहुये मुल्कके साथ मिलकर पश्चिमोत्तर प्रदेश हुआ। भोंसलाने अंग्रेजोंको उड़ीसा और निज़ामको बरार दिया। महाराजा जस्वन्तराव होलकर इस अवसरपर पराजित नहीं होसके उन्होंने १८०४ में कर्नैल मानसन साहबको मध्य हिंदमें बेतरह हराया और १९०५ में लार्ड लेकका मुंह भरतपुरके किलेपरसे फेर दियागया।

शायस्ताख़ाँ, हफ्तहजारी, खानेजहाँ, अमीरूल उमरा, उमदतुलमुल्क, सिपहसालर बहादुर-आपका असली नाम मिर्जा अबूतालिबथा। मलिका नूरजहां

के आप समीपी नातेदारथे। मुगलसम्राट शाहजहांकी फौजमें अपने बाप यमीनुद्दौला आसफखाँके नीचे नौकर हुयेथे और कई लड़ाइयोंमें बहादुरीसे लड़कर पञ्च हजारी मनसब तथा शायस्ताखाँका खिताब पायाथा। फिर दक्षिणदेशीय निजामशाही वंशके बादशाहोंको परास्त करके तथा मरहठोंसे लड़कर बिहारकी सूबेदारी पाईथी। पश्चात् मालवाकी सूबेदारी पर भेजेगयेथे और औरंगजेबके साथ बळख तथा बकलानाकी लड़ाइयोंमें रहेथे। कुछ दिनों बाद शाहिजादे मुरादकी जगह कुछ दक्षिणकी सूबेदारी पाईथी फिर औरंगजेबकी मातहितीमें तानाशाह और अबुल हसनसे लड़ेथे। अंतमें मुग़ल सम्राट् शाहजांने प्रसन्न होकर छःहजारी मनसब तथा खान जहाँका खिताब आपको दियाथा। औरंगजेब और दाराशिकोहमें मेल करानेका काम भी आपको सौंपागयाथा। शाहजहांके बीमार पड़नेपर जो तख्तके वास्ते झगड़ा हुआथा उसमें आप औरंगजेबके शरीक थे। औरंगजेबने तख्तपर बैठकर आपको हफ्तहजारी मनसब, अमीरूल उमराका खिताब तथा दो करोड़ दामकी जागीर दीथी और सुलेमां शिकोहको पकड़नेके लिये आपको तईनात कियाथा। सुलेमाँशिकोहको पकड़लाने पर दक्षिणकी सूबेदारीपर फिर भेजेगयेथे। कई सिपह सालारोंके मारे जानेपर औरंगजेबने आपको शिवाजी मरहटाके दमन करणार्थ भेजा लेकिन वहां आपका छोटा पुत्र अबुल हसन मारागया, आपकीभी एक उंगली कटगई। आपकी फौज छितर बितरहोगई और आपको जान चुराकर भागनापड़ा। इसके पीछे बंगालकी सूबेदारी आपको मिली। वहां चिटागांव विजय करके उमदतुलमुल्कका खिताब पाया। फिर आगरेकी सूबेदारीपर बदली होगई। अंतमें बंगालकी सूबेदारीपर और फिर आगरेकी सूबेदारी पर बदल दियेगये। ११०५ हिजरीमें मरे।

शाहजी भोंसला (मरहठाराज्यके संस्थापक महाराज शिवाजी भोंसलाके पिता)—आपकेपिता मालोजी भोंसला सूपातथा पूनाके जागीरदारथे। लुखजी यादवरावकी पुत्री जीजीबाईसे स०ई०१६०१में आपकी शादीहुईथी। जीजीबाईके पिता निजाम शाहीदर्बारके आधीन एक बड़े जागीरदारथे। जब मुगल सम्राट दिल्लीने अहमद नगरपर अधिकार करलिया तो स. ई. १६२१ में लुखजी मुग़लोंकी तरफ चले गये और शाहजी निज़ामशाही सरकारकी तरफ़ होगये। किसी २ लड़ाईमें ससुर दामादकाभी सामना होजाता था। स. ई. १६२६ में शाहजी हारकर भागे। जीजीबाई जो उनके साथ २ युद्धस्थलमें लड़तीथी घोड़ेपर सवारहो उनके साथ भागी। लुखजीने पीछा किया और जीजीबाईको जो उनदिनों गर्भसेथी पकड़कर शिवनेरीके किलेमें क़ैद करदिया। स. ई. १६२७ की साल क़ैदहीमें जीजीबाईके गर्भसें शिवाजीका जन्म हुआ। स. ई. १६३० में लुखजीके मारेजानेपर जीजीबाई मुगलोंके हाथ पड़ी और मरहटोंने मिलकर

बड़ी कठिनाईसे उसको छुड़ाया । पश्चात् शाहजीने नवाब बीजापुरके यहाँ नौकरी करके कर्नाटकमें बड़ी जागीर पाई और अपने ज्येष्ठपुत्र शम्भाजीको तथा नई विवाहिता स्त्री तुकाबाईको अपने साथ रखके जीजीबाई और शिवाजीको पूनाकी जागीरपर भेज दिया । पूनामें शिवाजीका वैभव बहुत कुछ बढ़ा (देखो शिवाजी)। स. ई. १६४९ में सुलतान बीजापुरकी अनुमतिसे बाजीघोरपुरेने शाहजीको दग़ासे कैद करा दिया । स. ई. १६५३ में शाहजीने कैदसे रिहाई पाई । इससे पहिलेही उनके पुत्र शम्भाजी विद्रोहियोंके हाथसे मारे जाचुकेथे और शिवाजीने अवसर पाकर अपने पिताके शत्रु बाजीघोरपुरेको सपरिवार नष्ट करदिया था । कैदसे छूटकर शाहजी अपने पुत्रसे मिलनेको गये । स. ई. १५९४ में जन्मे, स ई. १६६४ में मृत्यु ।

शाहूछत्रपति, महाराजा, जी.सी.यस.आई, (कोल्हापुर नरेश)--आप कागल नरेशके पुत्रहैं और कोल्हापुरकी गद्दीपर दत्तक होकर आयेहैं । स० ई० १८७४ में जन्मे । १८८३में महाराजा शिवाजी चतुर्थके बाद कोल्हापुरकी गद्दीपर बैठे । १८८५ से ९० तक राजकुमारकालिजमें शिक्षा पाई और हिंदोस्थान तथा सीलोनमें भ्रमण करके अनुभव प्राप्त किया।१८९१की साल बड़ोदामें आपका विवाह हुआ ।१८९४ में बृटिश गवर्नमेंटने राज्यका पूर्ण अधिकार आपको सौंपा। आप घोड़ेपर खूब चढ़ते हैं, एक दफ़े ६ घंटेमें ११० मील घोड़ेकी पीठपर गयेथे। १८९८ में बृटिश गवर्नमेंटने जी. सी. यस. आई. का खिताब आपको दिया। १८६२ में कोल्हापुर राज्यसे प्राणदण्ड देनेका अधिकार लेलिया गयाथा लेकिन १८९६ में आपको फिर मिलगया । कोल्हापुर राजधानीमें आपने एक बृहत् विद्यालय तथा एक शफाखाना बनवायाहै और कई बाग़ लगवायेहैं । राजप्रबन्ध आपका प्रशंसनीयहै । बृटिश गवर्नमेंट आपसे प्रसन्नहै । व्यापारियोंको उत्तेजना आपसे मिलतीहै । राजराजेश्वर एडवर्ड सप्तमके राज्याभिषेकके अवसर पर निमंत्रण पाकर आप इङ्गलैंड पधारेथे । कोल्हापुर राज्यके अंतर्गत विशालगढ़, कागल आदि ११ छोटे राज्यहैं औरइस राज्यसे मरहट्टा राज्यके संस्थापक महाराज शिवाजीके वंशका नाम चिरस्थायी है ।

सरदारसिंह, महाराजा, जी.सी.यस.आई. (जोधपुर नरेश)-आप स्वर्गीय महाराजा यशवन्तसिंह, जी. सी. यस आई. के पुत्र हैं । स० ई०१८७७में जन्मे । बूंदीकी राजकुमारीसे तथा महाराव राजाराम सिंहकी राजकुमारीसे शादी हुई जिससे कई सन्तान हैं । अंग्रेजी भाषा और पोलो तथा सैनिक कामोंमें अच्छी योग्यता रखतेहैं । १८९७ में बृटिश गवर्नमेंटने आपको राज्यका पूर्ण अधिकार दिया । १९०१में सीलोन,आस्ट्रेलिया,फ्रांस और लण्डनकी यात्रा करके राजकीय प्रबन्ध इत्यादिका अनुभव प्राप्तकिया । जोधपुर नरेश राठौरजातिके मुखिया होकर छः राठौरराज्योंके अग्रणीहैं । जोधपुरराज्यमें ३७००० वर्गमील भूमि है।

सुलतानसिंह राना (प्रसिद्ध लक्ष्यवेधी)-दक्षिणके निवासी इन्हें रांणा सरतानसिंह कहते हैं। वि. सं. १९२० की साल लींवडीके क्षत्रिय राज्यवंशमें आपका जन्म हुआ। लींबडीके समीप रंगपुरमें आपकी कुछ जागीर है। आपके किसी पूर्व पुरुषने मुगलयुद्धके समय महाराना उदयपूरकी रक्षा करके रानाका खिताब पायाथा। आपके पिताका नाम भूपतिसिंह और काकाका नाम केशरीसिंह था। काका केशरीसिंह बचपनहीसे आपको गोदमें बिठलाकर बन्दूक चलाना तथा निशाना लगाना सिखाया करतेथे और रामायण, महाभारतादिकी कथायें सुनातेथे। इस प्रकार बड़े होतेहुये आप हिंसक जीवोंका शिकार करने लगे और महाभारतके अनुसार निशानेबाजीका अभ्यास बढ़ाने लगे। धीरे २ लक्ष्यवेधमें पारंगत होगये। भेद इतनाही रहा कि प्राचीन वीर तो बाणसे लक्ष्यवेध करतेथे लेकिन आप बन्दूक या पिस्टोलसे करतेहैं। वि० सं० १९६२ में आपकी उम्र ४२ वर्षकी है। इस समय आप ३०।३५ प्रकारके प्रयोग

बन्दूकको दहिने अथवा बायें कन्धेपर या टांगोंके बीचमें रखकर खड़े, बैठे लेटेहुये हाथसे अथवा पैरसे बन्दूक चलाकर ठीक निशाना मारसकतेहैं। इसीका नाम लक्ष्यवेध है (२) चौखूटी लकड़ी पर बंधीहुई चार कुमरियोंमें जिसे कहाजाय उसे चक्कर कराते रहनेकी स्थितिमें तोड़देतेहैं इसी को चललक्ष्यवेध कहते हैं। (३) श्लोक पढते २ निशाना मारतेहैं। (४) जलतीहुई मोमबत्तीको गोलीसे बुझादेते हैं परन्तु बत्तीमें कुछ अन्तर नहीं आताहै। (५) किसीके शिर अथवा हाथमें नारियल देकर उसकी नरेटीको तोड़देतेहैं परन्तु न तो उस मनुष्यके कुछ चोट आती है और न गोला टूटने पाताहै इसीका नाम भयानक वेध है। (६) कुयेंके पानीमें पड़ेहुए सूखे नीबूमें ऐसी गोली मारतेहैं कि वह कुयेंके बाहर आपड़ताहै। (७) एक घड़ेके भीतर ४ रंगकी कुमरियोंको रखकर घड़ेके घूमते रहनेपर जिस रंगकी कुमरीको कहो उसीको बिना देखे तोड़देतेहैं इसीका नाम अदृश्यवेध है। (८) महाराजा दशरथ और पृथ्वीराजके शब्दवेधी बाण मारनेकी बात प्रसिद्धही है, आप भी आंखोंमें पट्टी बाँधकर चार रंगके रखेहुये घड़ोंका शब्द सुनते और उसे मननकरके फिर घड़ोंका स्थान बदलदेनेपर भी जिस रंगके घड़ेको कहो उसीको तोड़देतेहैं। (९) द्रुपदराजाकी सभामें जिस मत्स्यवेधने सब राजाओंकी बुद्धि चकरादीथी वह मत्स्यवेध भी आप करतेहैं अर्थात् ऊपर खम्भेपर एक मछली टांगीजातीहै उसके नीचे एक बड़े बर्तनमें भरकर पानी रखाजाताहै जिसमें मछलीकी छाया पड़तीहै, उस छायाको देखतेहुये आप लटकतेहुए तराजूमें चढ़तेहैं और शरीरका गुरुत्व केंद्र ठीक रखतेहुए ऊपर टंगीहुई मछलीका वेध करतेहैं।

मेन्टसे मोल लेलिया जिससे दर्बारकोअब बहुत आमदनी होतीहै। रीवाँका आधेसे अधिक भाग वन युक्त है जिसमें अच्छी २ लकडियोंके सिवाय चिरौंजी लाख और कत्था आदिकी उपज विशेषतासे होतीहै । श्रीमानने इसकी आमदनी पूर्वापेक्षा बहुत बढाई है। श्रीमानने राज्यके दीवान राव जनार्दन सिंहकी सेवासे प्रसन्न होकर उन्हें २५००० रु० वार्षिक आमदनीकीजागीर देकर तालाका ठाकुर बनाया था। वह जागीर अबतक उनकी विधवा और पुत्रके अधिकारमें है। स० ई० १९०४ से सेना विभागके कमान्डर-इन-चीफ की जगह खाली रखकर उक्त पदका काम एक मिलीटेरी सिक्रेटरीकी मददसे श्रीमान खुद करतेहैं। अवसर आनेपर अनेक और विभागोंमें भी फेरफार करके श्रीमानने सुयोग्य कर्मचारियोंकी नियुक्तिकीहै। श्रीमान निपुण शिकारी हैं। अयोग्य और अपराधी कर्मचारियोंपर दया नही करतेहैं। राजमद और युवावस्थाके दुर्व्यसनोंका लेश मात्रभी आपमेंनहीं पाया जाताहै। इसी कारण अत्यन्त पुष्ट और नीरोगहैं।स्वभाव अत्यन्त सरल है। साधारण मनुष्योंकी तरह परिश्रम करनेसे भी नहीं हिचकते हैं। सब बातोंकी खबर रखते हैं इसीलिये अन्याय होनेकी संभावना नहीं रहती॥

वेल्लिजली (रिचर्ड काली, मार्कुइस आफ़-वेलिजली–Richard Colley Marquess of Wellesly)-२०जून,स.ई.१७६०को डबलिन(आयरलैंड) में जन्मे। गैरेट, प्रथम अर्ल आफ़-मारनिङ्गटन आपके पिता थे। एटन कालिजमें शिक्षा पाई । वियरलस्टनकी तरफ़से पार्लियामेंटके मेम्बर हुये । शीघ्र ही मंत्री कोषविभागका पद पाया । १७९३ में प्रिवीकौंसिलके मेम्बर हुये और पिताके मरने पर लार्ड मारनिङ्गटनका खिताब पाया । १७९८ से १८०५ तक गवर्नर जेनरल हिंद रहे। १७९० में मार्कुइस आफ़ वेलिज़लीका खिताब पाया। १८२१ और १८३३ में दो दफे आयरलैंडके लार्ड लफटिनेन्ट हुए। १८३१ में लार्ड स्टेवर्डका पद पाया। दो शादियें कीं। पहिलीसे कई बच्चे हुए जो मरगये । दूसरी शादीसे जो ६५ सालकी उम्रमें कीथी कोई सन्तान नहीं हुई। आप बड़े विद्वान थे और ग्रंथकार भी थे। जब हिंदोस्थानमें गवरनर जेनरल होकर आयेथे तो उन दिनों दिल्लीके मुगलराज्यकी हीन दशा थी; अनेक राजे, नवाब और सूबेदार स्वाधीन हो बैठेथे; मरहठे जोरपर थे और आपसमें फूट होनेके कारण फ़रासीसोंका दबदबा बढ़ता जाताथा । यह हालत देख लार्ड वेलिज़लीने राजाओं, नवाबों इत्यादिको अपने साथ एक सहायक मंडलीमें मिलाकर फ़रासीसोंका दबदबा घटानेकी चाल सोची । उसीके अनुसार सबसे प्रथम निजाम हैदराबादने विना युद्धकी नौबत आये १७९८ की सन्धिके अनुसार विना अंग्रेजोंकी सम्मतिके किसी फिरङ्गीको नौकर न रखनेका वायदा किया और फ़रासीसी सेनाको अपने राज्यसे दूर किया। १८०१ में नवाब वजीर अवधने लखनऊकी सन्धिके अनुसार सहायक सेनाके खर्चके लिये गंगा और यमुनाके

इन दिनों आप प्राचीन धनुर्विद्या और मंत्रोंकी खोज कररहेहैं और इस उद्योगमें हैं कि कोई राजा महाराजा व्यायामशाला खोलकर ऐसा प्रबन्ध करदें कि जिससे प्राचीन धनुर्विद्याके सहारे इस प्रकारकी निशानेबाजीकी शिक्षाका प्रचार हो। आपकी विद्याका चमत्कार उदयपुर, निजाम, बड़ोदा, पोरबन्दर, दाँता, शाहपुरा, सिरोही, लीमड़ी, खंबात, बढ़वान, सांगली, इचलकरंजी, भावनगर, ध्रांगध्रा, भरतपुर, किशनगढ़, जूनागढ़, मैसूर आदिके नरेशोंने देखा और प्रसन्न होकर सार्टिफिकेट दिया है।

हर्बर्ट स्पेन्सर (Herbert Spencer) इस महादार्शनिकका जन्म सन् ई० १८२० की साल इङ्गलैंडके डरबी नामक शहरमें हुआ। इसके बाप लड़कोंको पढाया करतेथे और चचा पादरी थे। बाप और चचासे इन्होंने फिर शिक्षा पाईथी और किसी मदरसे में नहीं पढ़ा था। वैज्ञानिक विषयोंकी ओर इसकी प्रवृत्ति शुरूहीसे थी। यह जबतक किसीबातको तजरिबेसे संबूत नहीं करलेतेथे तबतक उसपर विश्वास नहीं करतेथे। इसी आदतके अनुसार पूर्व तत्व ज्ञानियोंके सिद्धांतोंको चुपचापनमानकर इन्होंने उनकी परीक्षाकी और उनके खण्डनीय अंशका कठोरता पूर्वक खण्डन किया। १७ वर्षकी उम्रमें काम सीखकर यह रेलवेके मुहकमेंमें यञ्जिनियर हुये लेकिन ८ वर्ष बाद इस्तेफादे दिया। अनेक सामयक पुस्तकोंमें लेख लिखते २ इनकी लेखन शक्ति प्रबलहुई और सम्पादन करना तथा ग्रंथ रचनाही इनका एक मात्र व्यवसाय हुआ। ३० वर्षकी उम्रमें इन्होंने स्पेशल स्टेटिक्स नामक किताब लिखी जिसमें सामाजिक और राजनैतिक विषयोंका विचार था। इनकी बुद्धिका झुकाव विशेष करके सृष्टि रचना और अध्यात्म विद्याकी तरफ था। यह प्रवृत्ति धीरे २ प्रतिदिन बढती गई और यह उत्क्रान्त-वादी होगये। उत्क्रान्तके १६ सिद्धाँत इन्होंने निकाले। संसारके सब दृष्टादृष्ट व्यापार इन्हीं नियमोंके अनुसार होतेहैं इस बातके सिद्ध करनेके लिये इन्होंने अपरिमित श्रमकिया। यह सृष्टिक्या ईश्वरने पैदाकीहै, या पदार्थोंहीमें कोई ऐसी शक्तिहै जिसके कारण वह आपही आप उत्पन्न होगये हैं? जन्म क्या है, पुनर्जन्म क्याहै, मरण क्याहै, धर्म्मक्याहै, पापपुण्य क्याहै, सुख दुख क्याहै, संसारमें जितनी घटनायें होतीहैं वह किन नियमोंके अनुसार होतीहैं? दिनरात स्पेन्सर साहब इन्हीं बातोंके विचारमें संलग्न रहते थे। यह अभ्यास इन्होंने इतना बढाया कि संसारमें ऐसा कोई भी शास्त्रीय विषय शेष नरहा जो इनके मानसिक विचारोंकी कसौटी पर नकसा गयाहो। नये २ सिद्धांतोंके निकालनेमें इनकी बुद्धि विलक्षण थी। ५० वर्षतक इन्होंने यह काम किया और अपने नये २ सिद्धान्तोंसे संसारको चकित और स्तम्भित कर दिया। १८८२ में स्पेन्सर साहब

अमेरिकाको गये, वहाँ उनका बड़ा आदर हुआ। योरप और अमेरिकाके विश्वविद्यालयोंने उन्हें दर्शनशास्त्रकी शिक्षा देनेके लिये कितनेंही ऊंचे २ पद देना चाहा, परंतु उन्होंने कृतकृतज्ञतापूर्वक अस्वीकार किया। यूनिवार्सिटीकी उपाधियें पानेकी इच्छा आपको कभी नहीं हुई और यदि विनापूछे कोई उपाधि आपको दीगई तो उसकी परवाह आपने नहीं की। स्वाधीन रहकर अपनी सारी उम्र विद्याव्यासङ्गमें खर्च करदी और अपने अभूतपूर्व तत्वज्ञान पूर्ण ग्रंथोंसे संसारको अनन्त ज्ञान पहुंचाया। किताबोंके छपवाने और प्रकाशित करनेमें नफानुकसानका कभी विचार नहीं किया। आपकी तर्कशक्ति अद्वितीय थी, प्रतिपादनशक्ति विलक्षण थी, विपक्षियोंकोभी अपके साम्हनें सर झुकाना पडता था। आप अत्यंत कर्तव्य निष्ठ, दृढ निश्चय और निर्लोभी थे। आपका विद्याभ्यास दीर्घ, ज्ञानभण्डार अगाध और परिश्रम अप्रतिहत तथा। योरपमें आपसा तत्वज्ञानी विरलाही हुआ। आपने सर्वशक्तिमान् ईश्वरकी अपने समाज-घटना-शास्त्रमें कडी समालोचना कीहै लेकिन सृष्टि सम्बंधनी एक "अगम्य मर्यादा और सर्व व्यापक शक्ति" की महिमागाई है। अन्तके ५।७ वर्षोंमें वह बहुधा बीमार रहे। अन्तमें ८ दिसंबर १९०३ ई० को इस लोकसे उठगये। कह मरे थे कि हमको गाड़नेकी जगह जलाना, वैसाही किया गया।

निम्नस्थ ग्रंथ स्पेन्सरके रचे हुये हैं:-

1 Principles of Psychology (मानस शास्त्रके मूलतत्व)

2 A Synthetic Philosophy in 5 parts-1. First principles, 2.Principles of Biology, 3.Principles of Psychology, 4.Principles of Sociology, 5. Principles of Ethics. (संयोगात्मक तत्वज्ञान पद्धति ५ भाग-१प्राथमिक सिद्धान्त, २ जीवनशास्त्रके मूलतत्व, ३ मानस शास्त्रके मूलतत्व, ४ समाज शास्त्रके मूलतत्व, ५ नीतिशास्त्रके मूलतत्व)

3 Facts and Comments (यथार्थ और टीका)

4 Essays (निबन्ध ३ जिल्द)

5 Various fragments (बहुतसी फुटकर बातें)

6 The study of Sociology (समाजशास्त्रका अध्ययन)

7 Education (शिक्षा)

हरुक-(जापानकी पटरानी)-२८ मई. स. ई. १८५०को आपका जन्म उस उच्च वंशमें हुआ जिसमें से जापानके सम्राट्, मिकाडो अपने लिये रानियें चुनाकरतेहैं। आपको प्रथमही से रानीके योग्य शिक्षा दीगईथी। १९ वर्षकी उम्रमें वर्तमान मिकाडोसे आपकी शादी हुई। जब आप विवाहके आई तो उस

समय जापानमें देशसुधारकी इच्छासे प्राचीन रीति नीति और स्थितिमें परिवर्तन होरहाथा। देशस्थितिके परिवर्तनमें सबसे अधिक और प्रथम भाग आपहीने लिया। पुरानी पोशाकके बदले यूरोपियन पोशाकका प्रचार किया जिसको प्रजागणने खुशीसे अङ्गीकार किया। यद्यपि पोशाक यूरोपियन ढंगकी पहनतीहैं लेकिन स्वदेशके आचार विचारोंको मानतीहैं। निजकी पूंजीमेंसे दीन दुखियोंको सहायता देतीहैं। अस्पतालोंमें जाकर रोगी सैनिकोंकी देखभाल किया करतीहैं।चीन-जापान युद्धके अवसरपर आपने राजघरानेकी स्त्रियोंसे घायल सैनिकोंके लिये पट्टियें तैयार कराईथीं जो अस्पतालोंमें काम आई। घायलोंकी शुश्रूषाके लिये आपने स्त्रियोंकी Red Cross Society स्थापन कीथी। आप दयालू और बुद्धिमती हैं। सर्दारों, जागीरदारों और दरबारियोंको सालमें एक दफ़े भोजन दिया करतीहैं। प्रजाकी हितकामनाके लिये सदैव चिन्तित रहतीहैं। कविता भी करतीहैं जो राजा प्रजाका सम्बंध दृढ़ करनेवाली और आपसमें प्रीति बढ़ानेवाली होतीहै।

आपके गुणोंका प्रभाव तमाम राज्यपर इस तरह पड़ाहै कि जिससे सम्पूर्ण प्रजा, राज्यके हानिलाभको अपना हानि लाभ समझतीहै। रूस-जापान युद्धके समय जो १९०५ में जारीथा राजदम्पतिजापानने अपने आरामके लिये १ पैसा भी खर्च न करनेका प्रण कियाथा, ऐश आराम छोड़ दियाथा, जापानी सैनिकोंके मारेजानेका हाल सुन २ कर आंसु बहायेथे और रणशायी सैनिकोंकी माताओं और विधवाओंको तसल्ली और सहायता दीथी। जापानी सैनिक भी अपने साम्राज्यकी प्रतिष्ठा बचानेके लिये जी तोड़कर लड़ेथे और रूसियोंको परास्त करदेनेमें समर्थ हुये थे।

हार्डिङ्ग(वाईकौन्ट हेनरी हार्डिङ्ग-Viscount Henery Hardinge)-सर हेनरी हार्डिङ्ग जो बादको वाईकौन्ट का खिताब पाकर लार्ड हार्डिङ्ग हुये, स. ई. १७८५ की साल केन्ट (इङ्गलैंड)में जन्मेथे। रेवरेन्ड हेनरी हार्डिङ्ग आपके बाप थे। आप १७९८ में अंग्रेजी सेनामें भरती हुए। १८०२ में लफ़टिनेन्ट और १८०४ में कैप्टिन होकर शनैः २ उच्चपद परपहुंचे। ड्युक आफ़—वेलिङ्गटनकी मातहितीमें अनेक युद्धोंमें लड़कर के. सी. बी. का खिताब पाया। पेनिनसुलर संग्राममें आपका एक हाथ भी जातारहाथा। १८४४ से ४८ तक गवर्नर जनरल हिंद रहे। इङ्गलैंडमें १८५६ की साल मरे। जब आप हिंदोस्थान आयेथे तो उस समय पंजाबी सिक्ख राज्यके सिवाय अन्य सब हिंदोस्थानीराजे अंग्रेजोंसे परास्त होचुकेथे। सर चार्ल्स मेटकाफके साथ जो महाराज रणजीत सिंहने सन्धि कीथी उसका पालन उन्होंने अपनेजीते जी १८४५ तक पूर्णरीतिसे किया था लेकिन महाराजके उत्तराधिकारियोंमें आपसमें फूट फैली और खालसा फौजने बिगड़कर अपनेही अमीर वजीरोंको मारना शुरूकिया। ऐसी दशामें रानी

३१६२ सवार । ३६५३ पैदल और २१ तोपें रखनेका अधिकार है । नरेशकी सलामी १७ फ़ैरोंकी है । वार्षिक आय ४९, ३७००० रुपयेकी है ।

सालिसबरी (राबर्ट आर्थर टालबट गेस्कायन सेसिल, के. जी., पी. सी., यफ़. आर. यस., डी. सी. यल., यल. यल. डी., डी. यल., जे. पी. तृतीयमार्कुइस आफ सालिसबरी Robert Arthur Talbot Gascoyne Cecil, K. G., P. C., F. R. S., D. C. L., L. L. D., D.L., J, P., 3rd, Marquess of Salisbury)–३फ़रवरी, स० ई० १८३० को हैटफ़ील्डमें जन्मे । पिता आपके द्वितीय मार्कुइस आफ–सालिसबरीथे जिनके देहांत होनेपर१८६८में मार्कुइसका खिताब पाकर आप लार्डसभामें दाखिल हुये । १८५७ में एक अमीरकी बेटीसे शादीकी । एटन और क्रायस्ट चर्च कालिज, आक्सफोर्डमें शिक्षा पाकर ग्रेजुएट हुये । विज्ञान आर रसायनादि शास्त्रोंमें अपूर्व योग्यता रखतेथे । इसके सिवाय प्रसिद्धवक्ता तथा ग्रंथकार भी थे । १८५३ में आलसोल्सकालिज आक्सफोर्डके सभासद बनाये गयेथे । १८६९ से अन्त समय तक आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटीके चैन्सेलर रहे । १८५३ से ६३ तक स्टेमफोर्डकी तरफ़से पालियामेंटके मेम्बर रहे । १८६६ से ६७ तक भारतके मंत्री आफ–स्टेट रहे । १८७४ से ७८ तक इन्डिया कौंसिलके मेम्बर रहे । १८७६ की साल कान्स्टैन्टीनोपिलकी कान्फरेन्समें राजदूत होकर गयेथे और १८७८ की साल वर्लिनकी कांग्रेसमें बृटिश गवर्नमेंटकी तरफसे असीम शक्ति पाकर संयुक्त हुये थे।अधिकांश विलायत वासियोंकी दृष्टिमें आप विद्याबुद्धिके लिहाजसे सर्वोपरहोकर कानजरवेटिव दलके सर्वस्वीकृत प्रधान पुरुष थे । इसी कारण १८८१ से ८५ तक, १८८६ से ९२ तक और १८९५ से१९०२तक,कुल प्रायः २० वर्ष इङ्गलैंडके प्रधान मंत्री रहे । बीच २ में गैर मुल्कोंके मंत्री आफ़–स्टेट तथा मंत्री कोष विभागके पद पर भी काम किया । आपके मंत्रित्वके समयमें बृटिश राज्यकी बहुत उन्नति हुई और अन्य राज्योंकी दृष्टिमें उसका बल प्रभाव बहुत कुछ बढ़गया । आयर्लैंडवालोंको आपहीने वशीभूत किया, मिसर तथा सूडानमें अंग्रेजोंकी प्रधानता आपहीके समयमें प्रतिष्ठित हुई और आपहीके समयमें सम्पूर्ण दक्षिण एफरीका अंग्रेजी राज्य बनगया । आप ग्रेट ईस्टर्न रेलवेके प्रधान थे । १९०० से लार्ड प्रिवीसील और वेस्ट मिनिस्टरके हाई स्टेवर्डका कर्तव्य तथा अनेक और बड़े २ काम आपकी सुपुर्दगीमें थे ।२०३०० एकड़ भूमि आपका जमींदारीमें थी । वाइकौन्ट क्रेनबोर्न आपके पुत्र हैं । आपका वंश प्राचीन और प्रतिष्ठितहै। आपके अनेक पूर्वज भी बड़े २ पदोंपर रहेथे । १९०२ में बुढ़ापेके कारण इस्तीफा दिया और आपके भाञ्जे लार्ड बैलफोर मुख्य मंत्री हुये । १९०४ में परलोकगामी थे ।

चन्दाने ६० हजार खालसा फौजको १५० तोपों सहित अंग्रेजी मुल्कपर चढ़ाई करनेके लिये भेजकर घरकी बला बाहर टालना चाही । यह खबर पतेही कमान्डर इन-चीफ सर ह्युगफ और गवर्नर जेनरल लार्ड हार्डिंग मोरचे पर जाडटे । ३ सप्ताहके बीच मुदकी, फ़िरोजशहर, अलीवाल और सोवराउनमें ४ युद्ध हुये । यद्यपि अंग्रेजी सेनाकी बड़ी हानि हुई लेकिन अन्तिम युद्धमें सिक्ख, सेना सतलज पार हटादीगई और लाहौरपर अंग्रेजी अधिकार होगया । अन्तमें सन्धि हुई जिसके अनुसार महाराज रणजीत सिंहके बालक पुत्रको लाहौरकी गद्दी मिली, रावी और सतलजके बीचका मुल्क (जालंधर दो आब)अंग्रेजोंको मिला, खालसा फौजकी तादाद घटाईगई और लाहौर दर्बारमें बृटिश रेजीडेन्ट नियत कियागया । इस राजसेवाके उपलक्षमें सर हेनरी हार्डिंगको वाईकौन्टका खिताब मिला ।

हैस्टिङ्गज (लार्ड फ्रैन्सिस राडन, मार्कुइस आफ हैस्टिङ्गज–Lord Francis Rawdon, Marquess of Hastings) आयरलैंडमें ९ दिसंबर स०ई०१७५४की साल जन्मे।जान लार्ड राडन आपके बाप थे।हारोमें शिक्षा पाकर उस समयकी रीतिके अनुसार सर्वत्र यूरुपमें भ्रमण करके अनुभव प्राप्त किया था देशाटनसे लौटकर बृटिशसेनामें भरती हुये और १७७३ में लफटिनेन्टकापद पाया। कुछही समय पीछे आपको अमेरिकामें उस युद्ध पर जाना पड़ा जो अमेरिकाकी रियासतोंने संयुक्त होकर स्वाधीनता पानेके लिये अंग्रेजोंसे ठानाथा । ८ वर्ष पर्यंत वहां बड़ी वीरतासे लड़कर ऊंचा पद पाया । १७९३ में पिताके मरनेपर अर्ल आफ़ म्वायरा (लार्ड म्वायरा) का खिताब पाया। १८१४-२३ में हिंदोस्थानके गवर्नर जेनरल रहे । आपके हिंदोस्थान आनेके बहुत दिन पहिलेसे नैपाली गोरखे बृटिश सीमामें आकर प्रजाको सतायाकरतेथे । लार्ड मिन्टो और सर जार्ज बारलोने अनेक दफे उनको समझायाथा लेकिन उन्होंने कान नहीं कियाथा १८१८ में लार्ड हैस्टिंगजने जेनरल आक्टलोनीको पंजाबकी तरफसे नैपालपर चढ़ादिया। पहिली दफे हारकर दूसरी दफे जेनरल आक्टर लोनीने हिमालय पर्वतपर स्थित गोरखोंके अनेक किलोंको जो अब पंजाब प्रेजीडेन्सीमें शामिलहैं फतेह करालिया । दूसरी साल १८१५ में जेनरल अक्टर लोनीको पटनाकी तरफसे काठमांडूपर चढ़ाई करनेका हुक्म मिला।हारकर गोरखोंने सेगौलीकी सन्धि स्वीकारकी जिसके अनुसार नैनीताल, मसौरी और शिमला अंग्रेजी अधिकारमें आये । उधर मध्यहिंदके पिंडारियोंकी लूटमारसे प्रजा तंगथी । १८१७ में लार्डहैस्टिंगजने उनपर चढ़ाईकी । पिंडारी सर्दार चीतू परास्त होकर जंगलको भागा और चीतेकी शिकार हुआ । दूसरा पिंडारी सर्दार करीम हारकर अंग्रेजोंकी शरणागत हुआ।तीसरा पिंडारी सरदार अमीरखाँ टोंकका नवाब बना दिया जाने पर वश कियागया ।

पिंढारियोंको पामाल होते देख १८१७ में पूनाके पेश्वा, नागपुरके भोंसला और इन्दौरके होलकरने सर उठाया लेकिन परास्तहुये। यह युद्ध जो इतिहासमें तृतीय मरहटायुद्धके नामसे प्रसिद्धहै १८१८ में सन्धिद्वारा खतम हुआ। सन्धिकी शर्तोंके अनुसार पेश्वाका मुल्क खालसा कियागया। पेश्वाको ८० हजार पाउंड वार्षिक पेन्शन देकर बिठूर (कानपुर) में कैद कियागया। पेश्वा की जगह प्राचीन मरहटाराज्यका नाम चिरस्थायी रखनेके लिये महाराज शिवाजीके एक वंशजको थोड़ासा मुल्क देकर सताराका राजा बनायागया। भोंसला और होलकरके वंशके दो बालक बृटिश गवर्नमेंटकी रक्षामें नागपुर और इन्दौरकी गद्दियोंके वारिस करारपाये। संक्षिप्तः इस सन्धिद्वारा अंग्रेजोंको प्रायः वह सब मुल्क मिला जिससे वर्तमान बम्बई प्रेजीडेन्सी बनीहै। इसी समय राजपुतानाके राजाओंने भी अंग्रजी रक्षामें आना स्वीकार किया। लार्ड हेस्टिङ्गजने केवल बृटिशराज्यकी सीमाही नहीं बढ़ाई किन्तु लुटेरे पिंढारियोंको नष्ट करके और मरहटों तथा गोरखोंको परास्त करके देशमें अमन चैन फैलाया। जहां लुटजानेके भयसे रास्ता चलना कठिन था वहां लार्ड हेस्टिंगजके शासनके प्रतापसे एक बुढ़ियाभी सोनेका डेला हाथमें लिये हुये सफर करनेमें समर्थ होगई। १८२३ में लार्ड हेस्टिंगज इङ्गलैंड वापिस गये और कुछही समय पीछे परमधामको सिधारे।

इति।